प्रकाशक

श्री० सत्यभक्त,

नवयुग पुस्तक भंडार

बाई का बाग, इलाहाबाद सिटी।

मुद्रक

न्यू इण्डिया प्रिण्टिङ्ग वर्क्स

इलाहाबाद।

भूमिका

इस समय दुनिया के अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे बडी हलचल मची हुई है। आज एक मुल्क से तो कल दूसरे से लडाई, बलवा और मारकाट की खबरे आती रहती हैं। चारो तरफ लड़ाई की जबर्दस्त तैयारिया हो रही है, नये-नये भयकर हथियार बनाये जा रहे है और राजनैतिक गुट्ट या दल रचे जा रहे हैं। इन तमाम बातो पर गौर करने से साफ जान पड़ता है कि कोई ससारव्यापी महान सकट अथवा दूसरा महायुद्ध पास ही आ पहुँचा है। सच तो यह है कि हम इस सकट के भीतर पैर रख चुके हैं सिर्फ उसका पूर्ण भयकर रूप हमारी आँखो से कुछ दूर है।

इसके साथ ही साइ स के नये-नये आविष्कारो ने समय और दूरी के अन्तर को मिटाकर संसार के तमाम हिस्सो को इस तरह मिला दिया है कि एक की हलचल का दूसरे पर फौरन असर पडता है। हम चाहे कितना भी बचने और दूर रहने की कोशिश करे दुनिया मे होने वाली घटनाये किसी न किसी तरह हमको अपने भँवर मे खीच ही लेगी। ऐसी हालत मे अपने और अपने देश के भले-बुरे का ख्याल रखने वाले हर एक शख्श का फ़र्ज है कि दुनिया की हलचलो पर निगाह रखे। यह छोटी सी किताब इसी उद्देश्य को किसी हद तक पूरा

करने के लिये लिखी गई है। इससे पाठकों को खास-खास मुल्कों की मौजूदा हालत और उनकी नीति का तो पता लगेगा ही साथ ही आजकल की राजनीति और युद्ध-विद्या की उन मूल बातों का भी हाल मालूम हो सकेगा जिससे वे आगे होने वाली घटनाओं का हाल समझ सकेंगे और उनके बारे मे खुद ही कुछ अनुमान भी कर सकेंगे।

अगर्चे राजनीति का विषय रूखा और गूढ होता है, तो भी हमने इस पुस्तक को मनोरंजक और सरल बनाने की पूरी कोशिश की है, जिससे साधारण पाठक भी इसे शौक से पढ और समझ सके। जर्मनी, इटली, जापान, रूस वगैरह की भयंकर फौजी तैयारियां, फ्रांस के तिलस्मी किले, बिना चालक के उडने वाले हवाई टारपेडो जहाज, डो-डेढ सौ मील तक गोला फेंकने वाली तोपें, अनगिनती मनुष्यों को पल भर मे मारने वाली जहरीली गैसें, बड़ी-बडी सेनाओं का संहार कर सकने वाली बिजली की मृत्यु-किरण, परमाणुओं की ताकत से संसार के नाश की योजना आदि कितने ही चकित और स्तम्भित करने वाले रहस्य पाठकों को इस पुस्तक मे मिलेंगे।

योरोप, अमरीका मे कितने ही लेखक इस तरह की किताबें अपने देश वालों मे युद्ध का भाव भडकाने और इस तरह अपने देश की धाक दूसरे देशों पर जमाने के उद्देश्य से भी लिखते हैं। ऐसे लेखक युद्ध की तारीफ करते है और उसे लाभ-कारी बतलाते हैं। पर हमारा सिद्धान्त इस सम्बन्ध मे यह है

कि अगर मनुष्य ज्ञान-विज्ञान मे इतनी तरक्की कर लेने पर भी आपस से भाई-चारे का वर्ताव नही कर सकता और जानवरो की तरह मरता-कटता है तो यह उसके लिये बडे शर्म की बात हैं। इस लिये हमने यह कोशिश की है कि इस किताब को पढ़ कर पाठको को आधुनिक युद्ध की भयकरता, उससे उत्पन्न होने वाली ससार के नाश की सम्भावना और उसकी दूसरी बुराइयो का पता लग जाय। हमारा विश्वास है कि इन ख्यालात का जितना ज्यादा प्रचार होगा उतना ही ससार का भला हो सकेगा और उस पर आने वाले कष्टो मे कमी हो सकेगी।

पर हम यह भी जानते हैं कि ऐसे ससारव्यापी महान परिवर्तनो का रोक सकना आदमी की ताकत के बाहर है। काल-चक्र की गति मे वाधा डाल सकने की बात सोचना भी मूर्खता हैं। तो भी यह सम्भव है कि जो लोग इस सम्बन्ध मे समय रहते कुछ जानकारी हासिल करके अपने को परिस्थिति के अनुकूल बनाने की कोशिश करेगे वे शायद भावी आपत्तियों से कुछ अशो मे सुरक्षित रह सके। इस पुस्तक को लिखने मे हमने इस बात का ख्याल जरूर रखा है, पर इसमें हमको कह । तक कामयाबी हुई है इसका फैसला दूसरे विद्वान'लोग और हमारे प्यारे पाठक ही कर सकते हैं। हाँ, अगर उनकी तरफ से हमको कुछ प्रोत्साहन मिला तो हम अपनी अगली पुस्तकों "हवाई युद्ध'—'नई दुनिया' आदि के द्वारा भावी परिवर्तनो की कुछ और झलक दिखलाने की कोशिश करेगे।

—'भारतीय योगी'

विषय-सूची

——

सम्वत् २०००

अथवा

भावी महाभारत

नये युग का सूत्रपात

परिवर्तन या बदलते रहना संसार का अटल नियम है। साधारण से साधारण बुद्धि का आदमी भी अच्छी तरह जानता है कि दुनिया में कभी कोई चीज हमेशा एक सी हालत मे नहीं रहती। जो आज बालक है वह कल जवान होगा, फिर बूढा होकर यहाँ से चला जायगा। यही हाल तमाम मुल्कों, कौमों, मजहबों, सब तरह की संस्थाओं, रीति-रिवाजों, सामाजिक और आर्थिक प्रणालियों आदि का है। यह सच है कि इनके जवान और बूढ़े हो कर मिट जाने में ज्यादा अर्सा लगता है, पर एक दिन अन्त सब का हो जाता है। जब यह बदलाव धीरे-धीरे होता है तो मामूली आदमी उसे अनुभव नहीं कर सकते। क्योंकि जैसा हम ऊपर बतला चुके हैं आदमी की उम्र की बनिस्बत इन संस्थाओं और रिवाजों की उम्र बहुत ज्यादा होती है और इस लिये कोई भी आदमी अपनी जिन्दगी मे इनके चढाव उतार का बहुत थोडा

हिस्सा देख पाता है। सिर्फ वे ही लोग जो इतिहास और समाज-विज्ञान के जानकार हैं उसे समझ सकते हैं।

पर एक जमाना ऐसा भी आता है जब पुरानी संस्थाओं और प्रणालियों का एक दम खात्मा होकर नई रचना होने लगती है। तब परिवर्तन की चाल बड़ी तेज हो जाती है और मामूली आदमी भी उसे देख और समझ सकते हैं। संयोगवश ऐसा ही जमाना इस समय हमारे सामने मौजूद है। इस वक्त सब तरह की संस्थाओं और सामाजिक प्रणालियों में ऐसी तेजी और हलचल के साथ बदलाव हो रहे हैं कि जो लोग अपनी आँखें बन्द किये रहते है उनको भी उसके धक्के लग रहे है और वे भी आँखे खोलने को लाचार हो रहे है। अब ऐसे मामूली समझ के लोग भी यह अनुभव कर रहे है कि निश्चय ही पुराना युग खत्म होकर किसी नये युग का सूत्रपात हो रहा है।

आज मनुष्य-जीवन के राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक किसी भी पहलू पर निगाह डालिये, आप को फौरन पता लग जायगा कि पुरानी बाते बड़ी जल्दी-जल्दी बदल रही है और उनकी जगह ऐसी बाते जारी हो रही है जिनका कुछ समय पहले हम खयाल भी नही कर सकते थे। यह सच है, कि आज भी ज्यादातर आदमी इन परिवर्तनों का असली मतलब नही समझ पाते, इस

लिये वे या तो उनको देखकर चौंक रहे हैं और घबड़ा रहे है या नाराज होकर कोस रहे हैं। उनके मुँह से सिर्फ यही निकलता है कि अब 'पृथ्वी पर पाप बहुत बढ गया है और ससार के बुरे दिन आ गये है।'

पर जमाना या कालचक्र ऐसे लोगो की पर्वाह किये विना जोरो से अपना काम करता चला जाता है। वह मौजूदा समय के विपरीत पुरानी और हानिकारक रीति-रिवाजों और सस्थाओं को बेरहमी से तोड-फोड कर फेंक रहा है। मनुष्य-जीवन के हर एक हिस्से पर उसका असर हो रहा है।

राजनैतिक क्षेत्र मे देखिये तो पिछले १५-२० वर्षों मे कायापलट ही हो गई है। बडे-बडे सम्राटों, शाहन्शाहों सुल्तानों, कैसरो और जारों का नाम निशान नहीं बचा है। जो राजसिंहासन सैकडो हजारों वर्षों से कायम थे और जो ईश्वर के वरदान स्वरूप, अटल अचल समझे जाते थे उनको मामूली लोगों ने उखाड कर फेंक दिया। सिर्फ दो एक सम्राट जो आरम्भ ही से प्रजा की इच्छा-नुसार काम करते थे और जिन्होंने पहले ही से हुकूमत की बागडोर प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ मे दे दी थी, बचे है। नहीं तो ज्यादातर देशों मे ऐसे ही लोग कर्ता-धर्ता बने बैठे है जिनका जन्म बहुत ही नीच समझे जाने वाले वश में हुआ है। पाठक शायद जानते होंगे कि मुसोलिनी

लुहार, हिटलर भिखारी, और रूस का स्टैलिन चमार है। क्या यह नया युग शुरू होने का लक्षण नहीं है?

सामाजिक क्षेत्र मे भी कम हलचल नही मची है। इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण हमारे ही देश मे मिलता है। जिन रिवाजो और रूढियों मे लोग पीढियो मे लिपटे हुये थे वे खण्ड-खण्ड होती नजर आती है। विदेश-यात्रा, स्त्रियो को शिक्षा न देना और उन्हे पर्दे मे कैद रखना चार-चार पॉच-पॉच साल की बच्चियो का विवाह कर देना और विधवा हो जाने पर उनसे जबर्दस्ती घोर तपस्या कराना आदि बाते हम लोगो के देखते-देखते मिट गई है या मिटी जाती हैं। अब सामाजिक रूढियो के सबसे बडे किले जातपॉत और छुआछूत का नम्बर आया है और उसकी नींव हिल रही है। अगर्चे पुराने ख्यालों के लोग उसे बचाने के लिये बडी हायतोबा कर रहे हैं और आठ-आठ आंसू रो रहे है पर युग परिवर्तन की प्रचण्ड लहर के सामने उसका बच सकना नामुमकिन है और हम लोगों की जिन्दगी मे ही यह जमीन पर गिरता नजर आयेगा।

धर्म की तो बात ही न पूछिये। दर असल ससार मे कभी सच्चा धर्म था भी या नही इसमे सन्देह है। क्योकि जिसे आम तौर पर धर्म के नाम से पुकारा जाता है वह तो पडित, पुरोहित, मौलवी, पादरी आदि लोगो की समाज

पर हुकूमत थी। तरह-तरह से इन लोगों के पेट भरने को ही लोग धर्म समझते आये है। यही सबब है कि धर्म के नाम पर भी हमेशा से झगडे होते रहे है। अगर दुनिया मे सच्चा धर्म होता तो उससे मनुष्यो को सिवाय सुख के दुख मिल ही कैसे सकता था। अब लोग अच्छी तरह समझ गये है और सब देशो मे धर्म का पेशा करने वाले लोगो का जोर वडी तेजी से घट रहा है। नये युग मे इस पेशे का बिल्कुल खात्मा हो जाना पक्की बात है, और ऐसा हो जाने के बाद ही शायद हमको उस धर्म के दर्शन हो सकेगे जिसका ताल्लुक मनुष्य के दिल और आत्मा मे होगा न कि बाहरी ढोंगो से।

इन तमाम लक्षणों और चिन्हों को देख कर सब श्रेणियों के समझदार लोग इसी नतीजे पर पहुंचते हैं कि अब युग के बदलने का समय नजदीक आ पहुचा है। इस लिये जहॉ जाहिल या अनसमझ लोग इन चिन्हों को देखकर डरते या चौंकते है वहॉ समझदार या विवेकशील समय के मुताबिक चलने की कोशिश करते हैं।

इतना ही नहीं बहुत से धार्मिक विचारों के लोगों ने भी नये युग के आगमन को अनुभव किया है। इसी का फल है कि हम हिन्दुओं में कल्कि अवतार, मुसलमानों मे मेंहदी और ईसाइयों मे मसीहा के अविर्भाव होने की चर्चा सुन रहे हैं। बर्मा के एक मठ में दस हजार बौद्ध

लुहार, हिटलर भिखारी और रूस का स्टैलिन चमार है। क्या यह नया युग शुरू होने का लक्षण नहीं है ?

सामाजिक क्षेत्र मे भी कम हलचल नही मची है। इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण हमारे ही देश मे मिलता है। जिन रिवाजो और रूढियों से लोग पीढियो से लिपटे हुये थे वे खण्ड-खण्ड होती नजर आती है। विदेश-यात्रा, स्त्रियो को शिक्षा न देना और उन्हे पर्दे मे कैद रखना चार-चार पाँच-पाच साल की बच्चियो का विवाह कर देना और विधवा हो जाने पर उनसे जबर्दस्ती घोर तपस्या कराना आदि बाते हम लोगो के देखते-देखते मिट गई है या मिटी जाती है। अब सामाजिक रूढियो के सबसे बड़े किले जातपात और छुआछूत का नम्बर आया है और उसकी नीव हिल रही है। अगर्चे पुराने ख्यालो के लोग उसे बचाने के लिये बडी हायतोबा कर रहे हैं और आठ-आठ आँसू रो रहे हैं पर युग परिवर्तन की प्रचण्ड लहर के सामने उसका बच सकना नामुमकिन है और हम लोगो की जिन्दगी मे ही यह जमीन पर गिरता नजर आयेगा।

धर्म की तो बात ही न पूछिये। दर असल संसार मे कभी सच्चा धर्म था भी या नही इसमे सन्देह है। क्योकि जिसे आम तौर पर धर्म के नाम से पुकारा जाता है वह तो पंडित, पुरोहित, मौलवी, पादरी आदि लोगो की समाज

पर हुकूमत थी। तरह-तरह से इन लोगों के पेट भरने को ही लोग धर्म समझते आये है। यही सबब है कि धर्म के नाम पर भी हमेशा से झगडे होते रहे है। अगर दुनिया मे सच्चा धर्म होता तो उससे मनुष्यों को सिवाय सुख के दुःख मिल ही कैसे सकता था। अब लोग अच्छी तरह समझ गये है और सब देशो मे धर्म का पेशा करने वाले लोगो का जोर बडी तेजी मे घट रहा है। नये युग मे इस पेशे का बिल्कुल खात्मा हो जाना पक्की बात है, और ऐसा हो जाने के बाद ही शायद हमको उस धर्म के दर्शन हो सकेगे जिसका ताल्लुक मनुष्य के दिल और आत्मा मे होगा न कि बाहरी ढोगो से।

इन तमाम लक्षणों और चिन्हों को देख कर सब श्रेणियों के समझदार लोग इसी नतीजे पर पहुंचते है कि अब युग के बदलने का समय नजदीक आ पहुचा है। इस लिये जहाँ जाहिल या अनसमझ लोग इन चिन्हों को देखकर डरने या चौकते है वहाँ समझदार या विवेकशील समय में मुताबिक चलने की कोशिश करते हैं।

इतना ही नहीं बहुत से धार्मिक विचारों के लोगों ने भी नये युग के आगमन को अनुभव किया है। इसी का फल है कि हम हिन्दुओं मे कल्कि अवतार, मुसलमानों मे मेंहदी और ईसाइयों मे मसीहा के अविर्भाव होने की चर्चा सुन रहे हैं। बर्मा के एक मठ मे दस हजार बौद्ध

साधू बुद्ध के नये अवतार का स्वागत करने की तैयारी कर रहे है। ईरान के बीस लाख बहावी नवीन अवतार मे पूरा विश्वास रखते हैं और उसका प्रचार कर रहे हैं। लाखो थियोसोफिस्ट भी यही बात कहते दिखलाई पडते हैं। इस तरह करोडो आदमी और पचासो संस्थायें जल्दी ही नये अवतार के होने और उसके द्वारा संसार मे नया युग कायम किये जाने मे विश्वास रखते हैं और उसके लिये तैयारी कर रहे है।

इस नये युग का असर संसार मे अभी से पडने लग गया है और जैसा हम ऊपर बतला चुके है उसके कितने ही लक्षण दिखलाई दे रहे हैं। पर वह पूरी तरह कब तक आ जायगा यह सवाल पूछा जा सकता है। इस विषय मे पुरानी मिसालो से यह जान पडता है कि जब नया युग दरअसल शुरू होता है तो उससे पहले एक बार संसार मे हद दर्जे की अशान्ति और मारकाट हो लेती है, जिससे परिवर्तन के ज्यादातर विरोधियो का खात्मा हो जाता है या तकलीफें उठा कर उनके ख्यालात बदल जाते हैं। ऐसे मौके पर अक्सर प्राकृतिक उत्पात, जैसे भूचाल, तूफान, अकाल आदि भी बडे भयकर रूप में होते हैं और उससे भी दुनिया की सफाई होने मे मदद मिलती है। अगर हमारे धार्मिक ग्रथो के शब्दों मे कहा जाय तो जब अत्याचार और कष्टों के मारे मनुष्यमात्र

त्राहि-त्राहि करने लगते है तभी नया अवतार होता है और तभी नया युग शुरू होता है।

पर लोग उतावले होकर फिर सवाल करेगे कि आखिर यह सब कब तक होगा ? अगर्चे, जैसा कि कहा जाता है राजनैतिक घटनाओ के बारे मे भविष्यवाणी करना नामुमकिन है, तो भी इस सम्बन्ध मे एक कल्पना हमारे मन मे उत्पन्न होती है। हमारे विक्रम सम्वत् का दूसरा हजार खत्म होकर तीसरा हजार शुरू होने वाला है। सात वर्ष बीतने पर हम सम्वत् २००० को समाप्त कर के तीसरे हजार मे प्रवेश करेगे। शायद हर रोज सम्वत् लिखते रहने के कारण लोगों का ध्यान इस तरफ न गया हो, पर दरअसल यह एक बहुत बडी घटना है। इस देश मे विदेशियों के आगमन और बडे भयकर युद्ध मे उनको हराने के उपलक्ष्य मे महाराज विक्रम ने यह सम्वत् जारी किया। जब इसका पहला हजार खत्म हुआ तो देश मे फिर बडी उथल पथल मची और देश पराधीन होकर मुसलमानों की हकूमत शुरू हुई। अब दूसरा हजार खत्म होने पर कोई बहुत बडा महत्वपूर्ण घटना होना स्वाभाविक ही है।

कुछ लोगों का कहना है कि सम्वत् दो हजार में कल्कि अवतार का प्रकट होना अवश्यम्भावी है। वे कहते हैं कि युग के बदलने और अवतार प्रकट होने के समय

जैसी अद्भुत घटनायें हुआ करती है वैसी आज कल बहुत हो रही है। मिसाल के तौर पर हाल ही में अखबारों मे छपी कुछ बातें यहां दी जाती है --

(१) इटावा के पास तथा और भी कई जगह खून के रङ्ग की बारिश हुई। एकाध जगह तो स्थानीय डाक्टरों ने उसकी जाच की और उसे असली खून ही बतलाया।

(२) बिहार के एक कस्बे में एक गाय की खबर आई है जो कभी ग्याभिन नहीं हुई पर रोज कई सेर बढ़िया दूध देती है।

(३) मुजफ्फरपुर मे एक आम के पेड से मनुष्य के कराहने की सी आवाज निकलती हुई सैकडो लोगो ने सुनी।

(४) १९ जून के सूर्य ग्रहण के अवसर पर एक गाय ने खाना पीना त्याग दिया और ग्रहण के बाद पहले की रखी हुई सानी भी नहीं छुई। अन्त मे जब उसे हटा कर नई सानी की गई तभी उसने खाया।

(५) इलाहाबाद के पास एक गाव मे सिर्फ पाच-छ महीने के आम के पौधे मे तीन चार फल लगे थे।

इस तरह की घटनाओ को ढूंढ कर अगर लिखा जाय तो एक लम्बी फेहरिस्त तैयार हो सकती है। इस तरह की कुदरत के खिलाफ घटनाओं का हाल पढ कर और सुनकर लोगो मे दिन पर दिन यह ख्याल जड पकडता

जाता है कि सचमुच ही नया युग पास आ पहुचा है और अब दुनिया में अवश्य ही बहुत बडी उथल-पथल होगी।

हमारे यहाँ के प्राचीन धार्मिक ग्रथो और बाइबिल के समान ससार की दूसरी धार्मिक पुस्तकों की भविष्य-वाणियों मे भी यही जान पडता है कि सम्वत् २००० मे बहुत बडा परिवर्तन तथा अशान्ति होकर दुनिया की हालत एक दम बदल जायगी। इन भविष्यवाणियों का हाल हम अन्त मे लिखेगे। ।पहले यह बतलाते है कि दर-असल इस वक्त ससार कैसी मुसीबत मे फँसा है और चारों तरफ सर्वनाश की कैसी तैयारी हो रही है।

—'०—

सर्वनाश की तैयारी

कुछ समय पहले एक भारतीय यूनीवर्सिटी के प्रोफेसर अर्थशास्त्र का विशेष अध्ययन करने के लिये इङ्गलैंड गये थे। अगर्चे उनका खास उद्देश्य अपनी पढाई पूरी करना ही था और राजनीतिक झगडो मे उनको कोई सरोकार न था तो भी तमाम योरोप की हालत उनको बडी हलचलपूर्ण जान पडी और कदम-कदम पर आने वाले खतरे के लक्षण दिखलाई पडे। हाल ही मे वहाँ से लौटने पर एक अखबार के सम्वाददाता से बाते करते हुये उन्होंने कहा था —

"योरोप मे जिस बात का मुझे खास तौर पर अनुभव हुआ वह उस महाद्वीप वालो की युद्ध की मनोवृत्ति है। यह मनोवृत्ति योरोप मे साफ दिखलाई पडती है और एक बाहरी आदमी को भी उसका तुरन्त ही अनुभव हो जाता है। इस समय योरोप बारूद की एक ज़बरदस्त मेगज़ीन बना हुआ है, सिर्फ एक चिनगारी पडने

से वहाँ वीस साल पहले की घटना (महासमर) से भी ज्यादा भयकर और नाश करने वाला दृश्य दिखलाई पड सकता है। • योरोप मे युद्ध का छिडना निश्चित है, उसे कोई रोक नहीं सकता। ताज्जुब यही है कि इतने पर भी लोग नि शस्त्रीकरण कान्फरेस की सफलता के लिये ऐडी चोटी का पसीना एक किये डालते हैं। ये सब फिजूल की बाते हैं। मन मे लडाई का भाव रखते हुये शन्ति की बाते करना बेकार है।

इसी तरह की राय नि शस्त्रीकरण कान्फरेस के सभापति स्वर्गीय हैण्डरसन ने प्रकट की थी। 'लीग आफ नेशस' से जर्मनी के अलग हो जाने पर आने वाले खतरे की कल्पना करके उन्होंने कहा था —

"चाहे मौजूदा हालत मे समझौता हो सकना कैसा भी कठिन क्यों न जान पडता हो, तो भी सभी देशों की सरकारों को हथियारों की समस्या हल करने और अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति बनाये रखने की चेष्टा करनी ही पडेगी। क्योंकि यदि जल्दी ही इसके लिये कोशिश न की जायगी तो हमको बडे खतरे में पडना होगा। इस समय हमको सहयोग या कलह—शान्ति अथवा लडाई दो बातों मे से एक को चुनना पडेगा। या तो हमको धीरे-धीरे अपने हथियार बिल्कुल घटा देने होंगे या अपनी

रखा और दूसरों पर हमला करने के लिये जोरों से तैयारी शुरू करनी पड़ेगी।"

इङ्गलैंड के भूतपूर्व प्रधान मंत्री मि० लायड जार्ज की गिनती संसार के सबसे बड़े राजनीतिज्ञों में की जाती है। आपने 'अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति रक्षिणी सभा' के एक जलसे में बोलते हुए संसार की भयंकर दशा का चित्र इन शब्दों में खींचा था —

"दुनिया की हालत बड़ी अजीब हो रही है और मैं नहीं कह सकता कि क्या होने वाला है। इसकी तन्दुरुस्ती बिल्कुल खराब हो गई है। जब कोई आदमी बीमारी के सबब से कमजोर हो जाता है तो वह हर एक बात से डरने लगता है। कभी वह ठण्डी हवा से बचने को कोट का कालर लौटता है और कभी कहता है कि 'इस खिडकी को बन्द करो उस दर्वाजे को बन्द करो।' वह ताकत के लिये तरह-तरह की पेटेण्ट दवायें खाता है पर इससे उस का खून खराब होता है, दिल कमजोर हो जाता है और शरीर पर बहुत बोझ पड जाता है। यही हालत आज तमाम दुनिया की हो रही है।"

ईसाइयों के एक बहुत बडे सम्प्रदाय रोमन कैथलिकों के धर्मगुरू पोप भी मौजूदा हालत को योरोप ही नहीं तमाम संसार के लिये बड़ी अमङ्गलजनक समझते है। उनको भय है कि इसके फल से मौजूदा ईसाई सभ्यता

का सर्वनाश हो जायगा। उन्होंने 'इन्ट्रैसियेट' पत्र के सम्वाददाता से कहा था कि योरोपियन देशो की फौजी नीति, खास कर स्त्रियों को फौज मे दाखिल करना, बहुत ही हानिकारक है। उन्होंने ऐसी राष्ट्रीयता अथवा देशभक्ति की भी निन्दा की जिसका उद्देश्य किसी भी उपाय से अपने देश का महत्व बढ़ाना हो। क्योंकि ऐसी हालत मे कमजोर देशो की स्वाधीनता हर्गिज कायम नही रह सकती और इससे दुनिया मे मारकाट फैलना जरूरी है।

परस्परविरोधी बातें

पर हम देखते है कि इन चेतावनियों और नेक-सलाहो का लडाई चाहने वाले देशों पर कुछ भी असर नहीं पड रहा है और वे अपनी रक्षा के उपायो और हथियारों के बढाने मे ऐसे लगे हुये हैं मानों उन पर कल ही हमला होने वाला है। दूसरी तरफ इन देशों के कर्ताधर्ता यह भी कहते जाते हैं कि वे लडना पसन्द नही करते और उनका उद्देश्य शान्ति कायम रखना ही है। जिस जापान को सब से ज्यादा युद्धप्रिय और लडाकू बतलाया जाता है उसके वैदेशिक मत्री ने कुछ समय पहले अपने राष्ट्र को शान्ति-मंदिर का मुख्य आधार बतलाया था। जो हिटलर जर्मनी के हर एक नौजवान को सिपाही बना देने पर तुला है और जिसने देश की तमाम शक्तियो को लडाई की

तैयारी का साधन बना डाला है वह भी अपने को शान्ति का उपासक बतलाता है और २५ वर्ष तक शान्ति बनाये रखने की सधि करने को उत्सुक है। रूस की विशाल लाल सेना की चारो तरफ बडी चर्चा है, पर वहा के शासको का कथन है कि वे शान्ति के सच्चे उपासक हैं, क्योंकि उनकी आर्थिक और सामाजिक उन्नति की योजनाये तभी सफल हो सकती हैं जब कि ससार मे शान्ति बनी रहे। अमेरिका ने योरोपियन देशों को बहुत सा कर्ज दे रखा है, जिसके वसूल होने की आशा तभी की जा सकती है जब कि वहा अशान्ति न फैले। इङ्गलैण्ड का साम्राज्य इतना ज्यादा बडा है और वह अपने घरेलू झमेलो मे ही ऐसा उलझा रहता है कि वह लडने-भिडने की बात कभी पसन्द कर ही नही सकता। समाचार पत्रो से जहा तक पता चलता है वहा के राजनीतिज्ञ बराबर इसी कोशिश मे लगे रहते हैं और चारो तरफ दौड-धूप करते रहते है कि किसी तरह लडाई की आग भडकने न पाये।

सदेहपूर्ण मनोवृत्ति

इन एक दूसरे से उलटी बातो का मतलब क्या है? क्या सबब है कि योरोपियन देश युद्ध की हानियों को जानते हुये भी उसकी तरफ बढते चले जाते है? इसका सब से बडा कारण उनका एक दूसरे को सन्देह की निगाह

से देखना और आपस का द्वेष है। हर एक देश अपने मन में यह समझ रहा है कि उसका पडोसी छुपे तौर पर लडने की तैयारी कर रहा है और उसे बर्बाद करना चाहता है। अगर्चे सन् १९१४ वाले महासमर में हार जाने पर जर्मनी के तमाम हथियार नष्ट कर दिये गये और उनका बनाया जाना भी रोक दिया गया तो भी फ्रान्स के मन में बराबर यही बात घुसी रही कि जर्मनी के पास छुपे तौर पर बहुत सी सेना और लडाई का सामान मौजूद है। इस लिये वह अपनी फौजी ताकत को बराबर बढाता रहा और इस काम में उसने अरबों रुपया खर्च कर डाला। यही हालत जापान और रूस की है। सन् १९०४ के रूस-जापान संग्राम के बाद से जापान रूस को हमेशा के लिये अपना दुश्मन समझने लग गया है और जैसे ही रूस किसी तरह की तरक्की करता है अथवा अपनी फौज को मजबूत बनाने की कोशिश करता है वैसे ही जापान के कान खडे हो जाते हैं। वह जानता है कि रूस संसार का सब से बडा देश है और उसके पास किसी तरह के सरजाम की भी कमी नहीं है। इस डर से जापान ने अपनी सारी ताकत फौजी तैयारी में लगा दी है और इसके लिये इतना रुपया खर्च कर डाला है कि उसका खजाना खाली पडा है। इन सब में बुरी हालत मध्य योरोप और बाल्कान के छोटे-छोटे देशों की है। ये हमेशा एक दूसरे

से ईर्षा और चढाऊपरी करते रहते है। इनके झगडो का तमाम योरोप पर असर पडता है और इनके कारण बडे-बडे राष्ट्रो मे कलह हो जाती है। हमारे पाठक जानते ही है कि सन १९१४ का योरोपीय महायुद्ध इसी बाल्कान प्राय द्वीप के एक छोटे से देश सर्विया के कारण आरम्भ हुआ था। वहा के एक गुप्त हत्यारे ने आस्ट्रिया के राज-कुमार को मार डाला और इस चिनगारी ने योरोप भर मे आग लगा दी। आज कल ये छोटे-छोटे देश भी एडी से चोटी तक हथियारो से लदे है और इनकी सम्मिलित शक्ति किसी बडे राष्ट्र से कम नही है।

इस तरह तमाम छोटे बडे देशो को लडने के लिये तैयार होते देख इङ्गलैण्ड और अमेरिका के समान बडे देशो को भी, जो दरअसल शान्ति बनी रहने मे ही अपना लाभ समझते है लाचार होकर अपनी फौज और हथियार बढाने पडते है। इङ्गलैण्ड मे हवाई सेना को बढाने और खूब मजबूत बनाने की नई कोशिश और अमेरिका मे १२० जङ्गी जहाज तथा ११८४ हवाई जहाज बनाने का नया प्रोग्राम इसी सदेहपूर्ण स्थिति का फल है। हालत कहाँ तक विकट हो गई है इसकी सब से साफ मिसाल स्वीजर-लैण्ड की है। यह देश योरोप के बीच मे बसा है और उसकी नीति हमेशा शान्तिपूर्ण रही है। वह सच्चा प्रजा-तन्त्रवादी देश है और उसने कभी किसी दूसरे देश पर

कब्जा करने की कोशिश नहीं की। पिछले महायुद्ध मे भी वह पूरी तरह से अलग रहा था। पर ऐसे देश को भी अब फौजी ताकत बढाने की चिन्ता लग गई है। इस सम्बन्ध में कुछ समय पहले अखबारों मे नीचे लिखा तार छपा था :—

"मालूम हुआ है कि फेडलर चैम्बर मे जल्दी ही एक बिल पास किया जायगा जिसके मुताबिक १० करोड फ्रांक (करीब ८॥ करोड रु०) स्वीजरलैण्ड की रक्षा के लिये सेना का पुनर्सङ्गठन करने मे खर्च किया जायगा। इसका सबब यह है कि थोड़े दिन पहले लासेन के एक अख़बार ने यह खबर छापी थी कि जर्मनी के जनरल स्टाफ ने एक स्कीम तैयार की है जिसके मुताबिक जर्मन फ़ौज स्वीजरलैंड के रास्ते फ्रांस के किलों पर पीछे की तरफ से हमला करेगी। इस खबर पर इन दिनों स्वीजरलैण्ड मे बडी वहम हो रही है। अगर्चे जर्मन सरकार ने इस खबर को ग़लत बतलाया है तो भी स्वीजर-लैण्ड वाले अपनी रक्षा के लिये तैयार हो जाना चाहते हैं।"

हथियारों और फ़ौज की वृद्धि

इस तरह अगली लडाई के डर से योरोप और अमरीका के सभी देश ज़ोरों के साथ अपनी फौज और लडाई की सामग्री को बढा रहे हैं। जानकार लोगों का कहना है कि इस समय योरोपियन देशों की फौजों की संख्या कुल मिला कर ३ करोड है जब कि पिछले महा-

समर के समय वह सिर्फ दो करोड थी। इसी तरह समुद्री फौज और जहाजों की तादाद भी बहुत बढ रही है। इस बारे में इङ्गलैण्ड की पार्लामेन्ट मे भाषण करते हुये मि० लायड जार्ज ने कहा था —

“सन १९१४ मे हमारे नाशक जहाजो (डेस्ट्रायर्स) का परिमाण १,३५००० टन था जो इस समय बढ कर १,९७००० हो गया है। इसी तरह फ्रास के नाशक जहाजो का परिमाण ३५००० टन से बढ कर १,९८००० टन, अमरीका का ४०००० टन से बढ कर २,५९००० टन और जापान का ४,४७० टन से १,२५००० टन हो गया है। जब हम गोतेखोर नावों पर निगाह डालते हैं तो उनकी भी ऐसी ही हालत जान पडती है। सन् १९१४ मे हमारी जल सेना में गोताखोर नावों का परिमाण ४७००० टन था जो अब ६१००० टन हो गया है। फ्रास के पास ३३००० टन के बजाय ९७००० टन की गोताखोर नावें हैं। अमरीका मे उनका परिमाण १६००० टन से ७७००० टन और जापान मे ३२६४ टन से ७७००० टन हो गया है। सम्भवतः इटली के पास भी इङ्गलैण्ड से ज्यादा गोताखोर नावे हैं।”

यह छोटा सा उद्धरण यह दिखलाने को काफी है कि पिछले कुछ सालों मे योरोपियन देशों मे फौजी सामान कितना बढ़ा है। यह हिसाब सिर्फ उन चीजों का है

जिनको छुपाया नहीं जा सकता। पर इन देशों ने कितनी मशीनगनें, बन्दूके और तोपे बना रखी हैं तथा कितना गोला-बारूद जमा कर रखा इसका तो किसी को पता ही नहीं है। अब जब से जापान और जर्मनी ने राष्ट्रसघ को छोड कर लडाई की तैयारी खुल्लमखुल्ला शुरू कर दी है तब से तमाम देशों के हथियार बनाने वाले कारखाने दिन रात काम कर रहे है। हथियार बनाने मे जो निकल धातु खासतौर पर काम आती है उसकी बिक्री सात गुनी बढ गई है। हथियार बनाने वाली कम्पनियों के शेयरों की क़ीमत दुगुनी-तिगुनी हो गई है और बराबर बढती ही जाती है। फ्रांस के तोप बनाने वाले जिस कारखाने का मूलधन पहले २ करोड़ ८० लाख फ्रांक था वह बढ कर १८ करोड हो गया है। इसी तरह रासायनिक युद्ध की सामग्री (गैस आदि) बनाने वाले कारखाने की पूँजी ६० लाख से बढ कर ३० करोड फ्रांक और हवाई जहाजों के एक कारखाने की ९० लाख से बढ कर ८ करोड ८० लाख फ्रांक हो गई है।

जासूसों की कार्रवाइयाँ

लडाई की सम्भावना के साथ ही तमाम देशों में जासूसों की कार्रवाइयाँ जोरशोर से शुरू हो गई हैं

और यह लड़ाई के जल्दी ही होने का एक पक्का सबूत है। फ्रांस के अखबारों में जो खबरें छपी हैं उनसे जान पड़ता है कि वहाँ जर्मनी के जासूसों का जाल सा फैला है और उनकी तादाद देखकर सरकार घबड़ा उठी है। ये जासूस खास तौर पर फ्रांस की गुप्त किलेबन्दी, जिसे मैगीनोट लाइन, कहते हैं, और नये हथियारों का भेद जानने की कोशिश कर रहे हैं। इस बारे में एक अखबार में छपा था :—

" पिछले दो एक वर्षों से शत्रु के कान और आँखें बहुत उतावलेपन से काम कर रहे हैं। हाल ही में इन जासूसों की तादाद इतनी ज्यादा हो गई थी कि उसे देख कर भयभीत होना पड़ता है। कुछ ही महीनों में ५१ जासूसों को कसूर साबित हो जाने पर सख्त कैद की सजा दी गई। "

इन जासूसों में खास तौर पर दिलचस्प किस्सा सोफी नाम की स्त्री का है। उसने एक फ्रांसीसी विशेषज्ञ को फुसला कर गुप्त किलेबन्दी के एक भाग का पूरा नकशा देने को राजी कर लिया। वह उसे जर्मन जासूसों के बड़े अफसर के पास ले गई जिसने कहा कि अगर वह (विशेषज्ञ) फ्रांस की नई मशीनगन का, जो बहुत ही कारगर बतलाई जाती है, पूरा वर्णन ला देगा तो उसे ५ हज़ार पौण्ड इनाम दिया जायेगा। थोड़े ही दिनों बाद

हथियारखाने से एक पूरी मशीनगन ही गायब कर दी गई। पर जब ये लोग उसे जर्मनी की सीमा की तरफ ले जा रहे थे तो फ्रांस के जासूसों ने उनको रोक लिया और बारह शख्श गिरफ्तार किये गये। आज कल इस तरह के सैकडों मामले योरोप की सभी राजधानियों मे हो रहे हैं, पर उनको जहाँ तक बन पडता है सर्वसाधारण से छुपा कर रखने की कोशिश की जाती है, क्यो कि ऐसी बातों से लोगों मे सनसनी फैलती है और कितनी ही भेद की बाते खुल जाती हैं।

आबादी बढ़ाने की कोशिश

योरोप के देशों मे एक बड़े ताज्जुब की बात यह देखने मे आ रही है कि जहाँ कुछ साल पहले राजनीतिज्ञ और नेतागण आबादी को घटा कर एक खास हद्द के भीतर रखने की कोशिश करते थे वहाँ आज ज्यादा से ज्यादा बच्चे पैदा करने पर जोर दिया जाता है। इटली, जर्मनी और फ्रांस इन तीन देशों मे तो इस बारे मे होड सी हो रही है। तीनों अपने यहाँ की जनता को तरह-तरह से उत्साहित करके आबादी बढाने की कोशिश कर रहे हैं । इस विषय मे एक अङ्गरेज लेखक ने कहा है —

"अगर आज हथियारों को बढ़ाने के लिये योरोपियन देशों में चढ़ाऊपरी हो रही है तो आबादी की बढ़ती में भी चढ़ाऊपरी होना लाजिमी है। लड़ाई में हथियारों का महत्व बहुत ज्यादा है पर आदमियों का महत्व उससे भी ज्यादा है। इसलिये योरोपियन देश एक स्वर से पुकार रहे हैं—'हमको बहुत से बच्चे दो।'' वे अपना खजाना खाली होने पर भी इस काम के लिये धन खर्च करने को तैयार हैं।

"उदाहरण के लिये जर्मनी की देखादेखी फ्रांस ने अपने यहाँ के कारखाने वालों के लिये एक नया कायदा बनाया है कि वे संतान उत्पन्न करने के लिये अपने मजदूरों को आर्थिक सहायता दें। इस कायदे के मुताबिक अलग-अलग शहरों में सहायता का परिमाण कम या ज्यादा रखा गया है। पर मोटे हिसाब से पहले बच्चे के लिये ७॥ शिलिङ्ग (५ रु०) माहवारी देने का कायदा है। इसके बाद हर एक बच्चे के लिए यह रकम बढ़ती जायगी। चार बच्चों के बाप को ३७॥ शिलिङ्ग से ५० शिलिङ्ग तक मिल सकेगा। खास हालत में एक बच्चे के लिये ३० शिलिङ्ग माहवारी तक दिया जा सकता है।"

लड़ाई के हिमायती

यह भी एक मजेदार बात है कि जहाँ ज्यादातर सभ्य और भले आदमी लड़ाई को बुरा समझते हैं कुछ लोग ऐसे

भी हैं जो लडाई को अच्छा बतलाते हैं। कुछ कहते हैं कि इससे दुनिया को बहुत फायदा पहुचता है। आजकल चारों तरफ लडाई की सनसनी देखकर ऐसे लोग खुल्लमखुल्ला अपने मत का प्रचार करने लगे हैं। इनमे से एक 'बङ्गाल लैसर्स' नामक मशहूर उपन्यास के लेखक मेजर यीट्स ब्राउन हैं। आप एक लेख मे जिसका शीर्षक है—"मैं युद्ध मे क्यों विश्वास रखता हू"—कहते है :—

"मैं यह विश्वास नही कर सकता कि मनुष्यों मे से कभी लडने की प्रवृत्ति मिटाई जा सकती है, क्योंकि जिस चैतन्य पदार्थ मे लडाई का गुण नहीं है वह मरा हुआ अथवा जराजीर्ण माना जाता है। कशमकश अथवा तनातनी का नाम ही जीवन है। ईश्वर ने ससार की जिस प्रकार रचना की है उसके मुताबिक हर एक आदमी, हर एक देश, हर एक विश्व अथवा ब्रह्माण्ड मे विरुद्ध गुणों का पाया जाना आवश्यकीय है। मेरी राय में परमात्मा ने लडाई को उसी प्रकार बनाया है जिस तरह उसने बिजली और आकर्षण शक्ति की सृष्टि की है। पर उसने मनुष्य को यह ज्ञान और अधिकार दिया है कि वह इन ताकतो से इस तरह काम ले कि जिससे ये नाश करने के बजाय लाभ पहुंचावें। हम 'लीग आफ नेशस' कायम कर सकते हैं पर इससे अरकारण हम को यह नहीं समझ लेना चाहिये कि वह परमात्मा की माया से भी ज्यादा ताकतवर है। ..

इसके सिवा लोग लडाई के खतरे को बहुत बढा-चढा कर वर्णन करते हैं। अगर तमाम योरोप आपस में लडने लग जाय तो भी इससे सभ्यता का नाश नहीं हो सकता जैसा कि हमारे राजनीतिज्ञ अक्सर हम से कहा करते हैं। सभ्यता का पौदा ऐसा चिमडा है कि वह बडी-बडी कठिनाइयो को पार कर चुका है। यह सच है कि पिछले महायुद्ध मे बहुत से लोगो को कष्ट उठाना पडा पर यह भी सच है कि नये-नये कामों के मिलने से लाखो आदमियो को ऐसा आनन्द भी मिल सका जो पहले उनको कभी प्राप्त नहीं हुआ था। हम शान्ति की पुकार मचाते हैं, पर उससे हमको क्या मिलेगा? यही कि हम सदा कारखानो और आफिसो में पिसते हुए मर जायँ।"

जर्मनी के जनरल लुडेनडर्फ की भी ऐसी ही राय है। वे फौजी मामलो के बहुत बडे जानकार माने जाते हैं और पिछले योरोपियन महायुद्ध मे जर्मन फौजो के कार्टर-मास्टर-जनरल थे। आजकल भी जर्मनी मे उनकी बडी इज्जत है और उनके सिद्धान्तो को सभी लोग मानते हैं। उन्होने हाल ही मे एक पुस्तक 'सर्वग्राही युद्ध' (टोटैलिटेरियन वार) नामकी लिखी है। इस पुस्तक का सारांश इन शब्दों मे दिया जा सकता है:—

"युद्ध को साधन समझना ठीक नहीं वह खुद ही एक उद्देश्य है, देश के बडप्पन को प्रकट करने के लिये

सबसे भारी काम है। उसको केवल एक उपाय ही नहीं समझना चाहिये वरन वह जाति की रक्षा के लिये मनुष्य का स्वाभाविक कर्त्तव्य है। जब कोई जाति इस सिद्धान्त को पूरी तरह से समझ कर दूसरी जाति के खिलाफ लड़ाई छेड़ती है, तो उसका कभी अन्त नहीं होता। वह जीने और मरने का संग्राम होता है। ऐसी लड़ाई का दायरा सिर्फ फौजों तक ही नहीं रहता बल्कि तमाम मुल्क और उसमें रहने वाले तमाम छोटे-बड़े आदमी उस घेरे के भीतर आ जाते हैं। यह लड़ाई दुश्मन के शरीर के खिलाफ ही नहीं बल्कि उसकी आत्मा के खिलाफ भी होती है। इस लिये उसमें प्रचार कार्य का भी वैसा ही महत्व समझना चाहिये जैसा कि जहरीली गैस की। देश भर की तमाम कोशिशे लड़ाई की निगाह से ही होनी चाहियें। देश की तमाम सामग्री और लोगों की शारीरिक और मानसिक शक्तियों का उपयोग एक मात्र उसी के लिये होना चाहिये। दर-असल किसी भी जाति के लिये लड़ाई ही जीवन की सब से बड़ी सच्चाई है। इस लिये शान्ति के समय भी हम जो कुछ काम करते हैं उसका उद्देश्य इस सच्चाई अर्थात लड़ाई के लिये तैयार होना ही समझना चाहिये। युद्ध को नीति का सहायक समझना भूल है, असल में नीति ही युद्ध की सहायक और एक साधन मात्र है।"

हमारे देश में भी ऐसे ख्यालात के लोगों की कमी नहीं

है। किसा ऐसे ही सज्जन ने कुछ दिनो पहले 'लीडर' मे एक पत्र प्रकाशित कराया था जिसमे उन्होंने जर्मनी के डिक्टेटर के कार्यों का समर्थन करते हुये लिखा था—

"मौजूदा उलझन की हालत में एक बात और भी ध्यान देने की है। अब सब मुल्को मे हथियार बनाने की होड होने लगेगी। इससे साइस और कारीगरी की तो तरक्की होगी ही हर एक देश मे लाखों बेकार लोगो को रोजगार मिल जायेगा। अगली लडाई की तैयारी शुरू होने से हर एक कारबार जोरो से चलने लगेगा। पिछले महायुद्ध ने इस बात को ऐसी अच्छी तरह साबित कर दिया है कि अब उसके लिये ज्यादा दलीलें पेश करना बेकार है। इससे दुनिया की माली हालत बहुत सुधर जायेगी। सभ्यता के इतिहास मे ससार कभी इतना सम्पन्न न था जितना कि सन् १९१४ के आरम्भ मे था। मै तो उस आनन्द के जमाने को फिर से देखने की इच्छा रखता हू।"

——.०'०——

जापान की खतरनाक स्कीम

आजकल अखबारों में जिस मुल्क की फौजी तैयारियों की सबसे ज्यादा चर्चा है वह जापान ही है। जो जापान आज से ५० साल पहले एशिया का एक बहुत ही मामूली मुल्क समझा जाता था आज उसकी ताकत इतनी बढ गई है कि दुनिया का कोई भी मुल्क अकेला उसका मुकाबला करने की हिम्मत नहीं रखता। उसने दुनिया भर के मुल्कों के विरोध की परवाह न करके मंचूरिया पर कब्जा कर लिया और आज सरक्षक के रूप मे उसका मालिक बन बैठा है। मंचूरिया के ही सबब से उसका रूस से झगडा हो गया है। पर इसका उसे कुछ भी ख्याल नहीं। चीन मे धाँधली मचाने मे इङ्गलैण्ड और अमरीका उससे नाराज हो गये हैं पर तो भी वह अपनी ही बात पर अडा है। वह अपनी फौज और लडाई के सामान को बराबर बढाता जाता है, अगर्चे इसके सबब से उसका खजाना खाली हो गया है और बहुत सा कर्ज भी लेना पडा है। उसकी सालाना आम-

दनी १३॥ करोड पौंड है जब कि ख़र्च २२॥ करोड तक पहुच चुका है। इसलिये कई साल से उसे ९ करोड पौंड सालाना कर्ज लेकर काम चलाना पडता है। अब यह कर्ज ६० करोड पौंड से ऊपर हो गया है। जापान की माली हालत इतनी ख़राब हो जाने का सबब फौज का बढा हुआ ख़र्च और चीन से लडाई छेडना ही है।

आजकल जापान अपनी फौज के लिये हर साल ८२ करोड येन अथवा अपने तमाम बजट का ३६ फी सैकडा जाहिर मे ख़र्च करता है। इसके सिवा वह बहुत सा फौजी ख़र्च दूसरी मदों मे भी दिखलाता है।

आबादी को सवाल

जापान किस लिये दुनिया भर का विरोध करने को तैयार हो गया है इसके लिये हमको उसकी आबादी पर निगाह डालना चाहिये। इसमे जरा भी शक नही कि वह दुनिया मे एक सबसे घनी बस्ती वाला मुल्क है। अगर वहा की खेती के लायक जमीन का हिसाब लगाया जाय तो मालूम होता है कि एक वर्गमील मे २७७४ आदमी बसते है। दुनिया का कोई मुल्क इससे ज्यादा घना बसा नही है। जापान के बाद हालैण्ड का नम्बर है पर वहा एक वर्गमील मे सिर्फ

१००० आदमी रहते हैं। इटली में ८१९, जर्मनी मे ८०६ और अमरीका में सिर्फ २०३ आदमी प्रति वर्ग मील बसते हैं।

जापान की आबादी हर साल ७॥ लाख के हिसाब से बढ रही है। पिछले १२ बरसों में वहाँ ८० लाख आदमी बढ गये हैं। पिछले पचास वर्षों मे जापान की आबादी ३॥ करोड से बढ कर सात करोड हो गई है। ऐसी हालत मे साफ जाहिर है कि या तो अपनी बढती हुई आबादी के लिये जापान को कोई नया मुल्क ढूँढना पड़ेगा या उसको किसी दूसरे तरीके से नष्ट होना पडेगा।

एशियाई सल्तनत का स्वप्न

पर यह समझना बड़ी भूल होगी कि जापान मचूरिया को लेकर ही राजी हो जायगा। उसकी महत्वाकांक्षा बहुत बढी हुई है और वह तमाम एशिया में अपना सिक्का जमाने का सपना देख रहा है। आजकल वहा फौज वालों का बोल-बाला है जिनका उद्देश्य इटली के फैसिस्ट या जर्मनी के नाजी दल से मिलता है। इस दल का मुखिया जनरल अराकी है, जिसने कुछ दिन हुए अपने पद से स्तीफा दे दिया था। पर उसका असर अब भी ज्यों का त्यों है और सरकारी नीति पर हमेशा उसका बडा प्रभाव पडा करता है। वह अपनी

नीति के सम्बन्ध मे यहा तक कट्टर है कि जो सरकारी अधिकारी उसके मुताबिक चलने को राजी नहीं होते वे उसके दल के गुप्त घातको के हाथों मारे जाते है। हाल मे जापान में जो भयकर फौजी बलवा हुआ था उससे यह बात बहुत अच्छी तरह साबित हो गई है कि जापान की सेना का एक बडा हिस्सा जनरल अराकी की नीति को ही आदर्श मानता है। यह नीति तमाम दुनिया और खास कर एशिया के लिये कैसी खतरनाक है इसका अन्दाज इङ्गलैण्ड के 'डेली हेरल्ड' अखबार मे प्रकाशित इस लेख से लग सकता है —

"जनरल अराकी की नीति 'कोटा' (राजमार्ग) कहलाती है। इसका मतलब है अपने अपने देश मे दमन करना और विदेशो मे हमला करना। जनरल अराकी ने इस बात पर जोर दिया था कि जापान की जहाजी सेना को तमाम सुलहनामों की शर्तो से छूट जाना चाहिये। इसी ने जापान के 'लीग आफ नेशंस' से अलग होने का निश्चय किया था। वह सेना के लिये बराबर ज्यादा खर्च करने पर जोर देता रहता है यद्यपि सरकारी खजाने का दिवाला निकल रहा है। उसका कहना है कि माली हालत की फिक्र करना फिजूल है। वह सिर्फ मचूरिया और जेहोल पर जापान का कब्जा हो जाने से संतुष्ट नहीं है बल्कि वह तमाम एशिया में जापानी सल्तनत कायम करने का सपना देखता है। वह कहता है कि गोरे लोगो ने एशिया के पूर्वी देशों को दबा

अलग-अलग दलों को मिलाकर एक पार्टी बना दे। इसके बिना देश के राजनीतिक जीवन और सस्कृति को फिर से सगठित करने का विशाल कार्य पूरा नही हो सकता।"

जापान मे एक ऐसी गुप्त-सभा भी बहुत समय से कायम है जिसके मेम्बर जापानी सल्तनत को फैलाने के लिए हमेशा मरने मारने को तैयार रहते हैं। ये लोग अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिये इतने कट्टर और अन्धविश्वासी होते हैं कि दूसरे देशों को बदनाम करने की गरज से अपने ही मित्रों को मार डालते हैं। कहा जाता है कि चीन पर इल्जाम लगाने के लिये ऐसी ही कार्रवाई की गई थी। जापान मे कई बार जो उदार विचारों के राजनीतिक अधिकारियो की हत्या की गई थी वह भी इन्ही लोगों का काम बतलाया जाता है। अपनी जान सहज ही मे अपने हाथो दे देना तो सभी जापानी जानते हैं पर इस सभा के मेम्बर तो इस निगाह से बडे ही भयकर होते हैं और इसलिये उनसे दुनिया के सभी मुल्क डरते हैं।

अपने मतलब को पूरा करने के लिये जापान ने एक एशियाई राष्ट्र-सघ बनाने का ढोंग रचा है। इस सघ का पहला जलसा कुछ समय पहले मचूरिया मे हुआ था। कहा जाता है कि उसमे चालीस मुल्को के प्रतिनिधि इकट्ठे हुए थे। उन लोगों ने एशिया को गोरे लोगों की लूट और जुल्मों से छुडाने का प्रस्ताव पास किया। पर सवाल यह है कि

अगर जापान की नीति ऐसी ही स्वार्थपूर्ण बनी रहेगी और गोरे लोगों के बदले मे वह एशिया को लूटने लगेगा तो इससे एशिया वालों का क्या फायदा होगा ?

सल्तनत को फैलाने की कोशिश

जैसा हम बतला चुके हैं अपनी इस साम्राज्यवादी नीति के सबब से जापान ने करीब-करीब सभी बडे-बडे मुल्कों से दुश्मनी पैदा करली है। रूस के साथ तो उसकी इतनी तनातनी हो गई है कि किसी भी समय उन दोनों मे छिड़ सकती है। अभी तक तो ये दोनों पूर्वीय मचूरिया रेलवे को लेकर झगडा करते थे। अब उसका झगड़ा खत्म हो गया है तो मगोलिया का सवाल उठाया गया है। पर दरअसल ये झगड़े के ऊपरी कारण हैं। असली बात यह है कि अपना राज्य बढाने के लिये जापान को रूस और चीन के सिवा दूसरा कोई मुकाम नजर नहीं आता। एक तरफ तो जापान में इतने आदमी भरे हैं कि उनको साँस लेना मुश्किल हो रहा है और दूसरी तरफ़ सामने ही चीन और रूस में सैकडों मील लम्बी चौडी जमीनें खाली पडी हैं। इन दोनों मुल्कों के पास ऐसे साधन नहीं कि जल्दी उनको बसा सके और उनकी तरक्की कर सके। यह देख कर जापान के मुँह मे पानी भर आता है कि क्यों न यह जमीने मुझे मिल जायँ और मै इनको थोडे ही वक्त मे अपनी होशयारी और मेहनत से स्वर्ग का बगीचा

बना दूँ। इसमे शक नहीं कि जापानी लोग इस वक्त परिश्रम, बुद्धिमानी, ज्ञान और वैज्ञानिक साधनों मे बहुत बढे-चढे हैं। पिछले पच्चीस साल मे उन्होंने मचूरिया के उजाड मुल्क को जैसा हरा-भरा बना दिया है और वहाँ के व्यापार और उद्योग-धन्धो की जैसी तरक्की की है वह उन्ही का काम है। जहाँ पहले जगली जानवरों की मांदे और डाकुओं की खोहे बनी थी वहाँ अब लाखो आदमियों से भरे शहर, बिजली की रोशनी, चौडी सडके, बड़े-बड़े पार्क, थियेटर, सिनेमा, मोटरें आदि दिखलाई पडते हैं।

पर जापानी बहुत होशियार और उन्नतिशील हैं इस लिये कोई उन्हे अपना घर तो नहीं सौंप सकता। वैसे जापानी लोग चाहे तो किसी जगह जाकर बसे और दूसरे लोगों की तरह रोजी पैदा करते हुये वहाँ की तरक्की करे तो इसमे कोई बुराई की बात नहीं। पर जापान को तो इस वक्त अपनी ताकत का घमण्ड है कि वह जहाँ रहेगा मालिक बन कर रहेगा। इस बारे मे एक योरोपियन लेखक का कहना है —

"जापान से जो लोग दूसरे मुल्कों मे बसने जाते हैं उनसे इस बात की उम्मेद की जाती है कि वे तमाम चीजे अपनी मातृभूमि से ही मँगायेगे। इस तरकीब से जापानी लोग जहाँ कहीं जाकर बसते हैं वहीं जापानी व्यापार की

जड जम जाती है। सच तो यह है कि परदेश जाकर बसने वाले जापानियों से निजी तौर पर यह शर्त भी कराली जाती है कि वे जापानी व्यापार के हित का हमेशा ख्याल रखेंगे। इतना ही नहीं जहाँ कहीं जापानी लोग खेती-वारी अथवा मजदूरी के लिये भी जाते हैं उनके साथ ही जापानी व्यापारियों का एक दल भी पहुंचता है और अपने स्वजातियों की मदद से वहाँ के बाजार पर कब्जा करने की कोशिश करता है।" इस तरकीव से जापान हवाई टापू को जो अमरीका के कब्जे में है एक निगाह से अपना उपनिवेश बना चुका है और फिलीपाइन में भी ऐसी ही कोशिश कर रहा है।

जापान पैसफिक महासागर में अपना प्रभाव बराबर बढा रहा है और इस सबब से अमरीका के साथ उसकी खटक रही है। क्योंकि अमेरिका से चीन का रास्ता पैसफिक महासागर मे होकर ही है और चीन मे अमेरिका का बना माल बहुत बिकता है। पैसफिक सागर मे जापान का जोर बढ़ जाने मे अमरीका के व्यापार को बड़ी हानि पहुंचने का डर है। इसके सिवा पैसफिक सागर के कितने ही टापुओं पर भी अमरीका का कब्जा है और जापान की ललचाई हुई निगाह इन पर लगी रहती है। इनमें से फिलीपाइन द्वीप समूह तो करीब-करीब जापान के बराबर ही है। अगर उस पर जापान का कब्जा हो जाय तो वह बडा फायदा उठा सकता है।

इंगलैण्ड से मनमुटाव

रूस और अमरीका से तो जापान की तनातनी बहुत दिनों से चली आती है और कई बार झगडे की नौबत भी आ चुकी है। पर ताज्जुब की बात यह है कि अब वह इङ्गलैण्ड को भी अपना विरोधी समझने लगा है। सच पूछा जाय तो जापान को आगे बढाने वाला और सहायता देने वाला इङ्गलैण्ड ही है। अगर उसने जापान को अपनी सल्तनत मे व्यापार करने का सुभीता न दिया होता और राजनीतिक झगड़ों मे वह हमेशा उसकी तरफदारी न करता तो जापान शायद ही इस बडे दर्जे को पा सकता। पर अब जापान का व्यापार इतना बढ गया है कि इङ्गलैण्ड से खुदबखुद उसका मुकाबला हो जाता है। उसने तरह-तरह के उचित और अनुचित उपायों से अपने माल को इतना सस्ता कर दिया है कि हिन्दुस्तान और दूसरे उपनिवेशों की तो क्या बात खुद इङ्गलैण्ड मे जापानी माल बेहद सस्ता बिक रहा है और अङ्गरेज व्यापारियों के छक्के छुडा रहा है। हालत कहाँ तक गम्भीर हो गई है इसका पता लंकाशायर के एक मशहूर फर्म के मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर के इस बयान से लग सकता है :—

"जापान ने हमारी सल्तनत के बाजारो पर ही कब्जा करने की कोशिश नहीं की है बल्कि ख़ुद इङ्गलैण्ड के बाजार

में हमारी बोलती बन्द करदी है। अङ्गरेज दुकानदार जापानी माल को खरीदना और बेचना हर्गिज नहीं चाहते पर जापानी चीजों का दाम इतना सस्ता कर दिया गया है कि हमको झक मारकर उन्हे लेना पडता है। उदाहरण के लिये इङ्गलैण्ड के बने रबर के खिलौने जहाँ १२ शिलिङ्ग दर्जन के हिसाब बिकते है जापानी २ शिलिङ्ग मे ही एक दर्जन मिल जाते है। तैरनेवाले बडे खिलौने अगरेजी १२६ शिलिग दर्जन और जापानी ३६ शिलिग दर्जन बिकते है। नहाने की रबर की टोपियाँ इङ्गलैण्ड की बनी १०६ शिलिग दर्जन के हिसाब से बिकती हैं, पर जापान उनको ६ शिलिग दर्जन के हिसाब से ही भेजता है। जापानियों ने अफ्रीका और भारतवर्ष मे २० रू० में बाइसकिल बेचना आरम्भ किया है। यह बाइसकिल इङ्गलैण्ड की बनी एक मशहूर बाइसकिल की तरह दिखलाई पडती है। अंगरेजी बाइसकिल जापानी से लगभग दुगने दामों मे बेची जाती है। जापान हागकाग मे जो लोहे की चद्दरें भेज रहा है उनका दाम अङ्गरेजी चद्दरों से एक चौथाई कम है। अगर अङ्गरेजी कम्पनियों को खास तौर पर मदद नहीं दी जायगी तो उनका बाजार मे टिक सकना नामुमकिन है।"

दूसरे मुल्कों के खिलाफ प्रचार

इस तरह दुनिया के तमाम मुल्कों से झगडा खडा

करके जापान के राजनीतिज्ञ किन तरकीबों मे अपने देश वालों को उनके खिलाफ भडका रहे हैं यह ध्यान देने लायक बात है। हाल ही मे हवाई टापू के अमरीकन अफसरों ने चिचबूमारू नाम के जापानी जहाज मे ७७ बक्स बरामद किये थे जिनमे एक पैम्फलेट की हजारों कापियाँ भरी थीं। इसका हैडिङ्ग 'जापान और अमरीका के बीच होने वाले युद्ध का स्वप्न' था। इसका लेखक जापानी समुद्री सेना का एक पेशनयाफ्ता लेफ्टिनेएट कमाएडर था और इसकी भूमिका जापान की सुप्रीम वार कौंसिल के सदस्य एडमिरल कोटो ने लिखी थी। इसे हवाई टापू मे रहनेवाले जापानियों में बाँटने के लिये भेजा गया था। इसमे किस्से के रूप में बतलाया गया था कि किस प्रकार एक जापानी अफसर ने अमरीका के एक लडाई के जहाज को बिना किसी तरह के झगडे के टारपेडो मार कर डुबा दिया। इसके बाद दोनों मुल्कों मे लड़ाई छिड गई और जापान ने हवाई टापू पर कब्जा कर लिया। इस पैम्फलेट के बारे मे जापानी अधिकारियों से पूछताछ करने पर जवाब मिला कि इसका लेखक सरकारी नौकरी से अलग हो गया है और इस लिये इसकी जिम्मेवारी सरकार पर नहीं है।

इसी तरह के मनमाने इलजाम इङ्गलैएड पर भी लगाये जा रहे हैं और कोशिश की जा रही है कि जापान के लोग उसे अपना दुश्मन समझने लगे। पिछले एक-दो वर्षों में

इस तरह की कई मिसालें मिल चुकी हैं। 'मैनचेस्टर गार्जियन' के सम्वाददाता ने एक जापानी प्रोफेसर डा० सोसन गोरट के भाषण का एक हिस्सा छपने को भेजा था। इसमें यहाँ तक कहा गया था कि "जापान का असली दुश्मन चीन या अमरीका नहीं है बल्कि इङ्गलैण्ड है।" आगे चल कर प्रोफेसर साहब ने रूस-जापान युद्ध, पिछले योरोपीय महायुद्ध और भावी महासमर का असली सूत्रधार इङ्गलैंड को बतलाया था।

इसी प्रकार लैफ्टिनेएट कमान्डर टोटानिशी मारू ने कुछ समय हुआ 'निची ई हिसेन न रोन' (इङ्गलैण्ड-और जापान की लड़ाई के निश्चय पर) नाम की किताब लिखी थी। इसमें जापान और इङ्गलैण्ड की व्यापारिक प्रतिस्पर्धा का उल्टा सीधा मतलब निकाल कर जापानियों को भडकाया गया था। इस पुस्तक ने जापान में ऐसी सनसनी पैदा की कि थोडे ही दिनों में उसके ४० संस्करण बिक गये। ज्यादा न लिख कर उस किताब के कुछ अध्यायों के शीर्षक भर देना काफी है जिससे लेखक महाशय के ख्यालात का पता लग जायगा—

१- कल के मित्र और आज के दुश्मन, २- जापान पर इङ्गलैण्ड का दबाव, ३ – क्या जापान इङ्गलैण्ड से लडेगा? ४- अङ्गरेजी जहाजी ताकत का जनाजा, ५-- मेडीटेरि-

यन या पैसफिक, ६ -- सिंगापुर का जहाजी अड्डा और उसका उद्देश्य, ७ – इङ्गलैण्ड की कमजोरियाँ. ८ – इङ्गलैण्ड से डरने की जरूरत नहीं।

यह कहने की जरूरत नहीं कि इस प्रकार की बातें चाहे किसी सनकी आदमी की कलम से ही क्यों न निकली हो, उनसे दुनिया में अशान्ति फैलने का डर है। इङ्गलैण्ड के राजनीतिज्ञों के लिये यह तारीफ़ की बात है कि उन्होंने अभी तक इस तरह की गैर जिम्मेदारी की बातें नहीं लिखी हैं और इस तरह के जापानी लेखकों की बातों को उपेक्षा की निगाह से ही देखा है। पर सोचने की बात है कि इनके सबब से जापानी लोगों में कैसी गलतफहमी पैदा होती होगी ? अगर ऐसी गलतफहमी का नतीजा अखीर में भयंकर निकले तो क्या ताज्जुब है ? यह बात भी विचारणीय है कि जापानी सरकार ने भी अभी तक इन बेसिरपैर की तथा द्वेष पैदा करने वाली बातों को रोकने की कोई कोशिश नहीं की है।

पर इन तमाम तैयारियों के होते हुये भी कई बातें ऐसी है जिनसे जापान का कामयाब हो सकना मुशकिल जान पडता है। जैसा हम ऊपर बतला चुके हैं उसकी कमजोरी का सबसे बडा कारण तो यह है कि उसने दुनिया भर को अपना दुश्मन बना लिया है। जो इङ्गलैन्ड उसका सबसे

बड़ा सहायक था वह भी उसकी हरकतों से नाखुश है। सन् १९१४ में जर्मनी की जो हालत थी उससे भी खराब हालत इस वक्त जापान की है। दुनिया मे कोई उसका दोस्त नहीं है। सिर्फ जर्मनी ने उससे सहानुभूति बतलाई है और यह भी सन्देह किया जाता है कि उन दोनो मे कोई गुप्त-संधि हो गई है। पर इससे जापान का क्या लाभ हो सकता है यह समझना मुशकिल है। जर्मनी जापान से हजारो मील की दूरी पर है जहाँ से वह जापान की कुछ भी मदद नहीं कर सकता। सिर्फ इतना ही कहा जा सकता है कि वह जापान का पक्ष लेकर रूस को धमकी दे सकता है। दूसरी बात यह है कि फौजी तैयारी और चीन की लडाई में पिछले बरसों मे जापान ने इतना धन खर्च कर डाला है कि उसके पास कुछ भी नहीं है और सर पर बेहद कर्ज लदा है। ऐसी हालत मे लड़ाई के लिये वह अरबो रुपया कहाँ पायेगा। तीसरी बात यह है कि पच्चीस तीस साल पहले जापान के लोग जिस प्रकार राजा को ईश्वर समझ कर उसमें अंधश्रद्धा रखते थे उस मनोभाव मे अन्तर पड गया है। इस समय दुनिया के दूसरे मुल्कों की तरह वहाँ भी मजदूर-किसान और दूसरे गरीब लोग शासन कर्ताओं से असंतुष्ट हैं। वहाँ के सैनिक, जो ज्यादातर पुराने जमाने के सामुराई (क्षत्रिय) हैं आज कल के पूंजीपतियों को नीची निगाह से देखते हैं। इन

तमाम बातों से जापान की भीतरी दशा भी उतनी मजबूत नहीं रह गई है जैसा कि कुछ बाहरी लोग समझते हैं और अगर लालच में पड़ कर उसने लड़ाई की आग को भड़काया तो उसका नतीजा उसके लिये भी बहुत अच्छा न होगा।

— —

रूस भी डटा है

इस जापानी खतरे की तरफ से रूस बेखबर नहीं है। यह बडी तेजी से अपनी फौज और हवाई जहाजों को बढा रहा है और सब तरह का लडाई का सामान इकट्ठा कर रहा है। उसने रूस और मंचूरिया की सरहद पर एक मजबूत फौज भेज दी है और आस पास के तमाम शहरों और बन्दरगाहों के बचाव का पूरा-पूरा इन्तजाम कर रखा है।

पर जब हम रूस सरकार की नई पालिसी पर ध्यान देते हैं तो उसका महत्व इन फौजी तैयारियों की बनिस्बत बहुत ज्यादा जान पडता है। जहाँ आज से पाँच-सात साल पहले योरोप और अमरीका के सभी छोटे-बडे देश रूस के दुश्मन बने हुए थे और एक तरह से उससे नफरत करते थे, आज उसने ज्यादातर मुल्कों को अपना दोस्त बना लिया है।

रूस के साथ इन मुल्कों के दोस्ती करने का एक सबब तो यह है कि वहाँ पर दूसरे देशो का बना माल बिक

सकने की बहुत गुञ्जायश है, और अपने माल की बिक्री बढाने को ही आजकल सब देश मरे कटे जाते हैं। दूसरी बात यह कि अगली लडाई के डर से अब बडे-बडे मुल्क नये गुट्ट बनाने की कोशिश कर रहे हैं। जापान इस समय रूस और अमरीका दोनों का विरोध कर रहा है, इसलिये इन दोनों में मेल हो जाना तो स्वाभाविक ही है। इधर इङ्गलैण्ड भी इस वक्त योरोप की दल बन्दियों से निकल कर अकेला सा रह गया है। उसने भी इस बढते हुये ताकतवर मुल्क से नाता जोडना फायदेमन्द समझा है। इन बातों से लोग ख्याल करने लगे हैं कि अगली लडाई में इङ्गलैण्ड और अमरीका रूस का साथ देंगे। अगर्चे आज तक की घटनाओं को देखते हुए यह बिल्कुल अनहोनी बात जान पडती है पर कूट राजनीति जो न करादे थोडा है।

रूस और फ्रांस की मित्रता तो इस समय राजनीतिक क्षेत्र की खास बात हो रही है। इसको लेकर जर्मनी ने संसार भर में हलचल मचा दी है। जर्मनी का डिक्टेटर हिटलर रूस को बहुत ही नफरत की निगाह से देखता है और अपना जानी दुश्मन मानता है। उसने साफ लफ्ज़ों में कह दिया है कि हम संसार के सब देशों से समझौता करने को तैयार हैं पर रूस से नहीं। जर्मनी के इस खतरे ने ही फ्रांस और रूस को एक दूसरे का पक्का दोस्त बना दिया है। उन दोनों में हाल ही में यह संधि हो चुकी है कि अगर कोई मुल्क उन पर हमला करेगा

तो वे एक दूसरे की महायता करेंगे। समय आने पर ही लोग जान सकेंगे कि इस सधि के भीतर कैसे-कैसे भेद है।

रूस की फौजी तैयारियाँ

जापान से लोहा लेने को रूस अपने देश के भीतर भी बडी-बडी तैयारियाँ कर रहा है। इस वक्त वहां दस लाख सेना तैयार है और एक करोड़ लोगों को फौजी तालीम देकर रिजर्व सेना में रखा गया है। वहाँ 'ओसो विपखिम' नाम की एक सस्था है जिसके मेम्बरों की तादाद एक करोड दस लाख है। इसका उद्देश्य हवाई जहाज़ और जहरीली गैस के हमले से मुल्क की रक्षा करना है। उसके तमाम मेम्बरों को निशाना लगाने, मशीनगन चलाने और फौजी दावपेचों की शिक्षा दी जाती है। रूस मे वैसे भी फौजी तालीम अनिवार्य (लाजिमी) है। हर एक कारखाने और खेती के फार्म को अपने यहाँ निजी तौर पर फौजी कवायद का इन्तजाम करना पडता है। गाँवों मे रहने वाले सभी नौजवानों को जाडे के मौसम मे १५ दिन तक कवायद परेड करनी पडती है। हर एक गाँव मे एक फौजी अफसर और एक फौजी तालीम देने वाला मास्टर स्थायी रूप से रख दिये गये हैं।

रूस मे हवाई जहाजों और हवाई सेना की बहुत तरक्की की गई है। वहाँ हवाई जहाज बनाने वाले पच्चीस, तीस

बडे-बडे कारखाने तैयार किये गये हैं जो पिछले कितने ही सालों से जोरों से काम कर रहे है। रूस की हवाई ताकत दूसरे मुल्कों के मुकाबिले मे कैसी है इसका जिक्र करते हुये फौजी मामलो के जानकार कप्तान लिडिल हार्ट ने अभी एक अखबार मे लिखा था :—

"इस वक्त रूस की हवाई सेना निस्सन्देह योरोप में सब से बडी है। उसके अगले दल मे कम से कम २५०० या ३००० तक हवाई जहाज है।* इनमें कम से कम ४०० बडे आकार के बम बरसाने वाले जहाज हैं। रूस की लम्बाई चौडाई को देखते हुये ऐसे बडे और ज्यादा दूर तक जा सकने वाले जहाजों का होना जरूरी भी है। उसने ऐसे भी बहुत से जहाज बनाये हैं जो सेना के साथ रह कर दुश्मन पर ऊपर से निशाने बाजी करते रहेंगे। रूस के ज्यादातर जहाज नये ढङ्ग के हैं और उसने जहाजों के स्टेशनो का भी बहुत बढिया इन्तजाम किया है। इस इन्तजाम के बिना हवाई सेना का उपयोग कर सकना कठिन होता है। कहा जाता है कि रूस की इस हवाई सेना और उसकी बढी हुई ताकत को देख कर ही हिटलर ने जर्मनी की हवाई सेना को बढ़ाने का निश्चय किया है।"

---

*इसी लेखक के मतानुसार जर्मनी के हवाई जहाजों के अगले दल (First Line) की सख्या १०००, इङ्गलैन्ड की ७००, फ्रांस की १६०० और इटली की १००० है।

रूस ने जो वडे जहाज़ वनाये हैं उनमे से कुछ तो इतने भारी हैं कि उनमे ५ टन (१४० मन) वोझा लाद कर ले जाया जा सकता है। इन जहाजों को खास कर इस लिये वनाया गया है कि जापान के साथ लड़ाई छिडने पर इनके जरिये जल्दी से लडाई का जरूरी सामान भेजा जा सके। रूसी हवाई सेना की एक ख़ास वात यह भी है कि उसके उडाके अपने पास पैराच्यूट नहीं रख सकते। पैराच्यूट उस हवाई छतरी को कहते हैं जिसकी मदद से हवाई जहाज के उडाके आसमान से जमीन पर कूदते हैं। इसका एक सवव तो यह वतलाया जाता है कि पैराच्यूट पास रहने से जहाज चलाने वाले थोडा सा भी खतरा पैदा होते ही जहाज को छोड कर कूद पडते हैं। दूसरी वात यह कही जाती है कि रूस के अधिकारी ऐसा हवाई वेड़ा तैयार करना चाहते हैं जिसके सैनिक मरने से जरा भी न डरते हों।

नया समुद्री रास्ता

योरोपियन रूस से एशियाई रूस के वन्दरगाहों और जापान तक पहुँचने के लिये रूस ने एक नया समुद्री रास्ता भी खोज निकाला है। अभी तक रूस के जहाजों को अपने एशियाई वन्दरगाहों तक पहुचने का रास्ता हिन्द महासागर मे होकर ही था। यह रास्ता कई हजार मील लम्बा है और इसमे जापान का राज्य रास्ते मे ही पडता है। इस लिये अव

वह अपनी उत्तरी सीमा से लगे आर्कटिक समुद्र द्वारा, जिसे संसार की छत कहा जाता है, अपने मुख्य एशियाई बन्दरगाह व्लाडीवोस्टक तक पहुँचने की कोशिश कर रहा है। यह समुद्र उत्तरी ध्रुव के पास ही है और गर्मियों के कुछ दिनों को छोड कर अक्सर जमा ही रहता है। इसका पूरा नक्शा तैयार करने और आने जाने का सुविधाजनक रास्ता ढूढ़ने के लिये रूस के कितने ही विशेषज्ञ पिछले दो-तीन वरसों से कोशिश कर रहे हैं। अब प्रोफेसर स्मिट नाम के अन्वेषक इस समुद्र के रास्ते व्लाडीवोस्टक तक पहुँच गये हैं। उन्होंने बतलाया है कि अगर मुसाफिरों के जहाजों के आगे एक बर्फ तोडने वाला जहाज रास्ता साफ करता चले तो इस रास्ते से सफर कर सकना नामुमकिन नहीं है। इस समुद्र के रास्ते से अमरीका और रूस का फासला भी थोडा ही रह जाता है। इसलिये ऐसा इन्तजाम किया जा रहा है कि जब कभी जापान से लडाई छिडे तो रूसी फौज के लिये खाने पीने और लडाई का सामान इसी समुद्र में होकर अमरीका से लाया जाय। इसके लिये रूस ने ऐसे बहुत से हवाई जहाज बनाये हैं जिनमे बर्फ पर दौड़ने के लिये खास तरह के पहिये लगे हैं। जाडे मे जब समुद्र जम जायगा तो ये जहाज बर्फ पर दोडते हुये अमरीका से रूस पहुँच जायँगे। गर्मियो मे पानी के जहाजो के जरिये आना जाना होगा और जापानियो के हमले से उनकी हिफाजत रूस की गोताखोर नावे करेंगी।

इसके लिये रूस ने वहुत सी गोताखोर नावे रेल के जरिये साइवेरिया भेज भी दी हैं।

रूस की शान्तिपूर्ण नीति

पर इन वातों से यह समझ लेना ठीक नहीं है कि रूस लडाई के लिये उतावला हो रहा है या उसे लडने का शौक है। रूस की मौजूदा सरकार की नीति वरावर दुनिया मे शान्ति वनाये रखने की रही है। नि शस्त्रीकरण कान्फरेंस मे उसने हमेशा इस वात पर जोर दिया है कि सव मुल्क अपने हथियारों और लडाई के दूसरे सामान को एक दम नष्ट करदे। पर लडाई के मतवाले लोग ऐसी वातों पर कव ध्यान ध्यान देने लगे। इस लिये अव रूस जो कुछ फौजी तैयारी कर रहा है उसका मतलव अपनी हिफाजत करना ही समझना चाहिये। रूस अव भी भरसक लडाई से वचने की कोशिश कर रहा है और जापान की कितनी ही ज्यादतियो को तरह दे जाता है। पर अगर जापान ने लडाई छेडने की ठान ही ली तो उसे भी मैदान मे उतरना पडेगा। उस हालत मे आखिरी नतीजा क्या होगा यह कह सकना कठिन है। क्योंकि अगर्चे जापान लडाई के मामले मे वहुत होशियार है और वहाँ के लोगों मे वहादुरी और जाँनिसारी का भाव कूट-कूट कर भरा है पर रूस भी अव पुराना जार-शाही जमाने का मामूली मुल्क नहीं रह गया है। उनका

संगठन भी संसार भर में अपने ढंग का निराला है और उसकी ताकत भी बहुत बढ़ी-चढ़ी है। रूस के डिक्टेटर ने साफ लफ्ज़ों में कह दिया है कि "यद्यपि हम चारों तरफ दुश्मनों से घिरे हैं पर वे याद रखें कि यदि रूस पर किसी ने हमला किया तो हम उसकी गर्दन तोड़ देंगे।" इसका मतलब यही है कि रूस जानबूझ कर किसी से लड़ना पसन्द नहीं करता और सब तरह से लाचार हो जाने पर ही वह लड़ाई के मैदान में उतरेगा।

——.०°०——

फ्रांस, जर्मनी और इटली

इस वक्त जितने मुल्क लडाई की तैयारी कर रहे हैं उनमे शायद सबसे ज्यादा बढ़ी-चढी और जोरदार तैयारी फ्रास की है। इस के लिये खर्च भी वह बहुत अधिक करता है। पिछली योरोपियन लडाई में मित्र राष्ट्रों की जीत होने से सबसे ज्यादा लाभ भी उसी ने उठाया। लडाई के खत्म होते ही वह अपनी फौज को मजबूत बनाने मे लग गया था। इस काम में उसने जितना रुपया खर्च किया है उसका हिसाब लगाना भी मुशकिल है। इस वक्त उसके पास सबसे ज्यादा हवाई जहाज, तोपे और मशीनगने हैं। उसकी फौज में मोटरों की तादाद भी सबसे ज्यादा है।

तिलस्मी किलेबन्दी

फ्रांस की तैयारियों मे सबसे अद्भुत उसकी वह किलेबन्दी है जो उसने जर्मनी की सीमा के पास की है। क्योंकि जर्मनी को सब तरह से कमजोर और निहत्था पर

भी फ्रांस को हमेशा उसकी तरफ से डर बना रहता है। इस डर को हमेशा के लिये मिटा देने के लिये जितनी दूर तक उसकी सीमा जर्मनी से मिली हुई है उतनी दूरी में उसने ऐसे मजबूत किलों की कतार तैयार की है जिन पर लड कर कब्जा कर सकना किसी तरह मुमकिन नहीं। इन किलों का जो थोडा सा हाल अखबारों में छपा है उसके पढने से ऐसा जान पडता है कि हम किसी तिलस्म का हाल पढ रहे हैं

यह किलों की कतार करीब दो सौ मील तक फैली है और इसमे एक-एक मील से भी कम दूरी पर सिपाहियों के रहने और तोपे चलाने के मुकाम बनाये गये हैं। ये मकान जमीन के ऊपर नहीं बल्कि ६० से १०० गज तक जमीन के नीचे बने हैं। जमीन के ऊपर कहीं-कहीं छोटे चबूतरे ही दिखलाई पडते है। इन चबूतरो मे मशीनगने और तोपे ऐसी हिकमत से छुपा कर रखी गई है कि बाहरी आदमी उनका पता पा ही नही सकता। ये मकान और चबूतरे कक्रीट और लोहे के बहुत ही मजबूत बनाये गये है। एक-एक चबूतरे का बोझ कम से कम ३६ टन है। ऐसे छुपे हुये मुकामों की तादाद करीब ३०० है और हर एक में अपार गोला बारूद और लडाई का दूसरा सामान भरा है।

इस कतार के बीच-बीच मे बडे किले भी बनाये गये हैं जो इतने मजबूत हैं कि दुनिया की कोई भी तोप या बम उनका कुछ नहीं बिगाड सकता। ये किले भी जमीन के अन्दर बने है और उनमे जाने के लिये लिफ्ट (बिजली के खटोले) द्वारा एक बडे गहरे कुँये मे उतरना पडता है। जब उतरने वाला नीचे पहुँचता है तो उसे एक सुन्दर शहर सा बसा दिखलाई पडता है जिसमे बडी-बडी सडके बिजली की रोशनी, होटल सिनेमा आदि सब तरह की आराम की चीजे दिखलाई पडती है। इन किलो मे ऐसा इन्तजाम किया गया है कि लाखो फौज महीनों तक भीतर ही रह कर भारी से भारी दुश्मन का मुकाबला कर सकती है।

ये तमाम किले और चौकियॉ सुरङ्गो के जरिये एक दूसरे से मिले हैं। इन सुरङ्गों मे बिजली की रेल चलती है। इसके जरिये कुछ ही मिन्टो सिपाहियों को जमीन के नीचे ही नीचे दूर-दूर के मुकामों तक पहुँचाया जा सकता है। लडाई करने के लिये भी सिपाहियों को बाहर निकलने की जरूरत न पडेगी। वे जमीन के नीचे से ही बिजली का बटन दबा कर तोपो और मशीनगनों को जिस तरफ चाहे चला सकते हैं। किलो मे ऐसा भी इन्तजाम किया गया है कि अगर दुश्मन किसी तरह भीतर पहुँच जाय तो फिर जिन्दा बाहर नहीं आ सकता। इसके लिये कई

मुकाम ऐसे बनाये गये हैं जहाँ अनजान आदमी धोखे मे आकर बहुत नीचे गिर जाता है। दूसरी तरकीब यह है इन तमाम किलों को १५ मिनट में पानी से भर दिया जा सकता है।

हवाई हमले से बचाव

इस तरह इस किलेबन्दी को करके फ्रांस खुश्की द्वारा जर्मनी के हमले से तो बहुत कुछ निश्चिन्त हो गया है। पर हवाई जहाजों और जहरीली गैस का मुकाबला कैसे किया जाय इसकी फिक्र उसे लगी रहती है। अगर्चे उसके पास हवाई जहाज सबसे ज्यादा हैं, पर हर रोज नई-नई इजादें होते रहने से वे अब पुराने समझे जाने लगे हैं। इस लिये पिछले वर्ष वहाँ की सरकार ने नियमित फौजी बजट के अलावा दो करोड २७ लाख पोन्ड की रकम इस लिये खर्च करने का फैसला किया था कि उससे फ्रांस की हिफाजत के उपायों में जरूरी बदलाव करके उनको बिल्कुल नये ढङ्ग का बना दिया जाय।

फ्रांस ने अपनी प्रजा के लोगों को बचाने का भी बहुत इन्तजाम कर रखा है। वहाँ १८ हजार मुकाम ऐसे बनाये गये है जहाँ लोग जहरीली गैस से बचने को छुप सकते हैं। पुलिस, आग बुझाने वाले, और एम्बुलेंस वालों के

लिये, जिनको हमले के वक्त बाहर निकल कर काम करना पडता है, बहुत बडी तादाद मे गैस से बचाने वाले मास्क और फौलादी टोपियाँ बनाई गई हैं। इनके लिये करोड़ों पौंड खर्च किया जा चुका है।

हवाई हमले को रोकने के लिये यह भी निश्चय किया गया है कि लडाई के जमाने मे बडे-बडे नगरों के चारों तरफ लोहे के जाल लगा दिये जाँय। ये जाल जरूरत के मुताबिक जमीन से आधा मील या एक मील ऊपर गुब्बारों के सहारे अधर लटके रहेंगे। पिछले महायुद्ध के समय भी फ्रांस ने पेरिस की हिफाजत के लिये इस तरकीब से काम लेना चाहा था, पर उस समय गुब्बारे एक जगह ठहर नहीं सकते थे, हवा के चलने मे इधर-उधर चले जाते थे। पर अब ऐसी तरकीब निकाल ली गई है जिससे इन गुब्बारों और उनमे लटके हुये जालों को मनमाने ढङ्ग से चाहे जिस जगह कायम रखा जा सकता है।

फ्रांस की काली फ़ौज

फ्रांस अपनी फौजी ताकत बढाने की कहाँ तक कोशिश कर रहा है इसका अन्दाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि उसने अपने अधीन देशों की काली प्रजा को भी उसी तरह की फौजी तालीम दी है जैसी वह अपने देश के लोगों को देता है। यह बात योरोपियन मुल्कों की पुरानी नीति के

विरुद्ध है पर फ्रास इसकी पर्वाह नही करता। वह हर तरह से अपनी ताकत बढाना चाहता है। उसकी यह फौज वक्त पडने पर बडा काम देती है और पिछले महायुद्ध मे उसके एक लाख काले सिपाही जर्मनी से लडे थे। तब से इनका महत्व उसकी निगाह मे और भी बढ गया है और सन् १९३२ से फ्रांस के आधीन तमाम देशो मे अनिवार्य (लाजिमी) सैनिक शिक्षा जारी कर दी गई है। शान्ति के समय भी ७० हजार काली सेना फ्रांस मे रखी जाती है और उसे खास कर जर्मनी की हद के पास तैनात किया जाता है। इसका मतलब शायद यह है कि लडाई का काम जहाँ तक मुमकिन हो बाहर के लोगों से चलाया जाय और फ्रासीसी नागरिको को आगे के लिये बचाकर रखा जाय।

जर्मनी का जवाब

फ्रास की इन तैयारियो का जवाब जर्मनी किस तरह देगा या दे सकता है यह अभी बता सकना मुशकिल है। क्योंकि वर्सेलीज के सुलहनामे के मुताबिक उसका फौजी संगठन और लडाई का सामान बिल्कुल नष्ट कर दिया गया था। साथ ही उससे यह भी वायदा करा लिया गया था कि वह युद्ध सम्बन्धी कोई आविष्कार भी नही करेगा। ऐसी हालत मे अब से दो साल पहले तक जर्मनी ने जो कुछ तैयारी की थी वह छुपे तौर पर ही की थी। अब इन दो

सालों में नाजी दल की हकूमत कायम हो जाने पर उसने संधि की शर्तें ठुकरा जरूर दिया है और राइनलैण्ड में फौज भेज कर बड़े-बड़े मुल्कों को ललकारा भी है तो भी अभी तक उसकी तैयारी इतनी ज्यादा नहीं समझी जा सकती कि वह इङ्गलैंड आदि का सफलता पूर्वक मुकाबला कर सके। इस लिये वह अब भी अपनी तैयारी अधिकांश में छुपे तौर पर ही कर रहा है जिसका बाहर वालों को बहुत कम पता है। उसके बारे में हम जो कुछ जानते हैं वह सुनी हुई बातों के आधार पर ही है। तो भी जो बातें जाहिर हुई हैं वे मनुष्य को भय और आश्चर्य के समुद्र में डुबा देने वाली हैं।

वैज्ञानिक युद्ध की तैयारी

वर्सेलीज की संधि से लाचार होकर जब जर्मनी ने देखा कि वह तोप, बन्दूक और जहाजों को नहीं बना सकता तो उसने साइन्स की तरकीबों से काम लेने का निश्चय किया। वर्षों तक जर्मनी के बड़े-बड़े वैज्ञानिक लूनेवर्ग की प्रयोगशाला में बैठकर इस समस्या को हल करने की कोशिश करते रहे और शायद अब भी कर रहे हैं। कहा जाता है कि उनको अपने उद्देश्य में काफी सफलता मिली है। उन्होंने बिजली की ताकत से दुश्मनों का मुकाबला करने की तरकीब ढूँढ निकाली है। उन्होंने जो नई ईजादें की हैं उनमें विशेष

महत्व पूर्ण (१) मृत्यु-तरंग (२) मृत्यु-किरण (३) मृत्यु-ध्वनि (४) और तरह अत्यन्त घातक गैस बतलाई जाती हैं। यह भी कहा जाता है कि उसने नकली तौर पर भयंकर बीमारियों के कीडे भी पैदा किये हैं जिनको किसी मुल्क में फेंकने से तुरन्त ही भीषण महामारी फैल सकती है। वहाँ पर लाखों की तादाद में चूहे पाले गये हैं। लड़ाई के समय इनमें प्लेग के कीडे डालकर इनको दुश्मन के मुल्क और सेना में छोड़ दिया जायगा। इस तरह बिना एक भी गोली-गोला चलाये अनगिनती लोगों का संहार किया जा सकेगा। बेलजियम के एक फौजी अफसर का कहना है कि उसने एक दिन अचानक आसमान में एक जर्मन हवाई जहाज देखा जो जमीन से सिर्फ १२० फीट की ऊँचाई पर था और घन्टे में १८० मील की चाल से जा रहा था, पर उसके चलने से किसी तरह की आवाज नहीं सुनाई देती थी। यह बात कहाँ तक सच है यह कहना मुशकिल है, क्योंकि इङ्गलैण्ड के हवाई जहाजों के विशेषज्ञों का कहना है कि ऐसा जहाज बन सकना नामुमकिन है।

यद्यपि कुछ समय पहले तक जर्मनी के हाथ पैर वर्सेलीज सुलहनामे की शर्तों से बँधे थे तो भी इस थोड़ी सी ही मुद्दत में उसने अपनी हवाई सेना की इतनी तरक्की कर ली है कि योरोप के तमाम देश फिर उससे डरने लगे हैं। इस बारे में कप्तान लिडिल हार्ट ने लिखा है —

"जर्मनी की हवाई सेना की तैयारी ऐसे छुपे तौर पर की गई है कि उसके बारे मे लोग बहुत बढा-चढा कर कल्पना करते हैं। पर हमारा जहाँ तक अनुमान है जर्मनी की अगली लाइन के हवाई जहाजों की तादाद ६०० से ज्यादा नहीं है। पर साथ ही जर्मनी ने ऐसे मुसाफिरी के जहाज बनाये है जिनकी चाल बहुत तेज है और उनको सहज ही मे फौजी काम के लिये इस्तेमाल किया जा सकता है। इनमें से जरूरत पडने पर २०० जहाज लडाई के लिये मिल सकते है। वहा पर निजी तौर पर हवाई जहाज की सस्थाये खुली है जिनमे ५००० उडाको को तालीम दी जाती है। इन सस्थाओं से तीन चार सौ जहाज लडाई के लिये और भी मिल सकते हैं। इसके सिवा इन संस्थाओ से फौज के लिये काफी उडाके मिल सकते हैं।

"आज कल सरकारी मदद से यह तैयारी का काम और भी जोरों से हो रहा है और ऐसी कोशिश की जा रही है कि किसी तरह वर्तमान कमी को जल्दी ही पूरा कर लिया जाय। इस प्रोग्राम के मुताबिक जर्मन हवाई सेना की अगली लाइन के हवाई जहाजों की तादाद सन १९३७ के शुरू मे १५०० हो जायगी। इस प्रोग्राम के पूरे होने मे अगर कोई मुशकिल पडेगी तो वह सैनिकों को तालीम देने और उनका मजबूत संगठन करने में ही पडेगी। वहां के कारखाने जहाज

तो इतनी तेजी से बना रहे हैं कि उनको काम मे लाना भी मुशकिल जान पड रहा है।

"जर्मन हवाई सेना की दूसरी विशेषता यह है कि उसमें बम फेकने वाले जहाजों की तादाद बहुत ज्यादा है। उसके करीब आधे जहाज इसी तरह के हैं और एक चौथाई तो इतने वडे हैं कि उनमें एक टन से ज्यादा बोझा लाद कर ४०० मील तक ले जाया जा सकता है और फिर लौट र आया जा सकता है। इन जहाजो की मदद से जर्मनी अपने किसी भी पडोसी मुल्क की राजधानी पर हमला कर सकता है।"

हवाई हमले से अपने नागरिको की रक्षा के लिये दूसरे देशों की भाँति जर्मनी मे भी इन्तजाम किया जा रहा है। इसके लिये सरकार तो कोशिश कर ही रही है, साथ ही वडे व्यवसाइयो और धनवान लोगों को भी इसके लिये उत्साहित किया जा रहा है कि वे अपने नौकरो की रक्षा के लिये तहखाने बनवाये और मास्क खरीद कर रखे। इस सम्बन्ध मे यह घोषणा भी की गई है कि इन कामो मे जो रूपया खर्च किया जायगा उस पर इनकमटैक्स नहीं देना पडेगा।

जर्मनी अपने मुल्क के नौजवानो मे लडने और मरने-मारने का जो भाव भर रहा है उसकी मिसाल भी कहीं और

मिल सकना कठिन है। वैसे तो जर्मनी के लोग पहले ही से फौजी रंग में रंगे थे और कैसर के जमाने में ही वहाँ के सिपाही बहादुरी और अनुशासन (डिसिप्लिन) में अद्वितीय थे, पर जब से जर्मनी में हिटलर-राज कायम हुआ है तब से इस सम्बन्ध में जिन तरकीबों से काम लिया जा रहा है उसका हाल जान कर तमाम योरोप डरने लगा है। इस समय वहाँ तमाम बड़ी उम्र के लड़कों और नौजवानों को साल में कुछ महीने फौजी तालीम हासिल करनी पड़ती है और बारकों में ऐसी सख्त जिन्दगी बितानी पडती है कि फिर वे बड़ी से बड़ी तकलीफ और भय का सामना करते हुये भी नहीं हिचक सकते। इन नवयुवकों को आजादी भी बहुत दी जाती है जिससे उनका स्वभाव बहुत ही उद्धत और लड़ाकू हो जाता है। इतना ही नहीं जर्मनी के शासन-सचालक वहाँ के हर एक छोटे बालक और बालिका में भी यही फौजी भाव भरना चाहते हैं और इसके लिये आजकल वहाँ उनको सिर्फ ऐसे ही खिलौने दिये जा रहे हैं जिससे उनके भीतर लड़ाई का भाव शुरू से ही पैदा हो जाय। इस बारे में एक अंगरेज सम्वाददाता ने हाल ही में लिखा था —

"आजकल जर्मनी की नाजी सरकार अपने देश में जिन खिलौनों का प्रचार कर रही है वे सब लड़ाई से ताल्लुक रखने वाले हैं। उनमें सिपाहियों जो दुश्मन पर आग बरसाते हुये, पावों पर पट्टी बांधे हुये, लड़ाई के मैदान में तड़प कर

मरते हुये दिखलाया जाता है। इन खिलौनों मे छोटे-छोटे 'टैंक' भी है जो ऊँची नीची जमीन पर चलते है और बडे जोर से दुश्मनो पर पटाखे छोडते जाते हैं। बडी तोपों के नमूने पर खेलने की तोपें बनाई गई हैं जिनसे भीषण शब्द होता है। नाजी सिपाहियों को बहादुरी के साथ कूच करते और उनके आगे-आगे अफसरो को नाजी-झण्डा लेकर चलते हुए दिखलाया गया है। नर्सें (दाइयाँ) नाजी सिपाहियों के हाथ और पैरों मे लगे बड़े-बडे लाल घावों पर पट्टियाँ बाँधते दिखलाई गई हैं। नये ढङ्ग की लडाई की शायद ही कोई ऐसी बात हो जो इन खिलौनो द्वारा बालकों को न सिखलाई जाती हो। कहीं पर सिपाही कैंचियाँ लिये काँटेदार तारों को काट रहे हैं, कही वे मशीनगनो के पोछे उकडू बैठे हैं और कहीं दुश्मन के सिपाहियो पर भयंकर रूप से सगीनों से हमला कर रहे हैं।" शायद कुछ लोग इन बातों को फिजूल समझे और अपने मन मे कहे कि लड़ाइयाँ खिलौनों से नहीं जीती जा सकतीं। पर उनको सोचना चाहिये कि जहाँ के बच्चे शुरू से ही ऐसे खिलौनो से खेलेगे, जिनको शुरू से ही लडाई की कहानियाँ और किस्से सुनाये जायँगे, स्कूल में जाते ही फौजी कवायद कराई जायगी और कुछ बडे होते ही जबर्दस्ती सख्त से सख्त फौजी तालीम दी जायगी, वे कैसे पक्के और मरने-मारने के लिये तैयार सिपाही होगे।

इस समय योरोप के मुल्कों में जो आपस की फूट फैली

हुई है और हर एक दूसरे को सन्देह की निगाह से देखता है उससे जर्मनी को अपने इरादों को पूरा करने का अच्छा अवसर मिल गया है और वह निडर होकर तैयारी कर रहा है। अभी कुछ समय पहले मि० विन्सटन चर्चिल ने इङ्गलैण्ड की पार्लियामेंट मे कहा था कि जर्मनी ने सिर्फ सन् १९३५ मे ही फौजी तैयारी मे ८० करोड़ पौंड खर्च किया है। मुमकिन है यह अन्दाजा कुछ वढ़ा कर किया गया हो पर इसमे जरा भी शक नहीं कि पिछले दो सालों मे जर्मनी ने अपनी ताकत इतनी वढा ली है कि उसकी गिनती फिर से वडी ताकतो मे की जाने लगी है और छोटे-वड़े सभी मुल्क उससे डरने लगे हैं।

इटली की कायापलट

योरोप के राजनैतिक क्षेत्र मे इटली ने जैसी जल्दी अपना प्रभाव जमाया है उसे देख कर सभी लोग दङ्ग रह गये है। सन् १९१४ की लडाई में उसने जर्मनी के खिलाफ इङ्गलैण्ड और फ्रांस का साथ दिया था। पर उसकी ताकत इन दोनों के मुकावले में बहुत कम थी। इस लिये लडाई खत्म होने पर लूट के माल मे से उसे बहुत कम हिस्सा दिया गया। इससे वह नाराज जरूर हुआ पर कुछ कर न सका।

इसके वाद वहा की हकूमत की वागडोर मुसोलिनी के

हाथो मे आई और उसने फौरन ही इस बात को समझ लिया कि इस वक्त योरोप मे ताकत का ही बोलबाला है और सभी मुल्क 'जिसकी लाठी उसकी भैस' वाली मसल पर ही चल रहे हैं। इस लिये वह भी अपनी फौजी ताकत के बढाने मे लग गया और आज योरोप के सभी छोटे-बडे मुल्क उससे डरने लग गये है। कहा जाता है कि जरूरत पडने पर वह पचास लाख तक फौज इकट्ठी कर सकता है। उसकी फौज मे हवाई जहाज, फौजी मोटरे और दूसरी मशीने भी काफी तादाद मे हैं। उसे अपनी ताकत का कितना भरोसा है यह बात अबीसीनिया का झगडा शुरू होते ही मालूम हो गई। उस समय इङ्गलेड, फ्रांस आदि के धमकी देने पर मुसोलिनी ने कहा था : –

"अगर 'लोग आफ नेशस' ने इटली के विरुद्ध दण्डाज्ञाएँ लगाने का निश्चय किया तो इटली उसे तुरन्त ही त्याग देगा और जो मुल्क इटली के खिलाफ दडाज्ञाओ का प्रयोग करेगा उसे हमारे हथियारों का मुकाबला करना पडेगा। अगर राष्ट्र-सघ हमारी सल्तनत फैलाने की चेष्टा को योरोपीय लडाई का रूप देगा तो इससे हर एक असतुष्ट देश की अपनी इच्छा पूरी करने का मौका मिल जायगा। यह भी मुमकिन है कि यह लडाई समारव्यापी सग्राम का रूप धारण कर ले जिसमे करोडों आदमी मारे जायँ। इस सब का दोप राष्ट्र-सघ पर ही लगाया जायगा।"

अब अबीसीनिया को फतह करके इटली के हौसिले बहुत बढ गये हैं और उसने अपना जाल योरोप मे भी फेकना शुरू किया है। पहले आस्ट्रिया को लेकर जर्मनी से उसका कुछ मनमुटाव था पर अब दोनो देशो ने इस विषय मे समझौता कर लिया है। स्पेन मे इस समय जो भयकर घरेलू बलवा फैला हुआ है उसमे भी मुसोलिनी का हाथ बतलाया जाता है। कोई आश्चर्य नहीं कि इसके फल से स्पेन मे भी फैसीसिटी हकूमत कायम हो जाय और इटली को एक नया साथी मिल जाय। इस तरह इटली की ताकत योरोप के लिये बडे डर की बात हो रही है और इसमे शक नहीं कि अगली लडाई मे उसका खास स्थान रहेगा।

—:—

हाथो मे आई और उसने फौरन ही इस वात को समझ लिया कि इस वक्त योरोप मे ताकत का ही वोलवाला है और सभी मुल्क 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' वाली मसल पर ही चल रहे हैं। इस लिये वह भी अपनी फौजी ताकत के वढाने मे लग गया और आज योरोप के सभी छोटे-वडे मुल्क उससे डरने लग गये हैं। कहा जाता है कि जरूरत पढने पर वह पचास लाख तक फौज इकट्ठी कर सकता है। उसकी फौज मे हवाई जहाज, फौजी मोटरे और दूसरी मशीने भी काफी तादाद मे हैं। उसे अपनी ताक़त का कितना भरोसा है यह वात अवीसीनिया का झगडा शुरू होते ही मालूम हो गई। उस समय इङ्गलेंड, फ्रांस आदि के धमकी देने पर मुसोलिनी ने कहा था :–

"अगर 'लीग आफ नेशस' ने इटली के विरुद्ध दण्डाज्ञाएँ लगाने का निश्चय किया तो इटली उसे तुरन्त ही त्याग देगा और जो मुल्क इटली के खिलाफ दडाज्ञाओ का प्रयोग करेगा उसे हमारे हथियारों का मुकावला करना पडेगा। अगर राष्ट्र-सघ हमारी सल्तनत फैलाने की चेष्टा को योरोपीय लडाई का रूप देगा तो इससे हर एक असतुष्ट देश की अपनी इच्छा पूरी करने का मौका मिल जायगा। यह भी मुमकिन है कि यह लडाई समारव्यापी सग्राम का रूप धारण कर ले जिसमे करोडों आदमी मारे जायँ। इस सव का दोप राष्ट्र-सघ पर ही लगाया जायगा।"

अब अबीसीनिया को फतह करके इटली के हौसिले बहुत बढ गये हैं और उसने अपना जाल योरोप मे भी फेकना शुरू किया है। पहले आस्ट्रिया को लेकर जर्मनी से उसका कुछ मनमुटाव था पर अब दोनो देशो ने इस विषय मे समझौता कर लिया है। स्पेन मे इस समय जो भयकर घरेलू बलवा फैला हुआ है उसमे भी मुसोलिनी का हाथ बतलाया जाता है। कोई आश्चर्य नहीं कि इसके फल से स्पेन मे भी फैसीसिटी हकूमत कायम हो जाय और इटली को एक नया साथी मिल जाय। इस तरह इटली की ताकत योरोप के लिये बडे डर की बात हो रही है और इसमे शक नहीं कि अगली लडाई मे उसका खास स्थान रहेगा।

—::—

इङ्गलैण्ड की नीति:—

एक वडे महत्व का सवाल यह है कि इस दुनिया भर मे। फैली उथल-पथल और अगली लडाई मे इङ्गलैण्ड का रुख क्या रहेगा ? क्योंकि ससार मे वही सव से वडी सल्तनत का मालिक है और वहुत से विघ्न वाधाओं के होते हुये भी सवसे ज्यादा ताकत और साधन उसी के पास हैं। इस लिये स्वभावत. हर एक मुल्क उसका रुख देखा करता है और अन्दाज लगाया करता है कि ऐसे मौके पर उसकी नीति क्या होगी ?

एक जमाना था जव कि वहुत से लोग इङ्गलैण्ड को समार भर के लडाई झगडो का कारण वतलाया करते थे। उनका कहना था कि वह दूसरों का लडा कर अपना काम वनाता है। शायद उस समय यह वात किसी हद तक सच रही हो। पर आजकल तो इङ्गलैण्ड की हालत इससे उल्टी जान पडती है। इस वक्त अगर कोई मुल्क दुनिया मे

और खास कर योरोप में शान्ति बनाये रखने की कोशिश करता दिखाई पड रहा है तो वह इङ्गलैण्ड ही है। कुछ समय पहले उसके राजनीतिज्ञ योरोप की एक राजधानी से दूसरी राजधानी का चक्कर लगाते फिर रहे थे कि किसी तरह उनमें समझौता हो जाय और हथियारों को बढाने की होड शुरू न हो। फिर इटली-अबीसीनिया के मामले मे भी उसने झगडे को बार-बार बचाया और अन्त मे बहुत कुछ बदनामी सह कर भी इटली पर से दण्डाज्ञाओं (सैंक-शस) को उठाने की घोषणा कर दी।

इङ्गलैण्ड इस समय शान्ति रखने की इतनी ज्यादा कोशिश क्यों कर रहा है इसका भेद समझ सकना मुश-किल नहीं है। सच पूछा जाय तो वह यह काम परोपकार की खातिर नहीं बल्कि अपने ही फायदे की निगाह से करता है। पहली बात तो यह है कि इटली, जर्मनी जापान आदि की तरह इङ्गलैण्ड की जनता लडाई के लिये तैयार नहीं है और न सहज मे उसे तैयार किया जा सकता है। योरोप के ज्यादातर देशों मे और अमरीका तक मे डिक्टेटरशिप की प्रधानता हो जाने पर भी इङ्गलैण्ड मे जनता की राय का काफी असर है और इस लिये अधिकारी लोग जल्दी उसके खिलाफ कोई कार्रवाई करने की हिम्मत नहीं रखते। दूसरी बात यह है कि इङ्गलैण्ड का साम्राज्य अब बहुत ज्यादा बडा हो गया है और उसमे कहीं न कहीं कोई झगडा

लगा ही रहता है। इस लिये इङ्गलैण्ड का हित इसी मे है कि जो कुछ उसके पास है उसी को सँभाले रहे। दूसरों से झगडा मोल लेने की न उसे फुर्सत है और न इसमे सिवाय नुकसान के उसका कुछ फायदा हो सकता है। इङ्गलैण्ड की यह मनोवृत्ति मि० लायड जार्ज के नीचे लिखे कथन से स्पष्ट हो जाती है —

" योरोपियन देशों के झगडो की इन तैयारियों की और विरोधियों द्वारा उनको बेकार करने की कोशिशों की बाते सुनते-सुनते इङ्गलैंड वाले ऊब उठे हैं। हम हिटलर के दल वालों की उन्मत्त राष्ट्रीयता और यहूदियों पर किये गये जुल्मों को बहुत नापसन्द करते हैं पर जर्मनी का विरोध करने के लिये किसी दल मे शामिल होना नहीं चाहते।

" इसी तरह हम फ्रॉस की आत्मरक्षा की चेष्टाओ से सहानुभूति रखते है, पर आत्मरक्षा के नाम पर फ्राँस जो अपने हथियारखाने दिन पर दिन वढाता जा रहा है इसे सन्देह की निगाह से देखते है। हम राष्ट्र-सघ का भी भला चाहते हैं, पर उसके खोखलेपन की तरफ से आँखें नहीं बन्द कर सकते। पूर्वी और दक्षिणी-पूर्वी योरोप मे अल्प-सख्यक दल वालों (माइनोरिटीज) पर होने वाले जुल्मों और वाल्कन के लडाई झगडों का हाल सुनकर हमको

दु:ख जरूर होता है, पर हम यह भी समझते हैं कि मौजूदा हालत में दूसरे देशों के हस्तक्षेप करने से इन दोषों का सुधार नहीं हो सकता। हमारा इन झगड़ों से इतना ही ताल्लुक है कि इनके सबब से दुनिया की माली हालत और भी खराब होती जा रही है।"

इस तरह इङ्गलैण्ड योरोप के झगड़ों से दूर रहने की कोशिश करता रहा है और भविष्य मे भी उसकी यही नीति रहेगी। वह है भी सबसे अलग समुद्र के बीच मे। पर इसमें सन्देह है कि वह अन्त तक ऐसा कर सकेगा। इस सम्बन्ध मे भारतीय यूनीवर्सिटी के प्रोफेसर ने, जिनका जिक्र हम पीछे कर चुके हैं, जो कुछ कहा है वही हमको अधिकाश मे सच जान पडता है। अगली बडी लडाई का जिक्र करते हुये उन्होंने कहा था—

"इङ्गलैण्ड इससे अलग रहने की कोशिश करेगा और इसका सबब साफ जाहिर है। वह अभी बहुत सी उलझनों मे फँसा हुआ है और इस लिये वह हर तरह से इस नाशकारी सग्राम से बचने की कोशिश करेगा। पर उसे जबर्दस्ती लडाई मे घसीटा जायगा और लाचार होकर उसे किसी न किसी पक्ष मे शामिल होना पडेगा।"

इङ्गलैंड के बहुत से राजनीतिज्ञ भी इस सम्भावना को समझ रहे हैं और इस लिये पार्लियामेन्ट मे बार-बार सरकार पर जल्दी से फौजी तैयारियां न करने का आक्षेप

किया जाता है। इन आक्षेप करने वालो मे सबसे बढ कर मि० चर्चिल हैं। और भी कितने ही लोग ऐसे ही विचार रखते हैं और आजकल इङ्गलैंड के अखबारों मे इस सम्बन्ध मे काफी लिखा-पढी हुआ करती है। इस विषय मे मि० राबर्ट ब्लैकफोर्ड नामक प्रसिद्ध राजनैतिक लेखक ने, जिसने गत महायुद्ध की भविष्यवाणी कई वर्ष पूर्व कर दी थी, भावी-युद्ध की सूचना देते हुये आज से तीन वर्ष पहले लिखा था —

"एडमिरल सर चार्लस मैडन का यह कहना बिल्कुल सच है कि दूसरे देश हमारी जल-सेना को ईर्षा की निगाह से देखते हैं। पिछले महायुद्ध के खत्म होते ही अमरीका हमारे बराबर जल-सेना रखने का दावा करने लगा था। आखिर मे उसकी बात मानी गई। सब की राय से लडाई के जहाजों की तादाद घटाई गई और क्रूजरो तथा तोपों का आकार नियत कर दिया गया।

"इस समझौते का पालन सिर्फ इङ्गलैण्ड ने ही किया, बाकी तमाम देश चालाकी से इसके ख़िलाफ़ चलते रहे। पिछले महायुद्ध मे हमारी जल-सेना ससार मे सबसे ज्यादा ताकतवर थी। आज क्रूजरों की निगाह से उसका नम्बर दूसरा है और गोताखोर नावों तथा नाशक जहाजों (डेस्ट्रायर) की निगाह से पाँचवा।"

पर अब यह हालत बहुत बदल गई है। इस बीच में जर्मनी की फौजी तैयारियों के बहुत बढ जाने और अबीसीनिया पर इटली का कब्जा हो जाने से योरोप में लडाई की सम्भावना पहले से बहुत ज्यादा हो गई है। इस लिये इङ्गलैण्ड जैसे देशों को भी, जो लडाई की तैयारी में अपना रुपया बर्बाद नहीं करना चाहते थे, इस तरफ ध्यान देना पडा है। इसके लिये मौजूदा वर्ष के बजट में फौजी महकमे के लिये बहुत बडी रकम मंजूर की गई है। इसके सिवा और भी तैयारियां हो रही हैं। इस विषय में पार्लीमेंट में बहस के समय सर टामस इन्सकिप ने जो वक्तव्य दिया है वह बडे महत्व का है। उन्होंने कहा था :—

"अगर तूफान एकाएक हमारे सिर पर आजायगा तो हथियारों की तैयारी के लिये हमको मौक़ा ही न मिलेगा। इस लिये लडाई का सामान तैयार करने के लिये हमको ऐसा इन्तजाम करना चाहिये कि २४ घण्टे पहले खबर मिलने पर भी आधुनिक ढङ्ग की लडाई की जरूरतें पूरी की जा सकें। जो कारखाने इस समय शान्ति-काल में काम आने वाली चीजें बना रहे हैं, उन्हें नई लडाई का सामान बनाने के लिये पूरी तरह तैयार कर दिया गया है। इस निगाह से ४०० कारखानों की पूरी जांच की जा चुकी है और ५०० कारखानों को अलग-अलग हिस्सों में बांट कर अलग-अलग तरह की चीजें बनाने का काम उनके सुपर्द किया गया

है। हवाई जहाजों के रखने के लिये भी इन्तजाम किया जा रहा है। कितनी ही मोटर कम्पनियों से सरकारी खर्चे पर मकान वनाने को कहा जायगा। यह सरकार की ही मिलकियत रहेंगे। इसका नतीजा यह होगा कि एक तरफ तो व्यापार मे खलल न पडेगा और दूसरी तरफ सब चीजे सरकार को समय पर ठीक-ठीक मिल सकेगी। लडाई का सामान तैयार करने मे नाजायज फ़ायदा उठाने की जो सम्भावना रहती है उसे दूर करने का उपाय भी किया जायगा। सर विलियम वेहरिज की मातहती मे एक कमेटी इस वात पर विचार करने के लिये वनाई गई है कि लडाई के वक्त इङ्गलैंड की जनता को खाने का सामान विना दिक्कत के किस तरह मिल सकता है। व्यापारी जहाजों, मुसाफिरी के हवाई जहाजों और नागरिकों की रक्षा के सवाल पर भी गौर किया जा रहा है।"

इङ्गलैण्ड की हवाई कौंसिल ने हाल ही मे शान्ति और युद्ध-काल की जरूरतों पर विचार करते हुए एक नया प्रोग्राम वनाया है जिसके मुताविक हवाई सेना को तीन हिस्सो मे बॉट दिया गया है। वे तीनों हैं, वम वरसाने वाले जहाज़, समुद्री किनारे की रक्षा करने वाले जहाज और शिक्षा सम्वन्धी जहाज़।

इन वातों से जान पडता है कि इङ्गलैण्ड भी अगली लडाई के खतरे को पूरी तरह समझ रहा है और उसके लिये

तैयार रहना आत्म-रक्षा के लिये जरूरी समझता है। अगर्चे वहाँ के राजनीतिज्ञ अब भी समझौते की ही चेष्टा कर रहे हैं और सर सैमुअल होर ने तो यहाँ तक कहा है कि संसार में शान्ति कायम रखने की जिम्मेदारी इङ्गलैण्ड और अमरीका की जल-सेना पर ही है, तो भी भविष्य में न जाने कब क्या गुल खिले, इस ख़्याल से अब वह भी बेखबर और बिना तैयारी के नहीं रहना चाहता।

— ० —

नाश के नये साधन:—

लड़ाई का असली उद्देश्य दुश्मन के ऊपर अपनी धाक जमा देना और उसे अपना हुक्म मानने को लाचार कर देना होता है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिये आजकल हरएक मुल्क ऐसे हथियार बनाने की कोशिश कर रहा है जो दूसरे मुल्कों के हथियारों से ज्यादा कारगर हों। क्योंकि अब दिन पर दिन लडाई का दारमदार आदमियों के बजाय हथियारों और तरह-तरह की मशीनों पर अधिक होता जाता है। मिसाल के लिये अगर किसी मुल्क के पास हवाई जहाज न हों, तो दूसरा मुल्क जिसके पास बहुत से हवाई जहाज हैं, छोटा होने पर भी उसको हरा सकता है। इस बात की सचाई चीन-जापान तथा अबीसीनिया-इटली की लडाइयों मे देखी जा चुकी है। जापान के मुकाबले में चीन के पास सिपाही ज्यादा थे और उनमे बहादुरी और हिम्मत की भी कमी न थी, पर जापानी फौज के पास नये ढङ्ग के

हथियार और दूसरे वैज्ञानिक साधन होने से चीन वालों को ही सदा नीचा देखना पड़ा। इटली-अबीसीनिया के युद्ध मे अबीसीनिया के पीछे हटने का एकमात्र सबब इटली के पास हवाई जहाजो तथा नये ढङ्ग के हथियारो का बहुत बड़ी तादाद मे होना ही है।

यही कारण है कि इन दिनो योरोप के सभी देश और अमेरिका. जापान वगैरह मौजूदा हथियारो की तरक्की करने और नये-नये हथियारों के बनाने मे लगे हैं। उनका उद्देश्य ऐसी तैयारी करना है जिससे वे लड़ाई छिड़ते ही दुश्मन के सर पर जाकर पहुँच जायँ और उसे मुकाबला करने का मौका ही न दे। इस बारे मे जर्मनी के एक सेनापति का कहना है —

"जैसे ही लड़ाई का निश्चय हो जायगा हर एक लड़ने वाला मुल्क, जिसके पास नये ढङ्ग के हथियार होंगे अपने हवाई जहाजो, मोटरों और लम्बी मार की तोपों द्वारा यह कोशिश करेगा कि जहाँ तक मुमकिन हो जल्दी दुश्मन के मुल्क मे पहुँच कर उसकी राजधानी और खास-खास मुकामो पर हमला करे। यह कहना तो मुश्किल है कि इन शुरू के ही हमलों से लड़ाई का फैसला हो जायगा, पर इतना जरूर है कि हर एक लड़ने वाला मुल्क पहले ही झपट्टे मे

दुश्मन को इतना नुकसान पहुँचाने की कोशिश करेगा जिससे उसका तमाम इन्तजाम गडबड हो जाय। वह यह भी कोशिश करेगा कि लडाई दुश्मन की जमीन पर हो। इस तरह कोई अचम्भा नहीं कि पहले ही हमले मे इन मुल्कों के ख़ास-ख़ास फौजी अड्डे नष्ट हो जायँ।"

नये हथियारों की ताक़त

इस तरह के हमले मे कामयाबी उसी मुल्क को मिल सकती है जिसने शान्ति के जमाने मे ही लडने की ज्यादा से ज़्यादा तैयारी कर रखी होगी। क्योंकि आजकल जैसे वैज्ञानिक हथियार ईजाद हो रहे हैं और उनसे काम लेने को जैसे सीखे हुये चतुर सैनिकों की जरूरत है वे जल्दी ही तैयार नहीं किये जा सकते। लडाई छिडने के वक्त जिस मुल्क के पास नये ढङ्ग की युद्ध-विद्या मे निपुण लोगों की सख्या जितनी ही ज्यादा होगी और लडाई का सामान जितना ही बढिया होगा उतनी ही ज्यादा कामयाबी उसे पहले हमले में मिल सकेगी। और अगली लडाई मे यह पहला हमला इतना महत्वपूर्ण होगा कि अगर उसी से हार जीत का फैसला हो जाय तो कोई ताज्जुब नहीं। क्योंकि आजकल जो वैज्ञानिक हथियार बनाये गये हैं उनकी ताकत पिछले महायुद्ध मे काम लाये गये हथियारों से सैकडों गुना बढ गई है। उस समय के हवाई जहाज आजकल के हवाई जहाज़ों के मुकाबले

मे खिलौनों की तरह थे और यही बात जहरीली गैस के बारे मे भी कही जा सकती है। बिजली से मारने वाले हथियारो का तो उस वक्त पता ही नहीं था। इन्हीं तमाम बातो को समझ कर आजकल कोई मुल्क अपनी फौजी तैयारी को रोकना नहीं चाहता अगर्चे नि शस्त्रीकरण कान्फरेंसों मे बार-बार इस पर जोर दिया जाता है।

अगर ऊपर लिखी बाते सच है तो इसका नतीजा यह होगा कि अगली लडाई बहुत थोडे दिनो मे खत्म हो जायगी। आजकल कितने ही युद्ध-विद्या के जानकार ऐसी राय जाहिर भी कर रहे हैं। कप्तान लिडिल हार्ट ने, जो सैनिक इतिहास के बहुत बडे विद्वान् माने जाते है, अगली लडाई के बारे मे लिखते हुये 'फिलीपाइन हेरल्ड' नामक पत्र मे बतलाया था —

"लडाई की घोषणा होने पर जैसे ही फौजे इकट्ठी होने लगेगी वैसे ही उनको लकवा मार जायगा। अगर वे किसी तरह एक दूसरे के मुकाबले मे पहुँच भी गई तो उनको फौरन ही खाइयां खोदकर जमीन के भीतर छुप जाना होगा। उनके लिये बाहर रहना आत्महत्या करने के बराबर होगा। स्थल सेना द्वारा हमला करना नामुमकिन सा होगा। लडने वाले देश या तो शुरू मे ही लाचार हो जायँगे या

ऐसी हालत मे पड जायँगे कि आगे वढना अपने पैरों म आप ही कुल्हाडी मारना होगा।"

नये हथियारों की ताकत देखते हुये यह कल्पना गलत नहीं कही जा सकती। पर इसमे कुछ रुकावटे भी हैं। आजकल तमाम मुल्कों मे लडाई के नये-नये आविष्कारों के लिये जैसी सिरतोड़ कोशिश की जा रही है उसके सवव से नये हथियार थोडे ही दिनों के लिये कारगर होते हैं। आज अगर एक देश घण्टे में दो सौ मील जाने वाला हवाई जहाज वनाता है तो कल दूसरा देश ढाई सौ मील की चाल का जहाज तैयार कर लेता है। अगर कोई मुल्क वहुत तेज जहरीली गैस तैयार करता है तो दूसरा ऐसी नकाव (मास्क) ढूढ निकालता है जिस पर उसका कुछ असर ही न हो। यही वात दूसरे आविष्कारों की है। ऐसी हालत मे अगर कोई मुल्क पहले से ही लडाई का वहुत ज्यादा सामान तैयार करके रखले तो उसे हानि के सिवा लाभ की उम्मेद वहुत कम है। मान लीजिये आज किसी मुल्क ने लकडी और अलूमीनियम या किसी दूसरी हल्की ता हो
के वने हजार, दो हजार हवाई जहाज वना कर रख ानिक
इसके वाद कोई ऐसा आविष्कार हुआ जिससे फौल । काम
हवाई जहाज वनने लगे और उनकी चाल भी काफी ते समय
ऐसी हालत मे अगर दूसरा देश नये ढङ्ग के सौ कावले

जहाज भी बना लेगा तो वे पहले देश के हज़ारों जहाजों को नष्ट करने को काफी होंगे।

इस मिसाल से हम समझ सकते हैं कि इस जमाने में कोई मुल्क पहले से ही लड़ाई की पूरी तैयारी नहीं कर सकता। इसके लिये लड़ाई का सामान तैयार करने के बजाय अपने यहाँ के कारखानों का ऐसा इन्तजाम करना पड़ेगा कि लड़ाई का निश्चय होते ही जल्दी से जल्दी नये ढंग के हथियार, हवाई जहाज, लड़ाई की मोटरें, गैस आदि तैयार हो सकें। इस निगाह से विचार किया जाय तो लड़ाई का ज्यादा दिनों तक चलना जरूरी मालूम होता है। तो भी इसमें सन्देह नहीं कि अगली लड़ाई पिछले महायुद्ध की तरह सालों तक नहीं चल सकती।

इससे यह भी मालूम पड़ता है कि अगली लड़ाई में हरएक मुल्क इस बात की कोशिश करेगा कि जहां तक मुमकिन हो दुश्मन के कारखानों और ऐसी चीजों को बर्बाद कर दिया जाय जिनसे युद्ध की तैयारी में मदद मिलती है। मिसाल के लिये अगर वह दुश्मन की कोयले की खानों को हवाई जहाजों से बम गिरा कर नष्ट कर दे तो रेलों का चलना मुश्किल हो जायगा और इनके बिना फौजों को किस तरह एक जगह से दूसरी जगह भेजा जा सकेगा? अगर पेट्रोल की टंकियों और मिट्टी के तेल के कुओं को नष्ट कर दिया

जाय तो हवाई जहाज और मोटरें रखी ही रह जायँगी। अगर बिजलीघरों को उडा दिया जाय तो बहुत से कारखाने रुक जायँगे। इसी तरह गैस और गोली बारूद के कारखानों को नष्ट कर देने से दुश्मन को बडी मुश्किल मे डाला जा सकता है। पर चूंकि ये तमाम चीजे शहरों मे या शहरों के आसपास ही होती हैं इस लिये उन पर हवाई जहाजों या लम्बी मार की तोपो द्वारा गोलाबारी करने से साधारण जनता के लाखो आदमियो का मारा जाना निश्चित ही है।

इतना ही नही दुश्मन के लडाई का सामान बनाने वाले कारखानो, फौज को ले जाने वाली रेलों, कोयले और लोहे की खानों आदि मे जितने आदमी काम करते हैं एक निगाह से वे सब लड़ने वाले ही माने जायँगे। क्योंकि उनकी सहायता के बिना लडाई का काम नहीं चल सकता। इस विचार-धारा को अगर कुछ और बढाया जाय तो यह भी कहा जा सकता है कि जो लोग फौजों के लिये अनाज और दूसरी चीजे पैदा करते है या उनके लिये कपडे और जूते वगैरह तैयार करते हैं वे भी युद्ध मे शामिल हैं क्योंकि इन चीजों के किसी फौज का काम एक दिन भी नहीं चल सकता। इस लिये कोई भी लडने वाला देश दुश्मन के शहरों और गाँवों पर गोलाबारी करने या उनमे रहने वालो को जहरीली गैस वगैरह से मारने मे आगापीछा न करेगा। बल्कि इस बात की कोशिश करेगा कि वह पहले ही हमले

में ज्यादा से ज्यादा से नुकसान पहुँचा कर दुश्मन को तैयार होने से रोके।

लड़ाई फौजों में नहीं बल्कि मुल्कों में होगी

इन बातों से साफ जाहिर है कि अब वह जमाना सदा के लिये चला गया जब कि दो फौजें लड़ाई के मैदान में आमने-सामने खड़ी होती थीं और उनमें से जो दूसरी को भगा देती थी उसी की जीत हो जाती थी। अब एक निगाह से लड़ाई के मैदान शब्द का कुछ मतलब ही नहीं रह गया है। युद्ध-क्षेत्र में अगले भाग (फ्रंट) और पिछले भाग (रियर) का भी अब कोई मतलब नहीं रहेगा। हवाई जहाजों के सबब से शुरू से ही सारा मुल्क लड़ाई का मैदान बन जायगा और उसमें रहने वाला हर एक प्राणी किसी न किसी निगाह से उसमें शामिल समझा जायगा। इस तरह अगली लड़ाई में युद्ध-विद्या की एक दम कायापल्ट हो जायगी। जिन दाव-पेचों से आजकल लड़ाइयों में काम लिया जाता है वे बिल्कुल बेकार हो जायँगे।

बहादुरी और ताकत का महत्व जाता रहेगा

अगली लड़ाई में एक खास बात यह भी होगी कि उसमें भाग लेने वालों के लिये बहादुरी और ताकत जैसे गुणों को ज्यादा महत्व का न समझा जायगा। इन बातों का

महत्त्व उसी समय था जब कि दुश्मन के सामने पहुच कर हाथ से चलाये जाने वाले हथियारो से काम लिया जाता था। उस जमाने मे जो आदमी घायल होकर भी पीठ नहीं दिखलाता था और दुश्मन के मुकाबले मे डटा रहता था वही सब से बडा बहादुर समझा जाता था। पर अब ऐसी बहादुरी की कुछ भी कीमत नही समझी जायगी। अब बख्तरदार मोटर मे बैठे हुये चार कमजोर आदमी ऐसे सैकडों बहादुरो को, अगर उनके पास भी नये ढङ्ग के हथियार न हो, तो चन्द मिनटों मे खत्म कर सकते हैं। अगर इस मोटर मे बैठे हुये आदमियो मे से कोई कायर भी हो, लडाई को देख कर मरने से डर जाय, तो भी कोई नुकसान नहीं, क्योंकि उसके लिये निकल भागने का कोई रास्ता ही नहीं होता। इसी तरह जो आदमी जमीन के भीतर पचास गज नीचे सुरङ्ग मे बन्द होकर बिजली के बटन को दबाकर तोपे चलाते हैं उनको भी बहादुर होने की जरूरत नही है अगर्चे वे हजारो ताकतवर आदमियों को यमलोक पठा सकते है। बिजली की लडाई तो और भी विचित्र होगी। वह बीसियों कोस की दूरी से लडी जायगी और उसके लडने वाले छ फीट लम्बे, हट्टे-कट्टे सिपाहियों के बजाय शायद दुबले-पतले, चश्मा लगाये हुये और एक ही थप्पड मे गिर जाने वाले वैज्ञानिक होगे जो बडी से बडी फौजो को पलक मारते-मारते जमीन पर सुला देंगे।

हमारे यहाँ के पुराने ख्यालों के लोग ऐसी लड़ाई का हाल सुन कर हँसते हैं और उसे औरतों की लड़ाई के नाम से पुकारते हैं। उनको जान लेना चाहिये कि अब लड़ाई का उद्देश्य वीर कहलाना या वाहवाही हासिल करना नहीं रह गया है बल्कि किसी भी तरकीब से दुश्मन को नष्ट कर देना माना जाता है। इसमें हँसने की अथवा निन्दा की कोई बात नहीं है। सृष्टि के आदि से मनुष्य का यही स्वभाव रहा है कि वह जितना बन सके दूर ही से अपने दुश्मन को मारने की कोशिश करता है। यदि ऐसा न होता तो तलवार के बजाय धनुष-बाण का आविष्कार न होता। धनुष-बाण भी एक तरह की बन्दूक ही है जिससे दुश्मन को सैकड़ों गज की दूरी से छुप कर भी मारा जा सकता है। फिर हम को उन दिव्य अस्त्रों बात भी याद करना चाहिये जिनसे अयोध्या में बैठे-बैठे लंका की खबर ली जा सकती थी अथवा जिनके द्वारा रामचन्द्रजी अपने कैम्प में बैठ कर ही रावण के छत्र को काट कर गिरा सकते थे। यदि इन कथाओं में कुछ सचाई है तो हमको मानना ही पड़ेगा कि पुराने जमाने के भारतीय भी वैज्ञानिक हथियारों से काम लेते थे, चाहे उनके बनाने और काम में लाने की तरकीब आजकल से बिल्कुल ही अलग क्यों न हो।

गति (चाल) की प्रधानता

इससे साबित होता है कि लड़ाई में कामयाबी हासिल

करने का सबसे बड़ा साधन गति या चाल ही है और इसी पर आजकल सब देश जोर दे रहे हैं। जिसका हथियार पहले पहुँच कर दुश्मन को मार सकता है उसी के जीतने की ज्यादा उम्मेद है। दूसरी बात अपने को तथा अपने हथियार को ऐसी चीज़ से ढक देना है जिससे दुश्मन के वार का असर न हो। यहाँ पर हथियार का मतलब सिर्फ तोप बन्दूक या बम आदि से नहीं है बल्कि जिन चीजो द्वारा इनको काम मे लाया जाता है उनकी गिनती भी हथियारों मे ही है। जैसे हवाई जहाज़ या 'टैंक' (बख्तरदार मोटरगाडी) द्वारा आदमियों को मारा नहीं जाता पर बम और मशीनगनो को उन्ही मे रखकर ऐसी जगह ले जाया जाता है जहाँ से उनको दुश्मन पर फेका जा सके। इस लिये आजकल हर एक मुल्क हवाई जहाजो और मोटरो की चाल को तेज करने तथा उनके ऊपरी आवरण (बख्तर) को मज़बूत बनाने मे लगा है।

टैंक

आजकल खुश्की की लडाई का सबसे ज्यादा भयकर हथियार टैंक' समझा जाता है। सब से पहले यह पिछले महायुद्ध मे काम लाया गया था। इसके पहले सभी मुल्क तोपों का महत्व अधिक समझते थे और उन्ही के लिये ज्यादा रूपया खर्च किया जाता था। सन् १९१७ मे यप्रेस की लड़ाई मे जो करीब पॉच महीने तक चलती रही थी

सिर्फ अङ्गरेजी तोपों ने ही ४० लाख से अधिक गोले छोड़े थे जिनकी कीमत २ करोड़ ७० लाख पौंड थी। पर इनसे दुश्मन को बहुत कम नुकसान पहुँचाता था और हार-जीत का कुछ पता ही नहीं चलता था। यह देख कर बड़े अफसरों ने 'टैंक' बनाने की तरफ ध्यान दिया और इनसे बहुत थोड़े खर्च में महीनों का काम कुछ दिनों में ही हो गया। इन 'टैंकों' पर बख्तर के सबब से मशीनगन या बन्दूक की गोली का कुछ असर नहीं पड़ता था और उनमें बैठ कर दुश्मन की खाइयों तक सहज में पहुँचा जा सकता था। वहाँ पहुँच कर 'टैङ्क' के भीतर लगी मशीनगनों से दुश्मन के सिपाहियों को मनमाने ढङ्ग से भूना जा सकता था। इस तरह इस लड़ाई में एक तरफ के सिपाहियों की हिफाजत आध इंच मोटी फौलाद की चद्दर कर रही थी और दूसरी तरफ के सिपाहियों के बदन पर सिर्फ कपड़े थे। यह लड़ाई बिलकुल बेजोड़ थी और इसके सबब से जर्मन फौज को बहुत जल्दी पीछे हटना पड़ा। ८ अगस्त १९१८ को 'एमीन्स' की लड़ाई में अङ्गरेजों की टैंक-सेना ने जर्मन फौज को इतना नुकसान पहुँचाया कि वह फिर सम्हल न सकी। इसी लिये जनरल हिण्डेनबर्ग ने ८ अगस्त को जर्मन फौज का 'काला दिन' कहा था और जनरल [illegible] को कहना पड़ा था कि "हमको जनरल फोश ने नहीं हराया, जनरल 'टैंक' ने हराया है।"

'टैंक' से काम लेने मे तोपो की बनिस्बत थोडे ही आदमियो की जरूरत पडती है। साथ ही हिफाजत का काम उससे बहुत अच्छी तरह निकलता है। पिछले महायुद्ध मे 'सोम' की लडाई मे पहले ही दिन अङ्गरेजो के ६० हजार सिपाही काम आये थे, पर जब अङ्गरेजी सेना 'टैंकों' को सामने रख कर आगे बढने लगी तो 'एमीन्स' की लडाई मे पहले दिन सिर्फ एक हजार आदमी काम आये। तोपों और गोलो के बनाने तथा ढोने मे जितनी मिहनत करनी पडती हैं टैंकों के लिये उससे बहुत कम मिहनत दरकार होती है। साथ ही आगे बढने मे इनसे बहुत मदद मिलती है। सन १९१७ मे जब कि मित्र राष्ट्रो की फौज मे 'टैङ्को' का इस्तेमाल कम किया जाता था वे दिन भर मे ११० गज से ज्यादा आगे नही बढ सकते थे। पर सन् १९१८ के आखिरी भाग मे जब बहुत से 'टैंक' बनकर तैयार हो गये तो वही सेना हर रोज ११०० गज बढने लगी। इन तमाम बातो से हर एक मुल्क मे 'टैंक' और बख्तरदार गाड़ियो का रिवाज बढ़ गया है और पैदल-सेना तथा तोपो का महत्त्व पहले की बनिस्बत बहुत कम हो गया है।

हवाई जहाज

जो बात 'टैंकों' के बारे मे है वही हवाई जहाजों के लिये कही जा सकती है। अगर्चे पिछले महायुद्ध मे हवाई

जहाजों की तादाद बहुत कम थी और उनसे काम भी ज्यादा नहीं लिया जा सका तो भी उसी तजुर्बे से यह साबित हो गया कि हवाई जहाज एक ऐसा हथियार है जिससे बहुत थोड़े खर्च और मिहनत से दुश्मन को ज्यादा से ज्यादा नुकसान पहुँचाया जा सकता है। क्योंकि जहाँ तोप, बन्दूक और दूसरे हथियारों को बहुत दूर रह कर इस्तेमाल करना पड़ता है हवाई जहाज ठीक सर पर पहुंच कर वार कर सकता है। इस लिये उसका असर दूसरे हथियारों से कहीं ज्यादा होता है।

हवाई टारपेडो

पर हवाई जहाज में एक बड़ा ऐब यह है कि हलका होने के कारण उसे बहुत सहज में गिराया जा सकता है। जोरदार बन्दूक की गोली से भी उसे नुकसान पहुँचाया जा सकता है और तोप का तो मामूली गोला भी उसे फौरन नीचे गिरा सकता है। इन दिनों हर एक देश में हवाई जहाजों को तोड़ने की नई-नई तोपें बनाई जा रही हैं जिनसे आसमान की तरफ गोलों की झड़ी लग जाती है। ऐसी हालत में हवाई जहाज अगर नीचा उड़े तो उसका बच सकना मुशकिल है और अगर बहुत ऊँचा उड़े तो जमीन की किसी चीज पर ठीक निशाना नहीं लगा सकता।

इस कमी को दूर करने के लिये अब हवाई टारपेडो का आविष्कार किया गया है। ये टारपेडो के हवाई

जहाज बिना आदमी के सिर्फ बेतार के जरिये उड सकते हैं। कुछ दिन हुये अमरीका मे एक हवाई जहाज को बिना चलाने वाले के १२५ मील तक उडाया गया था। इस जहाज मे इस तरकीब से बम और दूसरे मसाले भरे रहेगे कि जैसे ही जहाज जमीन पर गिरे वे सब धडाके के साथ फट जायँ। इस निगाह से इस जहाज को एक बडा भारी बम का गोला ही समझना चाहिये। इस तरह के सौ, दो सौ टारपेडो-जहाजो को सिर्फ दस-बीस हवाई जहाज आसमान पर बहुत ऊपर उडते हुये बेतार के तार की मदद से इच्छानुसार चला सकते हैं। जब ये ठीक मुकाम पर पहुच जायँगे तो इनको नीचे गिरा दिया जायगा। जब किसी बडे शहर या फौज के ऊपर इस तरह के उडते हुये नाशकारी गोलों की सेना पहुँच जायेगी तो उसकी क्या हालत होगी उसकी कल्पना कर सकना मुश्किल नहीं है।

बेतार के तार का दूसरे हथियारों में उपयोग

इस बेतार की ताकत को हवाई जहाज की तरह दूसरे हथियारों में भी काम मे लाया जा सकता है। टैंक, मोटर, पानी के जहाज, गोताखोर नावें, तोप आदि सभी चीजे बेतार से चलाई जा सकती हैं। जब ऐसा होगा तो लडाई की शकल ही बदल जायगी। उस समय लडाई आदमियो मे न हो

कर सिर्फ मशीनो में होगी। इनके चलाने वाले शायद कोसों दूर छुपे हुये मुकामों मे बैठे रहेंगे। ऐसी हालत में अरक्षित वस्तुओं या आदमियों को नुकसान पहुँचाने के सिवा और कुछ नतीजा नही निकल सकता, और ऐसी लड़ाई जल्दी खत्म न हो सकेगी।

लम्बी मार की तोपें

पिछली लड़ाई में जब जर्मनी ने ७५ या ८० मील गोला फेकने वाली 'बिग बर्था' नाम की तोपो से पेरिस पर गोलाबारी की थी, तो सब जगह हलचल मच गई थी। क्योंकि तब कोई यह ख्याल नही कर सकता था कि तोप से इतनी दूर गोला फेका जा सकता है। पर लड़ाई के के बाद जो आविष्कार हुये हैं उनके सामने 'बिग बर्था' कोई चीज नही है। अब ऐसी तोपें बनाई गई हैं जिनसे सवा सौ या डेढ सौ मील तक गोला फेंका जा सकता है। मालूम हुआ है कि इन तोपो मे कोई विशेषता नहीं है बल्कि गोले ही नये ढङ्ग के बनाये गये हैं। गोला तोप से निकल कर दस बीस मील जाने के बाद खुदबखुद फट जाता है और उसके भीतर से दूसरा छोटा गोला निकलता है। यह छोटा गोला पहले गोले के फटने के जोर से फिर दस-बीस मील जाता है और तब उसके भीतर से तीसरा गोला निकलता है। इसी तरह ये गोले बड़ी दूर चले जाते हैं और तब निशाने पर गिरते हैं।

जहाज विना आदमी के सिर्फ वेतार के जरिये उड सकते हैं। कुछ दिन हुये अमरीका मे एक हवाई जहाज को विना चलाने वाले के १२५ मील तक उडाया गया था। इस जहाज मे इस तरकीब से वम और दूसरे मसाले भरे रहेगे कि जैसे ही जहाज जमीन पर गिरे वे सब धडाके के साथ फट जायँ। इस निगाह से इस जहाज को एक वडा भारी वम का गोला ही समझना चाहिये। इस तरह के सौ, दो सौ टारपेडो-जहाजो को सिर्फ दस-बीस हवाई जहाज आसमान पर वहुत ऊपर उडते हुये वेतार के तार की मदद से इच्छानुसार चला सकते हैं। जव ये ठीक मुकाम पर पहुच जायँगे तो इनको नीचे गिरा दिया जायगा। जव किसी वडे शहर या फौज के ऊपर इस तरह के उडते हुये नाशकारी गोलो की सेना पहुँच जायेगी तो उसकी क्या हालत होगी उसकी कल्पना कर सकना मुश्किल नहीं है।

वेतार के तार का दूसरे हथियारों में उपयोग

इस वेतार की ताकत को हवाई जहाज की तरह दूसरे हथियारों में भी काम मे लाया जा सकता है। टैक, मोटर, पानी के जहाज, गोताखोर नावें, तोप आदि सभी चीजे वेतार से चलाई जा सकती हैं। जव ऐसा होगा तो लडाई की शकल ही वदल जायगी। उस समय लडाई आदमियों में न हो

कर सिर्फ मशीनो में होगी। उनके चलाने वाले शायद कोसो दूर छुपे हुये मुकामो मे बैठे रहेगे। ऐसी हालत में अरक्षित वस्तुओं या आदमियों को नुकसान पहुँचाने के सिवा और कुछ नतीजा नहीं निकल सकता, और ऐसी लडाई जल्दी खत्म न हो सकेगी।

लम्बी मार की तोपें

पिछली लडाई मे जब जर्मनी ने ७५ या ८० मील गोला फेकने वाली 'बिग बर्था' नाम की तोपों से पेरिस पर गोलाबारी की थी, तो सब जगह हलचल मच गई थी। क्योकि तब कोई यह ख्याल नही कर सकता था कि तोप से इतनी दूर गोला फेका जा सकता है। पर लडाई के के बाद जो आविष्कार हुये हैं उनके सामने 'बिग बर्था' कोई चीज नही है। अब ऐसी तोपे बनाई गई हैं जिनसे सवा सौ या डेढ सौ मील तक गोला फेका जा सकता है। मालूम हुआ है कि इन तोपो मे कोई विशेषता नहीं है बल्कि गोले ही नये ढङ्ग के बनाये गये हैं। गोला तोप से निकल कर दस बीस मील जाने के बाद खुदबखुद फट जाता है और उसके भीतर से दूसरा छोटा गोला निकलता है। यह छोटा गोला पहले गोले के फटने के जोर से फिर दस-बीस मील जाता है और तब उसके भीतर से तीसरा गोला निकलता है। इसी तरह ये गोले बडी दूर चले जाते हैं और तब निशाने पर गिरते है।

पर जब से हवाई जहाजों की ज्यादा तरक्की हुई है तब से तोपों की तरफ कम ध्यान दिया जाने लगा है। क्योंकि अब तोपों से आत्मरक्षा का काम ही लिया जा सकता है। हमले का काम तो हवाई जहाजों से ही कहीं अच्छी तरह और बहुत कम खर्च में हो सकता है।

जमीन के भीतर बसे शहर

साइंस के इन नये आविष्कारों का एक नतीजा शायद यह होगा कि आने वाले जमाने में लोग दिन पर दिन जमीन के भीतर गुप्त स्थानों में रहने की कोशिश करेंगे। अब भी फ्रांस में जर्मनी की सीमा के पास जो किले बनाये गये हैं वे एक निगाह से जमीन के भीतर बसे शहर ही हैं। इसके सिवा फ्रांस और दूसरे मुल्कों में जमीन के भीतर और भी हजारों मकान ऐसे बनाये जा रहे हैं जहाँ नगर निवासी जरूरत पड़ने पर छिप सकें। ऐसा जान पड़ता है कि अगली हवाई लड़ाई के शुरू होने पर शायद ही कोई आदमी जमीन के ऊपर रहना पसन्द करेगा। हमको रामायण तथा पुराणों में किष्किन्धा प्रान्त तथा अन्य स्थानों में जिन भूगर्भ स्थित तथा गुफाओं में बसे नगरों का वर्णन मिलता है क्या आश्चर्य है कि वे ऐसे ही कारणों से बनाये गये हों। क्योंकि उन दिनों विमान बनाये ही जाते थे और 'दिव्य' अस्त्रों का प्रयोग भी लोग अच्छी तरह जानते थे।

हमारी समझ मे 'दिव्य' का अर्थ वैज्ञानिक या 'साइ-टिफिक' के सिवा और कुछ नही हो सकता। हाँ यह ठीक है कि उस समय की वैज्ञानिक क्रियाएँ आजकल से बिल्कुल दूसरी तरह की होंगी।

इन तमाम बातों पर गौर करने से जान पडता है कि अगली लडाई मे बडे-बडे शहरो मे रहना बहुत खतर-नाक होगा क्योंकि हर एक लडने वाला दुश्मन की राज-धानी और बडे-बडे शहरों को ही अपना निशाना बनायेगा जिसमे थोडी सी मेहनत से ज्यादा से ज्यादा आदमी मारे जा सके। इस लिये योरोप मे अभी से जहरीली गैस तथा हवाई जहाजो से फेके जाने वाले बमों से बचने के लिये बडे-बडे शहरों की आबादी को दूर-दूर बहुत से छोटे हिस्सो मे बाँट देने का प्रस्ताव किया जा रहा है। क्योंकि अगर लोग छोटे-छोटे गाँवों के रूप मे रहने लगे तो हर एक जगह हवाई जहाजों का पहुँच सकना मुशकिल होगा। इसमे तो शक ही नहीं कि अगली लडाई के समय और उसके बाद बडे-बडे शहरों का स्वरूप बहुत बदल जायगा। इससे भी पूरी तरह तो रक्षा नहीं हो सकेगी तो भी दुश्मन के हमले का असर कम जरूर हो जायगा।

—..—

राक्षसी-माया :—

जैसे-जैसे आदमियों की अक्ल बढती जाती है वे ताकत के बजाय तरकीब से ज्यादा काम लेने लगते हैं। दुनिया मे जितनी तरह के यत्र और मशीने देखने मे आती है वे इसी तरह तैयार हुई है। लडाई की विद्या मे भी हमको यही नियम दिखलाई पडता है। शुरू मे मनुष्य लाठी, गदा, वगैरह जैसे हथियारो को काम मे लाते थे। इनसे वे अपने दुश्मन को ऐसी चोट पहुँचाना चाहते थे जिससे उसका कोई अङ्ग कट कर अलग हो जाय अथवा उसका कचूमर निकल जाय। यह दुश्मन को मारने का सबसे मामूली या पाशविक तरीका था। जैसे जानवर नाखूनो और दाँतो से अपने शिकार को चीर-फाड डालता है उसी तरह की कोशिश मनुष्य भी करते थे। पर जैसे-जैसे उनकी अक्ल बढती गइ और वे शरीर-विज्ञान मे तरकी करते गये मारने के नये-नये तरीके निकलते गये। मनुष्यों को मालूम हो गया कि जो काम वे बहुत मिहनत से करते हैं

वही जरा से इशारे मे भी हो सकता है। अगर युक्ति से काम लिया जाय तो तलवार का काम सुई से भी निकल सकता है।

आजकल लडने वाले मुल्को मे जिन दम घोट कर मारने वाली जहरीली गैसो और बिजली के हथियारों का आविष्कार किया जा रहा है उनका उद्देश्य यही है। वे मनुष्य के दिल, फेफडे और भीतरी हिस्से पर ऐसा असर करते हैं जिससे उसकी मौत फौरन ही या थोडे ही वक्त मे तकलीफ सह कर हो जाती है। इस तरह जो काम आधी छटॉक की बन्दूक की गोली से होता है वही एक सरसो से कम दवा द्वारा हो जाता है। गोली लगने वाले आदमियो मे से बहुत से बच भी जाते हैं पर भीतरी अङ्गो मे खराबी उत्पन्न हो जाने पर बचना नामुमकिन सा हो जाता है। बिजली की लडाई इससे भी सूक्ष्म है। उसमे मनुष्य के किसी अङ्ग को किसी तरह का नुकसान नहीं पहुँचता, वह जैसा का तैसा दिखलाई पडता है, पर उसकी जान निकल जाती है। बिजली का हथियार न आँखों से दिखाई पडता है न उसमे किसी तरह की आवाज होती है, न किसी तरह की चेतावनी मिलती है—बस जरा सा धक्का लगता है और मनुष्य जहाँ का तहाँ ठण्डा हो जाता है। उसका असर मनुष्य के दिमाग अथवा ज्ञान तन्तुओं पर पडता है और एक सेकिण्ड से भी कम मे प्राणवायु बाहर निकल

जाता है। इसे चाहे आप इन्द्र का वज्र समझ लीजिये, चाहे ब्रह्मास्त्र समझ लीजिये, और चाहे मेघनाद की शक्ति समझ लीजिये।

रासायनिक युद्ध की तैयारी

आजकल कोई भी ताकतवर मुल्क ऐसा नही है जिसमे जहरीली गैस के बारे मे जॉच पडताल न की जा रही हो। योरोप और अमेरिका के सभी मुल्को मे इसके लिये बडी-बडी प्रयोगशालाये खोल दी गई है जिनके लिये वहा की सरकारे हर साल करोडो रुपया खर्च करती हैं। रासायनिक युद्ध की तैयारी के लिये हर एक मुल्क मे कमेटियाँ कायम कर दी गई हैं जिनमे वैज्ञानिक अथवा साइसदा लोगों के सिवा रासायनिक सामान तैयार करने वाले कारखानो के प्रतिनिधि और फौजी अफसर भी शामिल रहते है। ज्यादा-तर मुल्कों मे तो रासायनिक सामान के कारखानों की देखरेख फौजी अफसरों के सुपर्द कर दी गई है। अमरीका मे ऐसे सभी कारखानो मे रिजर्व सेना का एक-एक अफसर रख दिया गया है। रासायनिक सामान के कारखाने वाले, जिनको इस तैयारी से सब से ज्यादा फायदा होता है, इस प्रवृति को और भी बढावा देते रहते है।

रासायनिक युद्ध की तैयारी के लिये सन १९२५ मे अमेरिका का बजट ८७ लाख डालर था और इङ्गलैड मे सन्

१९२२ मे १ लाख ७० हजार पौंड खर्च किया गया था। फ्रांस और जर्मनी मे भी इसी तरह खर्च किया जाता है और यह बजट दिन पर दिन बढता ही जाता है। सिर्फ एक देश मे गैस के असर की जॉच करने के लिये एक वर्ष मे २१२९ जानवर काम मे लाये गये थे। इनमे ५ घोडे, ६ बन्दर, ५८ बकरियॉ, १२४ बिल्लियॉ, ११३६ खरगोश, ४०३ गिनिया पिग और बाकी चूहे थे। इनमे से ४४७ जानवर प्रयोग करते समय ही मर गये और ११३७ गैस के असर से बाद मे मरे।

अगर्चे अकेली जहरीली गैस का असर ही बडा भयङ्कर होता है, पर जब वह आजकल ईजाद की गई नई-नई लडाई की तरकीबों के साथ मिल जाता है तब तो आफत ही हो जाती है। आजकल सफेद फास्फरस, पैट्रोल तथा दूसरे रासायनिक पदार्थों से भर कर ऐसे बम बनाये जाते है जिनसे बडी पक्की इमारतों मे भी सहज मे आग लगाई जा सकती है। इसी तरह मकानों के उडाने वाले बम भी आजकल पिछले महायुद्ध की बनिस्बत बहुत जोरदार बनाये जाते हैं। इन दोनों तरह के गोलो और गैस को काम मे लाने के लिये हवाई जहाजों की भी दिन पर दिन तरक्की होती जाती है। इन तमाम बातों के मिल जाने से अब पहले की बनिस्बत बहुत थोडे वक्त मे बडे-बडे शहरों को चौपट किया जा सकता है।

कुछ समय हुआ अमेरिका के इथाका मुकाम मे होने वाली एक सभा मे बोलते हुये सर मैक्स मुसप्रेट ने कहा

था कि आजकल रसायन-विद्या की इतनी तरक्की हो गई है कि उससे थोडे ही समय में दूर दराज के मुकामों को आसानी से नष्ट किया जा सकता है। इसी तरह जनरल सर रैजिनाल्ड हार्ट ने 'हिबर्ट जर्नल' में लिखा था कि आगे चलकर जो लडाई होगी उसमें बडे-बडे शहर और जिले उनमें रहने वाले पुरुषो, स्त्रियो और बच्चो के साथ नष्ट कर दिये जायँगे। जहरीली गैस द्वारा चन्द घण्टों मे लाखो मनुष्य मारे जा सकेंगे। जनरल ग्रोव्स का, जो सन १९१८ मे अङ्गरेजी सेना का सचालन करते थे, कहना है कि दुश्मन के हवाई-हमले के प्रतिकार का असली उपाय सिर्फ एक ही है और वह यह कि उसके शहरो पर भी इसी तरह हमला किया जाय।

दूसरे कितने ही वैज्ञानिकों तथा फौजी मामलो के जानकारों की राय भी ऐसी ही है। हरवार्ड यूनीवर्सिटी के प्रोफेसर कैनन ने नि शस्त्रीकरण कान्फरेस की एक रिपोर्ट मे कहा था कि अगली लडाई मे कल कारखानो के खास मुकामों और शहरो की आबादी का जैसा नाश होगा उसका मुकाबला आजतक देखी गई या सुनी गई किसी घटना से नहीं हो सकता।

जर्मनी के लैफ्टिनेण्ट कर्नल बोल्के फौजी मामलो के मशहूर जानकार है। उन्होंने बर्लिन के प्रोफेसर हेबर को, जो गैस की लडाई को सबसे पहले ईजाद करने वाले माने जाते हैं, एक पत्र में लिखा था —

शामिल थे। फौजी अफसरों की रिपोर्ट से मालूम होता है कि इन २५० जहाजो मे से सिर्फ १६ जहाजों का पता सर्चलाइट के जरिये लग सका। पर फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि उन सब को नीचे गिराया जा सकता था। बाकी २३४ जहाज मनमानी कार्रवाई कर सकते थे। इस नकली हमले से यह साबित हो गया कि लन्दन को बचाने के लिये जो इन्तजाम किया गया है वह किसी काम का नही है, और अगर कोई दुश्मन उस पर हवाई हमला करे तो इसमे शक नहीं कि उसका एक बडा हिस्सा चौपट हो जायगा ।

पेरिस पर होने वाले नकली हमले का नतीजा भी ऐसा ही खतरनाक साबित हुआ था। उसे देख कर मशहूर प्रोफेसर लैङ्गवीन ने कहा था कि १०० हवाई जहाज, जिनमे एक-एक टन गैस के बम हो तमाम पेरिस के ऊपर २२ गज मोटा गैस का बादल पैदा कर सकते है। यह काम एक घण्टे में हो सकता है और अगर उस समय तेज हवा न चल रही हो तो पेरिस जरूर ही मुर्दों का शहर बन जायगा।

फ्रांस के दूसरे बडे शहर ल्योंस पर किये गये नकली हमले के बारे मे वहां के एक मशहूर अखबार ने लिखा था —

" फ्रांस के फौजी और सिविल महकमो के अफसर हाल के बडे नकली हवाई हमले को देखकर यह समझ गये है कि शहर की हिफाजत के लिये जो कुछ इन्तजाम सोचा गया है उससे कुछ भी काम नहीं निकल सकता। तमाम लोगों को गैस से बचाने वाली नकाब (मास्क) और कपडे दे सकना नामुमकिन है। इस लिये सिर्फ एक यही तरकीब काम दे सकती है कि हमले के वक्त ज्यादातर लोगों को शहर से हटा कर किसी हिफाजत की जगह पहुँचा दिया जाय।"

पर लोगों को कुछ घण्टो के लिये बाहर पहुँचा देना भी बेकार ही जान पडता है। क्योंकि अब ऐसे बम बनाये गये हैं जो ४ घण्टे से लेकर ३६ घण्टे या इससे भी ज्यादा समय में अपने आप फूटते हैं। इन बातों पर गौर करके रेड क्रास सोसायटी (लडाई के समय घायलों की सेवा करने वाला दल) के जलसे मे एक जर्मन स्वयम्सेवक ने कहा था —

" इसमे शक नही कि यदि बम कई घण्टे या कितने ही दिन बाद फूटेगे तो लोगों को बचा कर निकालने का या हिफाजत के दूसरे उपाय बेकार हैं। ऐसी हालत में बचाव की बढिया से बढिया तरकीब से भी कुछ लाभ नहीं हो सकता।"

जर्मनी के लेफ्टिनेण्ट जनरल अल्टाक ने एक मासिक-पत्र मे हवाई हमले की चर्चा करते हुये फ्रांस के बनाये उन बमों का हाल बतलाया है जिनका वजन २७५ से लेकर ५०० मन तक है। ऐसा एक ही बम दस-बीस मील के घेरे मे हर एक चीज को धूल मे मिला देगा। उन्होने एक ऐसे बिजली के आग लगाने वाले बम का भी वर्णन किया है जिसका बोझ अगर्चे ११ सेर ही है पर जो फौलाद की मोटी चद्दरों को भी खाक कर सकता है। इसके भीतर 'थर्माइट' नाम का मसाला भरा रहता है जिसके जलने से ३००० डिगरी की गर्मी पैदा होती है। इस गर्मी के सामने कोई चीज नही टिक सकती। पानी पडने से यह आग दुगुनी भडकती है। यह बम सिर्फ घरो मे ही आग नहीं लगायेगा बल्कि सडकों के नीचे लगाये हुये गैस के नल भी उसके असर से फट कर जलने लगेगे और जलती हुई गैस की लपटे ऊँचे मकानो की छतो तक पहुँच जायँगी। ऐसे समय मे जब सब लोग बहुत ही घबडाये और डरे हुये इधर-उधर जान बचाने के लिये भाग रहे होंगे दुश्मन के हवाई जहाज जहरीली गैस छोडेगे। उस समय गैस से बचने का ख्याल ही किसी को न आयेगा और न आग के मारे लोग बच कर निकल सकेंगे। ऐसे 'शैतानी-चक्र' से किसी तरह भी बच सकने की उम्मेद रखना बेकार है। इन्हीं बातों को निगाह में रख कर जर्मन हवाई सेना के

इन्सपेक्टर लेफ्टिनेंट सीगर्ट ने कहा है कि आजकल चन्द हवाई जहाज किसी भी मुल्क की राजधानी को थोड़ी ही देर में खाक में मिला सकते हैं।

प्रो० फिलिप नोल ब्रेकर ने, जो लीग आफ नेशंस में अङ्गरेजी सरकार की तरफ से काम करते हैं, अपनी 'निःशस्त्रीकरण' नामक पुस्तक में लिखा है कि अगली लड़ाइयों में हवाई जहाज ही सब से बड़ा हथियार समझा जायगा। वे कहते हैं —

"पिछले महायुद्ध में जर्मनी के हवाई हमले के सबब से लन्दन के रहने वालों को बड़ी तकलीफ उठानी पड़ी थी और हानि भी बहुत हुई थी। पर तो भी उस समय किसी हमले में हवाई जहाजों की तादाद ३६ से ज्यादा नहीं थी। पर आज कोई योरोपियन मुल्क अकेला या कई मुल्क मिल कर २४ घण्टे के भीतर कम से कम एक हजार जहाज इकट्ठे कर सकते हैं।

"ये हवाई जहाज जो बम गिरायेंगे उनमें से हर एक पिछले महायुद्ध में गिराये जाने वाले बमों से कहीं ज्यादा जोरदार होगा। सन १९१९ के लिये ही जर्मनी ने जो बम बनाये थे वे इतने जोरदार थे कि जहाँ वे गिरते वहाँ ८५० गज के भीतर कोई प्राणी जीवित नहीं बच सकता था। पर आजकल जो बम तैयार किये गये हैं उनकी ताकत इनसे

कहीं ज्यादा है। पिछले महायुद्ध मे साधारण शहरों पर जहरीली गैस का हमला नहीं किया गया था। पर अब हर एक मुल्क मे हवाई जहाजों को गैस की लडाई की तालीम दी जा रही है। अगर लडने वाले देश नि शस्त्रीकरण के अमल के मजूर करके आपस मे समझौता न कर लेगे तो इसमे जरा भी शक नहीं कि अगली लडाई मे सभी वडे शहरो को गैस के हमले का शिकार होना पडेगा। यह गैस पुरानी गैसों से जरूर ही बहुत ज्यादा तेज होगी। 'ल्यूमाइट' नाम की चीज ही ऐसी जहरीली है कि अगर किसी आदमी के बदन पर उसकी तीन बूँद भी गिर जायँ तो वह हर्गिज नहीं बच सकता।

"यह ख्याल कर सकना बहुत मुशकिल है कि बर्लिन, लन्दन या पेरिस जैसे बडे शहरो पर हवाई हमले का असर दरअसल कैसा पडेगा। जब कभी लन्दन मे जमीन के अन्दर सुरङ्ग मे चलने वाली रेल खराब होकर रुक जाती है तो कैसी बुरी हालत हो जाती है यह ज्यादातर लन्दन-निवासी जानते हैं। उस हालत से हम हवाई हमले की कुछ कल्पना कर सकते हैं। जब कि तमाम शहर मे गहरा अँधेरा छाया होगा, सडकों पर लाखों स्त्री, पुरुष, बच्चे ठसाठस भरे होंगे, और उसी मौके पर हवाई जहाज ऊपर से बमों को बरसा रहे होंगे तो ऐसे समय मे लोगो की क्या हालत होगी? हम सिर्फ इतना ही समझ सकते हैं कि हद दर्जे के खतरनाक

आग लगाने वाले, जहरीली गैस से भरे और उडाने वाले बमों के असर से ऐसे मुकाम पर मौत और बर्बादी के सिवा और कुछ दिखलाई न पडेगा। यह भी याद रखना चाहिये कि अगर ऐसा हमला रात के वक्त किया जाय तो उससे बचने की कोई तरकीब अभी तक नहीं मिल सकी है।"

रूस की भी एक लडाई के सम्बन्ध मे काम करने वाली संस्था ने नये ढङ्ग की युद्ध-विद्या की भयकरता के बारे मे ऐसे ही ख्यालात जाहिर किये हैं —

"लडाई के नये तरीके मे सब से खास बात यह है कि लडाई के मैदान से दूर बसे हुये दुश्मन के बडे-बडे शहरों, रेलवे जकशनों और कारखाने वगैरह को चौपट कर दिया जाय। सन् १९१४ की योरोपीय लडाई के बाद जो नई ईजादे हुई हैं उनसे यह मुमकिन होगया है कि एक हवाई जहाज हजार मन बोझा लाद कर एक हज़ार मील से ज्यादा तक उडता चला जा सकता है। इससे साफ जाहिर है कि जो मुकाम लडाई के मैदान से चार पाँच सौ मील की दूरी तक बसे होंगे उनका बच सकना मुशकिल होगा। नतीजा यह होगा कि अब लडने वाले देशों को अपनी फौज का ही नहीं बल्कि मुल्क मे रहने वाले साधारण लोगो की हिफाजत का भी पूरा-पूरा इन्तजाम करना पडेगा।"

लडाई का यह तरीका पुराने जमाने के युद्ध के

कायदों की निगाह से कितने नीचे दर्जे का है इस बारे मे जर्मन फौज के जनरल स्टाफ मे काम करने वाले जनरल वान मैएडर्स लिखते हैं —

"इसमे शक नही कि मौजूदा हालत मे जो मुल्क पहले हमला करेगा वह खास तौर पर फायदे मे रहेगा। इसका एक सबब तो यह है कि नये ढङ्ग के हवाई जहाजो की तेज चाल के जरिये दुश्मन के सर पर उसके तैयार होने से पहले ही पहुँचा जा सकता है। दूसरी बात यह है कि लडाई के मैदान के बाहर मुल्क मे रहने वाले साधारण लोगो पर हमला कर उनको सहज ही मे मारा जा सकता है। इस तरह निहथ्थे लोगो पर तलवार, बन्दूक से हमला करना, जो पुराने जमाने मे अथवा असभ्य-युग के नाम से पुकारे जाने वाले काल मे भी बडी बदनामी का काम समझा जाता था, आजकल लडाई की विद्या की खास बात बन गया है। यह बडे महत्व का मामला है और दुनिया के सभी मुल्को के लोगों को इस पर गौर करना चाहिये।"

पर इन बातो के साथ हमको यह जरूर याद रखना चाहिये कि आजकल सभी मुल्को का फौजी सगठन पहले जमाने की बनिस्बत बिल्कुल बदल गया है। इस सबब से लडाई की विद्या मे बदलाव होना भी लाजिमी है। इस बात की सचाई को 'लीग आफ नेशस' की एक रिपोर्ट मे भी माना गया है। उसमे लिखा है —

"यह बात कही जा सकती है कि लड़ाई की विद्या मे यह बदलाव बहुत ही खतरनाक है और मनुष्य जाति की अन्तरात्मा जरूर ही उसकी मुखालफत करेगी। इसे उचित मानते हुये भी हम इस बात को भुला नहीं सकते कि आजकल की लड़ाइयो मे मुल्क के सभी वाशिन्दो को किसी न किसी हद तक भाग लेना पड़ता है। पिछली योरोपियन लड़ाई मे यह बात बहुत अच्छी तरह साबित हो चुकी है। इन हालत मे कोई ऐसा देश जो भले-बुरे की पर्वाह नहीं करता दुश्मन की फौज और उन शहरों मे, जहाँ से उसे लड़ाई का सामान मिलता है, ज्यादा फर्क नही समझेगा। वह दोनो के ऊपर बिना सकोच के जहरीली गैस छोडेगा।'

गैसों का असर

यहाँ तक हमने हवाई जहाजों द्वारा होने वाले सब तरह के मिले हुये हमलो का जिक्र किया, पर सिर्फ गैस का असर भी बड़ा भयकर होता है।

पिछली योरोपियन लड़ाई मे सब से पहले यप्रेस की लड़ाई मे, जो अप्रेल १९१५ मे हुई थी, जहरीली गैस काम में लाई गई थी। यह बहुत मामूली गैस थी तो भी इसके असर से ६ हजार सिपाही मारे गये। इनकी मौत कितनी तकलीफ सहकर हुई इसका हाल एक जानकार ने इस तरह बतलाया है —

'भयकर खाँसी और मुश्किल से साँस ले सकने क

सबब से इन लोगों की शक्ल बिगड गई थी। फेफड़ों के भीतर खून में खराबी पैदा हो जाने से दम घुट रहा था। यह तकलीफ कई घण्टे या कई दिन या कई सप्ताह तक जारी रहती थी। आखीर में मुँह से खून के कुल्ले होने लगते थे और बीमार मर जाता था। कहा जाता है कि इन सिपाहियों के इस तरह तडप-तडप कर मरने को देखकर कितने ही लोग जर्मनी को दिल से नफरत करने लगे थे। जो कोई उन सिपाहियों के नीले पडे हुये और भयानक चेहरों को और उनके मुँह तथा नाक से निकलते हुये खून के झागों को देखता था उसके दिल में अपने आप यह ख्याल पैदा हो जाता था कि जर्मनी वाले पूरे राक्षस हैं।"

इस गैस का नाम 'क्लोरीन' था। यह नाक या मुँह के भीतर जाते ही खाँसी और दूसरी खराबियाँ पैदा करती है और इस लिये इसका पता फौरन लग जाता है। यह देख कर जल्दी ही इसको काम में लाना रोक दिया गया और ऐसी नई-नई गैसें इस्तेमाल की जाने लगीं जिनका जल्दी पता न लगे और दुश्मन धोखे में मारा जाय। गैस की लडाई के तरफदार इसको दूसरी तरह की लडाइयों से अच्छा बतलाते हैं। उनका कहना है कि इससे मामूली तकलीफ पाकर जान निकल जाती है। इसके सिवा इसमें आदमी भी थोडे ही मारे जाते हैं। यह बात शायद पिछली योरोपियन लड़ाई में सच रही हो, पर आजकल तो हर रोज ऐसी नई से नई तेज गैसें

निकाली जा रही है जिनका एक जर्रा भी आदमी को मार सकता है और जो दो-चार घण्टे मे ही बडे-बडे शहरो को वीरान बना सकती हैं ।

कुछ मशहूर गैसें

इन गैसो के बहुत से नाम है। इनमे से एक 'फोसजीन' कहलाती है। किसी चूहे को पानी मे डुबाकर मारने से जैसी तकलीफ होती है वही हालत इस गैस से आदमी की होती है। इसमे मनुष्य के फेफडे ख़ून से भर जाते हैं और साँस लेना मुशकिल हो जाता है। एक और गैस है जो 'मस्टार्ड गैस' के नाम से मशहूर है। यह दरअसल धुँये की तरह नहीं बल्कि पानी की तरह होती है। इसको हवाई जहाज से एक फव्वारेदार पिचकारी के जरिये जमीन पर छिडक दिया जाता है। यह भारी होती है और जिन चीजों पर पडती हैं उन पर ओस की तरह जम जाती हैं। यह न आँखों से दिखलाई पडती है और न सूघने से कुछ पता चलता है। जिस तरह प्लेग, हैजा वगैरह के कीडे छुपे तौर पर आदमी पर हमला करते है उसी तरह यह गैस भी अनजान में घात लगाये पडी रहती है। जब कोई आदमी पास होकर निकलता है तो यह उसके जूतों या कपडों मे लग जाती है और इस तरह घरों के भीतर जा पहुँचती है। वहाँ गर्मी पाकर यह हवा मे मिल जाती है और बिना किसी गुमान के साँस

के जरिये शरीर के भीतर पहुँच जाती है। इसका असर ६ घण्टे से १८ घंटे के दरम्यान मालूम पडता है और इस बीच मे यह आदमी शरीर पर इतना कब्जा कर लेती है कि फिर उससे बच सकना करीब-करीब नामुमकिन हो जाता है।

इस गैस के सबब से आदमी की देह पर फफोले पड जाते है, ऑखे सूज जाती है और नाक तथा सॉस लेने की नली मे जलन होने लगती है। अगर हवा मे इस गैस का पचास लाखवा हिस्सा भी मिला हो तो भी उससे आदमी बीमार हो जाता है और कई दिनो या महीनो बाद वह मर जाता है। इसका असर देह के भीतरी हिस्से पर ठीक वैसा ही पडता है जैसा कि सॉप के काटने का। अगर किसी तरह इसका असर मिट कर आदमी की जान बच भी जाय तो भी वह हमेशा के लिये इतना कमजोर हो जाता है और उसकी तन्दुरुस्ती ऐसी खराब हो जाती है कि वह किसी भी बीमारी का सहज ही मे शिकार हो सकता है और दो चार वर्ष मे जरूर मर जाता है। पिछली लडाई मे इसी सबब से हजारो सिपाही वर्षो बाद तपेदिक वगैरह से रोगी होकर मरे थे।

इन गैसों से बचने के लिये जो तरह-तरह की 'मास्क' (मुँह और नाक पर लगाया जाने वाला तोबडे की शक्ल का यंत्र) निकाली गई है उनको बेकार करने के लिये एक और गैस काम मे लाई जाती है जिसको 'ब्लू क्रास' कहते है। यह बहुत बारीक धूल की तरह होती है और मास्क के भीतर

घुस कर ऐसे जोर से छींक और उल्टी लाती है कि मनुष्य 'मास्क' हटाने को लाचार हो जाता है। तब उसे सहज ही में दूसरी जहरीली गैसों से मारा जा सकता है। 'ब्लू क्रास' गैस से मनुष्य बेहोश भी हो सकता है।

एक गैस संखिया से बनाई जाती है जो अगर हवा में बहुत थोड़ी भी मिली हो तो भी आदमी का काम तमाम कर देती है। सन् १९१८ में जाँच के लिये इस गैस को बहुत हल्के रूप में बकरियों के एक झुंड पर छोड़ा गया था। इसके सबब से चार को छोड़ कर सभी बकरियाँ फौरन मर गईं और ये चार भी जहर की गर्मी से ऐसी बेचैन हो गईं कि उन्होंने दीवार से माथा टकरा-टकरा कर जान देदी। हिसाब लगाने वालों ने बतलाया है कि दो हवाई जहाजों में इस गैस के इतने गोले भरे जा सकते हैं कि उनमें लन्दन या न्यूयार्क जैसा बहुत भारी शहर पूरी तरह से नष्ट किया जा सकता है।

जहरीली गैसों की तरक्की

यहाँ तक हमने नमूने के तौर कुछ ऐसी गैसों का हाल लिखा है जो सब जगह मशहूर हैं और जिन्हें सभी वैज्ञानिक जानते हैं। इनके सिवा और भी बीसियों तरह की जहरीली गैस लड़ने वाले मुल्कों को मालूम है, पर उन सब का हाल इस थोड़ी सी जगह में लिख सकना कठिन है। बहुत सी गैसें ऐसी भी हैं जिनका भेद अभी तक गुप्त है और हम लोग उनके बारे में सिर्फ अफवाहें सुना करते हैं।

मिसाल के तौर पर कुछ दिनों पहले अखबारों मे छपा था कि फ्रांस के दो इत्र बनाने वालों को सयोगवश एक ऐसी तेज गैस का पता लग गया है जो थोडी सी ही हजारो आदमियो को चन्द सैकिण्डों मे मार सकती है। इसी तरह जर्मनी के बारे मे कहा जाता है कि उसने ऐसी भयङ्कर गैसे तैयार कर रखी हैं जो सात पर्दे के भीतर छुपे आदमी को भी पल भर मे खत्म कर सकती हैं। इङ्गलैंड, अमरीका, रूस, इटली, जापान आदि बडे-बडे मुल्कों के फौजी महकमे वाले भी इस तरह के बहुत से भेदों को छिपाये बैठे है। इनका सच्चा हाल तो लडाई छिडने पर ही खुलेगा पर इतना जरूर कहा जा सकता है कि इन दिनो जहरीली गैसो के बारे मे बहुत तरक्की की गई है और समय आने पर उनसे दुनिया का बेहद नाश होगा।

इस बारे मे एक बडे डर की बात यह है कि जिस जगह जहरीली गैस छोडी जाती है वहाँ तो उससे लोग मरते ही हैं पर जब वह हवा में मिल कर दूर-दूर के देशो तक जा पहुँचती है तो वहां भी शायद उसका थोडा बहुत असर पडता है। इस सन्देह का कारण यह है कि हाल ही मे इटली-अबीसीनिया की लडाई के खत्म होने पर यह सुनने मे आया था कि इराक के एक भाग मे एक अजीब बीमारी फैली है जिससे कई सौ लोग पागल और अन्धे होकर मर गये। कुछ लोगों का कहना है कि यह बीमारी उस जहरीली गैस के सबब

स ही पैदा हुई है जो इटली वालों ने अबीसीनिया पर चलाई थी। हम नहीं कह सकते कि यह बात कहाँ तक सच है, पर अगर दुनिया के किसी हिस्से में बहुत ज्यादा जहरीली गैस छोड़ी गई तो दुनिया के दूसरे हिस्सों में भी उसका थोड़ा बहुत असर पड़ना और उससे तरह-तरह की बीमारियाँ फैलना ताज्जुब की बात नहीं है।

लड़ाई में बिजली का इस्तेमाल

बम और जहरीली गैसों से संतुष्ट न होकर लड़ने वाले देश और भी भयङ्कर हथियार बनाने की कोशिश कर रहे हैं। इस बारे में हम पिछले दो-तीन साल से बिजली के हथियारों की बहुत चर्चा सुन रहे हैं। कभी पढ़ने में आता है कि जर्मनी ने एक ऐसी मृत्यु-किरण तैयार करली है जो एक पल में बड़ी-बड़ी फौजों का खात्मा कर सकती है। कभी खबर आती है कि फ्रांस में बिजली की ऐसी बन्दूक बनाई गई है जिसे हर जगह साथ में रखा जा सकता है और जिससे इच्छानुसार लोगों को मारा या बेहोश किया जा सकता है। कभी अमरीका और इङ्गलैण्ड में बिजली की ऐसी लहर के आविष्कार की बात सुनी जाती है जिससे हवाई जहाजों को गिराया जा सकता है, पानी के जहाजों को डुबाया जा सकता है और गोले-गोलियों से भरी मैगजीनों को उड़ाया जा सकता है।

इस समय यह कह सकना बहुत ही मुश्किल है कि इन खबरों में कहाँ तक सचाई है। इतना जरूर सच है कि

पिछले दस-पाँच साल मे जर्मनी और दूसरे मुल्को के भी वैज्ञानिक बिजली से मारने का काम लेने की तरकीब ढूंढने मे लगे है, और उनको कुछ कामयाबी भी हुई है। पढने म आया है कि इङ्गलैण्ड के वैज्ञानिक कुछ फासले से चूहे और दूसरे छोटे जानवरो को मारने मे सफल हुए हैं। पिछले दिनो यह खबर भी तमाम अखबारो मे बडे जोरो से छपी थी कि जर्मनी के किसी वैज्ञानिक ने मोटरो और हवाई जहाजो को रोकने की तरकीब निकाल ली है। इस विषय मे जो मनोरजक सम्वाद अखबारो मे प्रकाशित हुआ था उसे हम नीचे देते हैं —

"वीना (आस्ट्रिया की राजधानी) की सडक पर मि० 'हर' की मोटर दौड रही है—घडी मे सात बज कर पाँच मिनट हुये है। खर्र-खर्र-खर्र करके मोटर खडी हो गई। ड्रायवर हैरान है कि यह क्या हुआ। वह उतर कर इञ्जिन की जाँच करता है तो कोई खराबी नही पाता। इतने मे चौराहे पर खडा पुलिसमैन आकर कहता है :—

"घबराओ नही, तुम्हारी मोटर दुरस्त है। पाँच मिनट ठहरे रहो, वह चलने लगेगी।"

"क्यो ? बात क्या है ?"

"सुनने मे आया है कि एक वैज्ञानिक अपने आविष्कार की परीक्षा कर रहे है।"

"वह कैसा आविष्कार है जिससे मोटर रुक जाती है।"

"इतना ही नहीं, सुनते है उससे बडे-बडे चमत्कार होते हैं।"

"ये बातें हो ही रही थीं कि पीछे रुकी हुई मोटरें पों-पों करती आगे बढ़ने लगीं। मालूम हुआ कि इस लाइन की सभी मोटरें इसी तरह अपने आप रुक गई थीं।"

पर इन सब बातों के होते हुए भी ये तमाम खबरें बहुत नमक मिर्च लगा कर फैलाई गई जान पड़ती हैं। जिम्मेदार आदमियों के बयानों से जहाँ तक अनुमान लगाया जा सकता है, अभी तक ऐसी बिजली की लहर या किरण नहीं बन सकी है जिसे आसानी के साथ हर जगह काम में लाया जा सके और जिससे हजारों, लाखों लोगों को फौरन ही मारा जा सके। ज्यादा से ज्यादा इतना कहा जा सकता है कि इस सम्बन्ध में वैज्ञानिकों ने कुछ सिद्धान्त मालूम कर लिये हैं और शायद अगली लड़ाई शुरू होने तक वे इतनी तरक्की कर सकें जिससे बिजली के जरिये दूर से मनुष्यों को मारा जा सके।

इस बारे में बहुत तरह की बातें पढ़ने के बाद एक बात हमको और भी जान पड़ती है कि कम से कम कुछ समय तक तो बिजली से सिर्फ आत्म-रक्षा का काम ही लिया जा सकेगा, उसके जरिये हमला करना मुमकिन न होगा। कारण यह है कि बिजली का इस तरह का प्रयोग पावर-हाउस द्वारा ही किया जा सकेगा, और दुश्मन के देश में पहुँच कर पावर-हाउस एक दिन में तैयार हो नहीं सकता। यह कल्पना करना कि हम अपने देश की हद में बैठे-बैठे ही सैकड़ों मील की दूरी से दुश्मन पर बिजली से हमला कर सकें इस समय सम्भव नहीं जान पड़ता। पर

भविष्य के सम्बन्ध मे कुछ कहना कठिन है। यदि वैज्ञानिक लोग इसी कोशिश मे लगे रहे और उनको कामयाबी हुई तो फिर एक निगाह मे इन्द्र का वज्र मनुष्य के हाथ मे आ जायगा। जब चारो ओर से ये वज्र लोगो पर छूटने लगेगे उस समय न मालूम दुनिया का क्या हाल होगा ।

परमाणुओं द्वारा युद्ध

इस तरह साफ जाहिर है कि मनुष्य लडाई के लिये दिन पर दिन अधिक सूक्ष्म पर ज्यादा जोरदार और नाश करने वाली शक्तियो का पता लगाने की कोशिश कर रहा है। यह कह सकना बड़ा कठिन है कि इसका आखिरी नतीजा क्या होगा। अगर्चे अभी तक जो आविष्कार हो चुके हैं वे ही दुनिया मे प्रलय कर सकने को काफी हैं, पर यह कहना कि अब इनसे भयकर हथियार तैयार नही होगे भूल है। इस दुनिया मे कोई चीज़ एक सी हालत मे तो ठहर ही नही सकती। वह या तो बढ़ेगी या घटेगी, ऊपर चढेगी या नीचे को ओर गिरेगी। इस नियम के मुताबिक नाश के इतने उपाय निकल आने पर भी अभी ऐसे उपायो की कल्पना की जा रही है जिनके सामने जहरीली गैस और बम कुछ भी नही है।

इन मे सब से मुख्य है परमाणुओ (Atoms) की ताकत से काम लेना। इस बारे मे वैज्ञानिक लोग वर्षो से खोज कर

रहे हैं और यह साबित कर दिया गया है कि ससार की हर एक चीज मे बेहद ताकत भरी है। मिसाल के तौर पर वे कहते है कि एक गिलास पानी मे इतनी ताकत है कि वह एक मजबूत किले को उडादे। एक डोल पानी दस-बीस लाख आबादी वाले बडे शहर का सत्यानाश कर सकता है। पर सवाल यह है कि इस ताकत को किस तरह काम मे लाया जाय। वैज्ञानिक लोग बहुत दिनो से इस फेर मे पड़े हैं, पर अभी तक इस कल्पना को अमली रूप नही दिया जा सका है। पर यह तो कोई कह ही नही सकता कि जो काम अब तक नही हो सका है वह आगे चल कर भी नहीं हो सकेगा। इतना ही क्यो। पुरानी कथाओ और पुराणो के पढ़ने से तो जान पडता है कि पुराने जमाने मे शायद कुछ लोगो ने इस भेद को जान लिया था। जब हम सुनते हैं कि अमुक ऋषि ने शाप से या मन्त्र पढ कर अकेले ही हजारो आदमियो को मार दिया या किसी नगर या देश को भस्म कर दिया तो यही ख्याल होता है कि उन लोगों के पास कोई ऐसी ताकत रही होगी जिसे बाद मे अनजान लोग मन्त्र या जादू के नाम से पुकारने लगे। ऐसी हालत मे कोई आश्चर्य नही कि एक दिन हम अचानक सुने कि किसी देश के एक वैज्ञानिक ने परमाणुओ की ताकत से काम लेना जान लिया है और अब वही ससार भर मे सब से ज्यादा शक्तिशाली आदमी है। अब भी अनेक लेखक आगे होने वाली लडाइयो मे परमाणुओ की शक्ति के बमो का वर्णन कर चुके है। उनके कहने के मुताबिक

ये बम आजकल के बमो की तरह एक ही बार धडाका हो कर खत्म नहीं हो जायँगे। बल्कि वे जहाँ गिरेंगे वहाँ एक छोटा सा ज्वालामुखी बना देगे और परमाणुओ की शक्ति से बराबर वर्षों तक फूटते रहेगे। उनके टुकडे उछट-उछट कर जहा गिरने जायँगे वहा भी इसी तरह नाश होने लगेगा। इस तरह इन परमाणुओ का एक ही बम थोडे समय मे पचासो कोस लम्बी-चौडी जमीन को नष्ट-भ्रष्ट कर देगा। ऐसी हालत आ जाने पर या तो ससार मे से आदमियो का नाम निशान ही मिट जायगा या फिर उनको लड़ना-भिडना छोड कर प्रेम-पूर्वक रहना सीखना पड़ेगा। कुछ भी हो इसमे शक नही कि यह भविष्य का एक महा भयकर चित्र है।

— ० —

अगली लड़ाई के सम्बन्ध में भविष्य-वाणियां:—

आजकल भविष्य-वाणी करना बड़ा सहज काम हो गया है। जिस अखबार को उठाइये आपको महायुद्ध भूकम्प और दूसरी प्रलयकारिणी घटनाओं की कोई भविष्यवाणी मिल ही जायगी। इनमें से कितने ही भविष्यवक्ता तो ठीक-ठीक तारीख़ और घण्टा-मिनट तक बतला देते हैं। यह कहने की जरूरत नहीं कि ऐसी सैकडो भविष्यवाणियों में से अभी तक एक भी पूरी तरह सच्ची साबित नहीं हुई है। संयोगवश एकाध घटना किसी की मिल गई तो दूसरी बात है।

कारण यही है कि जो लोग भविष्यवाणियां प्रकाशित कराते हैं उनमें से ज्यादातर ऐसे होते हैं जिनका ज्ञान और अनुभव बहुत थोड़ा होता है और वे सिर्फ अपना नाम मशहूर

करने के ख्याल से ऐसा करते है । हाल ही मे ऐसे ही एक ज्योतिषी पर तो मुकदमा चलाये जाने की नौबत आ गई थी ।

हमारे कहने का मतलब यह नहीं कि गणित और फलित ज्योतिष विद्या झूठी हैं। आजकल की वैज्ञानिक खोजो से भी साबित होता है कि उनमे थोड़ो-बहुत सचाई जरूर है। पर जो लोग इन भविष्यवाणियो को कर रहे हैं वे इन विद्याओ के सत्य सिद्धान्तो से प्राय अनजान हैं। इतना ही नहीं आजकल तो इस देश के पंचाङ्गो का गणित ही ऐसा अशुद्ध हो गया है कि उनसे ग्रहों की चालो का कुछ भी ठीक पता नहीं चलता। ऐसी हालत मे उनके आधार पर जो गणना की जायगी वह कैसे ठीक उतर सकती है।

इसलिए हम यहा इन ज्योतिषियो की भविष्यवाणियो को छोडकर हमारे देश के धार्मिक ग्रन्थ श्रीमद्भागवत्, महाभारत आदि और ईसाइयो की बाइबिल मे दी गई भविष्यवाणियों का वर्णन करते हैं। ये भविष्यवाणिया अगर्चे गूढ भाषा मे हैं तो भी मौजूदा लक्षणो से उनका मिलान करके हम कुछ अन्दाज कर सकते हैं। इसके सिवा हम पश्चिमी ज्योतिषशास्त्र के आचार्य शेरो साहब और एकाध अन्य महात्मा की भविष्य-वाणी की भी चर्चा करेगे जो अपनी आध्यात्मिक-शक्ति से होनहार को जानने की सामर्थ रखते है।

युग परिवर्तन के सम्बन्ध में हिन्दू धर्म-ग्रन्थों का मत

जिस तरह हिन्दुओ की सभ्यता और धर्म दूसरे देश वालो से विल्कुल अलग है उसी तरह उनको काल-गणना के नियम भी एक दम निराले हैं । उन्होने सतयुग, त्रेता, द्वापर और कलियुग के नाम से जिन चार युगो की कल्पना की है वह और किसी देश या धर्म वालो मे नही पाई जाती । यद्यपि पश्चिमी-साहित्य मे इतिहास के किसी काल को 'गोल्डिन एज' (सुवर्ण-युग) और किसी को 'डार्क एज' (अधकार-युग) के नाम से पुकारा गया है पर वह हमारे यहां के युगो से विल्कुल अलग वात है ।

अगर आप आज किसी साधारण से साधारण हिन्दू धर्मानुयायी से पूछे तो वह फौरन जवाव देगा कि आजकल कलियुग चल रहा है । शायद वह यह भी जानता हो कि कलियुग की अवधि ४ लाख ३६ हजार वर्ष की है जिसमे से अभी ५ हजार वर्ष वीते हैं ।

इस युग-सम्बन्धी खास कर कलियुग के सिद्धान्त ने हमारे देश मे वडा गजव ढाया है । अच्छे कामो से दूर रहने और बुरे कामो के करने का लोगो को यह वडा सहज वहाना मिल गया है । लोगो से किसी भी हानिकारक प्रथा को दूर करने को कहा जाय वे फौरन कलियुग की दुहाई देने लगते हैं । वाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, विधवा-विवाह निषेध स्त्रियो को

पराधीन दशा में रखना, अछूतों के साथ निन्दनीय व्यवहार, जातपांत के नियमों की कठोरता आदि हर एक बुरी बात के लिये कलियुग का प्रमाण दिया जाता है। कहा जाता है कि कलियुग मे तो यह सब होना ही है। इन लोगों को अपने मत का समर्थन करने के लिये कुछ धर्म-ग्रन्थ भी मिल जाते हैं जो हिन्दुओं की अधोगति के जमाने में और कितने ही तो मुसलमानों की हकूमत के समय में मतलबी और अदूरदर्शी लोगों ने बना कर रख दिये हैं।

पर अब लोगों की आंखे खुलने लगी हैं और विद्वान लोग प्राचीन तथा प्रमाणिक धर्म-ग्रन्थों को खोजकर यह सिद्ध कर रहे हैं कि आजकल यह युग-सिद्धान्त जिस रूप में फैला हुआ है वह ठीक नहीं है। उसके वर्षों का जो हिसाब बतलाया जाता है वह बिल्कुल गलत है। इनके मत से अब कलियुग समाप्त हो गया है और सतयुग शुरू हो रहा है। इन विद्वानों की खोजों का साराश हम नीचे देते है।

आजकल हमारे देश के ज्यादातर मनुष्य जो यह समझे बैठे हैं कि हिन्दू धर्म-ग्रन्थों तथा ज्योतिष-ग्रन्थों मे सब जगह युगों का हिसाब एक सा ही माना गया है वे बड़ी भूल करते हैं। प्राचीन ग्रन्थों में अनेकों प्रकार के युगों का वर्णन मिलता है। युगों का नाम सबसे पहले वेदों की संहिताओं मे आया है। उसके अनुसार यज्ञ करने के लिये वर्ष को तीन-तीन महीने के चार हिस्सों मे बांट कर उनका नाम युग रखा गया था। फिर वैदिक

ग्रन्थो मे ही पाँच वर्ष और बारह वर्ष के युगो का उल्लेख है। बारह वर्ष का युग तो आजकल भी माना जाता है। इसके सिवा ज्योतिष सम्बन्धी गणना के लिये और भी कई तरह के छोटे-बडे युग माने गये है जिनमे से एक तो ४३लाख २० हजार वर्ष का है।

धार्मिक क्रियाओ के लिये चारो युगो का परिमाण प्राचीन ग्रन्थो और स्मृतियो मे बारह हजार वर्ष का बतलाया गया है। इनका हिसाब मनुस्मृति मे इस तरह दिया गया है —

ब्राह्मस्यतु क्षपाहस्य यत्प्रमाण समासत ।
एकैकशो युगानान्तु क्रमशस्तन्निबोधत ॥ ६८
चत्वार्याहु सहस्राणि वर्षाणा तु कृत युग ।
तस्यतावत् शती सध्या सध्याशश्च तथाविध ॥६९
इतरेषु स सध्येषु ससध्याशेषु च त्रिषु ।
एकापायेन वर्त्तन्ते सहस्राणि शतानिच ॥ ७०
(अ० १—६७)

"ब्रह्मा के अहोरात्र में सृष्टि के उत्पन्न होने और नाश होने से जो युग माने जाते है उनका क्रम यहा बतलाते है। चार हजार वर्ष का सतयुग और इतने ही सैकडे की उसकी पूर्व सधि और उतनी ही उत्तर सन्धि। इसी क्रम से तीन हजार को तीन-तीन सौ की, दो हजार को दो-दो सौ की, एक हजार को एक-एक सौ की सधि होती है।"

पराधीन दशा मे रखना, अछूतो के साथ निन्दनीय व्यवहार, जातपांत के नियमो की कठोरता आदि हर एक बुरी बात के लिये कलियुग का प्रमाण दिया जाता है। कहा जाता है कि कलियुग मे तो यह सब होना ही है। इन लोगो को अपने मत का समर्थन करने के लिये कुछ धर्म-ग्रन्थ भी मिल जाते हैं जो हिन्दुओ की अधोगति के जमाने मे और कितने ही तो मुसलमानो की हकूमत के समय मे मतलबी और अदूरदर्शी लोगो ने बना कर रख दिये हैं।

पर अब लोगो की आखे खुलने लगी है और विद्वान लोग प्राचीन तथा प्रमाणिक धर्म-ग्रन्थो को खोजकर यह सिद्ध कर रहे हैं कि आजकल यह युग-सिद्धान्त जिस रूप मे फैला हुआ है वह ठीक नही है। उसके वर्षो का जो हिसाब बतलाया जाता है वह बिल्कुल गलत है। इनके मत से अब कलियुग समाप्त हो गया है और सतयुग शुरू हो रहा है। इन विद्वानो की खोजो का सारांश हम नीचे देते हैं।

आजकल हमारे देश के ज्यादातर मनुष्य जो यह समझे बैठे हैं कि हिन्दू धर्म-ग्रन्थो तथा ज्योतिष-ग्रन्थो मे सब जगह युगो का हिसाब एक सा ही माना गया है वे बड़ी भूल करते है। प्राचीन ग्रन्थो मे अनेको प्रकार के युगो का वर्णन मिलता है। युगो का नाम सबसे पहले वेदो की सहिताओ मे आया है। उसके अनुसार यज्ञ करने के लिये वर्ष को तीन-तीन महीने के चार हिस्सो में बांट कर उनका नाम युग रखा गया था। फिर वैदिक

ग्रन्थो मे ही पांच वर्ष और बारह वर्ष के युगो का उल्लेख है। बारह वर्ष का युग तो आजकल भी माना जाता है। इसके सिवा ज्योतिष सम्बन्धी गणना के लिये और भी कई तरह के छोटे-बडे युग माने गये हैं जिनमे से एक तो ४३लाख २० हजार वर्ष का है।

धार्मिक क्रियाओ के लिये चारो युगो का परिमाण प्राचीन ग्रन्थो और स्मृतियो मे बारह हजार वर्ष का बतलाया गया है। इनका हिसाब मनुस्मृति मे इस तरह दिया गया है.—

ब्राह्मस्यतु क्षपाहस्य यत्प्रमाणं समासत.।
एकैकशो युगानान्तु क्रमशस्तन्निबोधत ॥ ६८
चत्वार्याहु सहस्राणि वर्षाणा तु कृत युग।
तस्यतावत् शती सध्या सध्याशश्च तथाविधः ॥६९
इतरेषु स सध्येषु ससध्याशेषु च त्रिषु।
एकापायेन वर्त्तन्ते सहस्राणि शतानिच ॥ ७०

(अ० १—६७)

"ब्रह्मा के अहोरात्र में सृष्टि के उत्पन्न होने और नाश होने मे जो युग माने जाते हैं उनका क्रम यहाँ बतलाते है। चार हजार वर्ष का सतयुग और उतने ही सैकडे की उसकी पूर्व सन्धि और उतनी ही उत्तर सन्धि। इसी क्रम से तीन हजार को तीन-तीन सौ की, दो हजार को दो-दो सौ की, एक हजार को एक-एक सौ की सधि होती है।"

इस प्रमाण के अनुसार युगो का हिसाब इस प्रकार समझना चाहिये—

सतयुग	४८००
त्रेता	३६००
द्वापर	२४००
कलियुग	१२००
	१२०००

भागवत् मे भी ठीक ऐसा ही हिसाब मिलता है। दर-असल ये युग क्रम से ४०००, ३०००, २००० और १००० वर्ष के माने गये हैं। पर हर एक युग के शुरू और आखीर मे कुछ समय ऐसा होता है जब कि उसका धीरे-धीरे आविर्भाव और लोप होता है। इसी का नाम सन्धि-काल है। सतयुग के दोनो सन्धि-काल ४००-४०० वर्ष के, त्रेता के ३००-३०० वर्ष के, द्वापर के २००-२०० वर्ष के और कलियुग के १००-१०० वर्ष के माने गये हैं। इस हिसाब से चारो युगो के पूरे १२००० सौ वर्ष हो जाते हैं।

अब यह सवाल पैदा होता है कि यह कैसे जाना जाय कि इस हिसाब के अनुसार कलियुग बीत चुका है। इसका सबसे बडा सबूत तो आजकल होने वाली घटनाये हैं। पिछले कई वर्षों से दुनिया मे जैसी उथल-पथल मची है और आगे जिसके लक्षण दिखलाई पड रहे हैं वह युग-परिवर्तन का पक्का

सबूत है । कुछ थोडे से स्वार्थी लोगो की बात तो छोड दीजिये, पर अगर आप निष्पक्ष होकर अपने मन मे विचार करेंगे तो आपको साफ मालूम पडेगा कि पिछले कुछ वर्षों से हमारे देश और समाज की कायापलट होने लग गई है। जितनी भी खराबियाँ और बुराइयाँ पाई जाती हैं उन सब के खिलाफ आन्दोलन उठ खडा हुआ है और बहुत से लोग अपने हानि-लाभ तथा कष्टो का खयाल न करके उनके सुधार मे लग गये हैं। क्या राजनैतिक, क्या सामाजिक, क्या धार्मिक और और क्या आर्थिक सभी क्षेत्रो मे हर रोज उन्नति के, सुधार के ऐसे-ऐसे उदाहरण देखने मे आ रहे हैं जिनका पहले कोई जिक्र ही न था। यही हालत ससार के सभी मुल्को की है। टर्की ईरान, अरब, मिश्र आदि जो देश सैकडो वर्षों से बुरी हालत मे पड़े थे और जहाँ सिर्फ धर्मान्धता का ही दौरदौरा था वे पिछले दस-पन्द्रह वर्षों मे बिलकुल नये साँचे मे ढल गये है। योरोप और अमेरिका के देश अगर्चे धन और विद्या की निगाह से पहले भी तरक्की पर थे पर आजकल वहा भी सामाजिक सगठन मे आश्चर्य-जनक परिवर्त्तन और नामुमकिन समझे जाने वाले सुधार हो रहे हैं और आगे चल कर और जोरो के साथ होगे।

पुराना युग खतम होकर नया युग शुरू होने का दूसरा प्रमाण महाभारत और भागवत आदि ग्रन्थो से ही मिलता

है । युग-परिवर्त्तन के सम्बन्ध मे महाभारत के वन-पर्व में लिखा है .—

ततस्तुमुल सघाते वर्तमाने युग क्षये । ८८
द्विजातिपूर्वको लोक क्रमेण प्रभविष्यति ।
दैव' कालान्तरेऽन्यास्मिन्पुनर्लोक विवृद्धये ॥ ८९
भविष्यति पुनर्दैवमनुकूल यदृच्छया ।
यदा चंद्रश्च सूर्यश्च तथा तिष्य बृहस्पती ।
एक राशौ समेष्यन्ति प्रपत्स्यति तदा कृतम् ॥ ९० ॥
काल वर्षी च पर्जन्यो नक्षत्राणि शुभानिच ।
क्षेम सुभिक्षमारोग्य भविष्यति निरामयम् ॥ ९१ ॥

(महाभारत, वन-पर्व अध्याय १९०)

"पहले युग के खतम होने के समय बड़ी ही कठिन परिस्थितियो का सामना करते हुए क्रम से ब्राह्मणादि वर्णों का अभ्युत्थान होगा । इसके कुछ काल पश्चात् ईश्वर की इच्छा से पुन दैव अनुकूल होने लगेगा । जब चद्र, सूर्य, पौष और बृहस्पति एक राशि मे समान अ श हो जायँगे तब पुन. सतयुग आरम्भ होगा । तदनन्तर शुभ नक्षत्रो मे यथा समय वर्षा होगी कल्याण, सुभिक्ष और आरोग्यता प्राप्त होकर लोग आनन्द पूर्वक रहने लगेंगे ।"

इन श्लोको मे सतयुग शुरू होने का जो समय बतलाया है वह खास तौर पर ध्यान देने योग्य है । यह श्लोक (यदा चन्द्रश्च. ..) महाभारत के अन्य पर्वों और भागवत, विष्णु

पुराण जैसे सुप्रसिद्ध ग्रन्थो मे भी पाया जाता है। कुछ लोग इसमे आये 'तिष्य' शब्द का अर्थ पौष का महीना बतलाते है और कुछ पुष्य नक्षत्र। पहले मतानुसार यह योग कुछ वर्ष पूर्व आ चुका है और दूसरे मत से सम्वत् २००० के श्रावण की अमावस्या (१ अगस्त सन १९४३) को आयेगा।

सच तो यह है कि युग-परिवर्तन एक दिन मे नही हो जाता। यद्यपि नये युग के लक्षण पिछले कई वर्षों से दिखलाई पड रहे हैं तो भी हमारा विश्वास है कि सम्वत् २००० के शुरू होने पर दुनिया मे जरूर ही कोई खास महत्त्व की घटना होगी जिससे नये युग के स्पष्ट रूप से प्रकट होने मे विशेष सहायता मिलेगी।

यह हम पहले ही बतला चुके हैं और महाभारत के ऊपर लिखे श्लोको से भी जान पडता है कि युग-परिवर्तन के पहले ससार मे भीषण कलह और सहार होता है। इसके चिह्न इस समय चारो तरफ साफ दिखलाई पड रहे हैं। इसलिये सम्वत् २००० मे या उससे पहले ही ससारव्यापी लडाई का छिड जाना और उसके फल से ससार की कायापलट होकर नव-युग का पूर्ण रूप से प्रकट हो जाना निश्चय जान पडता है। इसमे आश्चर्य की कुछ भी बात नही है।

बाइबिल की भविष्यवाणी

ईसाइयो की बाइबिल एक पुरानी धर्म पुस्तक है। उसका कुछ भाग तो जिसे 'ओल्ड टेस्टामेण्ट' कहते हैं, ईसामसीह से भी

पहले का है। बाइबिल मे ईसाई धर्म के सिद्धान्तो के अलावा पुराने इतिहास की और खास कर यहूदियो के इतिहास की बहुत सी बाते दी गई है। उनमे मालूम होता है कि "ईश्वर ने यहूदियो को हुक्म दिया था कि अगर वे उसकी आज्ञाओ पर चलेगे तो वे सुखी और सम्पन्न बनेगे। इसके खिलाफ अगर वे उलटे रास्ते पर चले तो उनको सख्त सजा दी जायगी। यदि वे इससे भी न सुधरे तो परमात्मा उनके शहरो को वीरान कर देगा और उनके दुश्मन वहाँ रहने लगेगे। यहूदियो को बिना घरबार के दुनिया मे भटकते फिरना पड़ेगा। अखीर मे जब भटकने और तकलीफ पाते उनको 'सात समय' (Seven Times) बीत जायगा तो परमात्मा उनकी फिर खबर लेगा और उनको इकट्ठा करके फिर उनके देश मे बसायेगा।"

यहूदियो का पुराना निवास-स्थान पैलेस्टाइन का मुल्क था। वहीं पर उनका एकमात्र और परम पवित्र धार्मिक नगर जरूशलम है। जिस तरह ससार भर के मुसलमान मक्का को एकमात्र तीर्थ-स्थान मानते हैं और दूर-दूर से उसकी यात्रा करने आते हैं उसी तरह यहूदी भी सब तरह की तकलीफे सह कर हजारो कोस से जरूशलम की यात्रा करने आते हैं। यह देश कितने ही समय से टर्की के कब्जे मे था और उसमे अरब लोग रहते थे। पिछले महायुद्ध के फल से वह अङ्गरेजो की मातहती मे आया और मित्र राष्ट्रो की सलाह से

वहा यहूदियो को बसाने का निश्चय हुआ। इसके मुताबिक वहाँ अभी तक करीब ३ लाख यहूदी जाकर बस चुके है। पैलेस्टाइन को (National home for Jews) (यहूदियो का राष्ट्रीय निवास स्थान) करार दे दिया गया है।

दरअसल पैलेस्टाइन मे यहूदियो का बसना एक विचित्र घटना है। क्योकि बाइबिल मे इसका जिक्र स्पष्ट रूप से पाया जाता है और पिछले कई सौ वर्षो मे इस सम्बन्ध मे पचासो बडी-बडी पुस्तके लिखी जा चुकी हैं। उन सबमे बाइबिल की भविष्यवाणी मे पक्का विश्वास प्रकट करते हुये यह कहा गया है कि 'सात समय' खत्म हो जाने पर यहूदी अवश्य पैलेस्टाइन मे फिर बसेगे।

बाइबिल मे यह भी बतलाया गया है कि जब इस 'सात समय' का अन्त होने लगेगा तो दुनिया मे बडी भारी मारकाट मचेगी। प्राकृतिक दुर्घटनाओ से भी दुनिया तहस-नहस हो जायगी और कष्टो के मारे लोग त्राहि-त्राहि कर उठेगे। इस विषय में बाइबिल के ये वाक्य ध्यान देने योग्य हैं.—

Wars and rumours of war, for nation shall rise against nation and kingdom, against kingdom and there shall be famines and pestilences and earthquakes in diverse places These are the beginning of the sorrows, but the end is not yet

अर्थात् "उस समय चारो तरफ युद्ध होने लगेगे और युद्ध को अफवाहे सुनाई देने लगेंगी। एक मुल्क दूसरे मुल्क के खिलाफ खडा होगा और एक सल्तनत दूसरी सल्तनत के। उस समय अकाल पडेगे, महामारी का प्रकोप होगा और जगह-जगह भूकम्प आयेंगे। यह हालत शुरू मे होगी और अन्त तक इससे कहीं ज्यादा कष्ट सहने पडेगे।"

बाइबिल के कथनानुसार इस समय कोई बडा पराक्रमी शासक पैदा होगा जो विजयी नैपोलियन की तरह बहुत से मुल्को को फतह करेगा। वह यहूदियो को मार कर पैलेस्टाइन छीनना चाहेगा जिस पर भयकर युद्ध छिड जायगा और अखीर मे ईश्वरीय कोप से नैपोलियन का नाश होगा। बाइबिल मे इसे आखिरी युद्ध के नाम से पुकारा गया है और इसका वर्णन ऐसी भयकर अलकारिक भाषा मे किया गया है कि पढ कर रोये खडे हो जाते हैं। इस सम्बन्ध मे उसका एक वाक्य यहा दिया जाता है —

"मैंने एक फरिश्ते को सूरज की रोशनी मे खडे देखा। उसने पुकार कर कहा कि आसमान मे उडने वाले पक्षियो इकट्ठे होकर आओ और ईश्वर के दिये हुये भोज मे शामिल हो। उसमे तुमको बडे-बडे बादशाहो, राजाओ, कप्तानो, ताकतवर मनुष्यो, घोडो और उनके सवारो, और स्वामी तथा सेवक, छोटे तथा बड़े सब तरह के मनुष्यो का मास खाने को मिलेगा।"

बाइबिल के वर्णन से जान पडता है कि यह लडाई

किन्ही दो देशो मे न होगी बल्कि तमाम दुनिया दो हिस्सो मे बॅट कर आपस मे लड़ेगी। यह युद्ध ऐसा भयकर होगा कि अगर किसी उपाय से इसे बीच से ही रोक न दिया जाय तो तमाम पृथ्वी मनुष्यों से खाली हो जायगी।

इस लडाई को आरमागडून के युद्ध के नाम से पुकारा गया है। ईसाई लेखको के मत से यह स्थान जरूशलम के पास है और आजकल मेगिड्डो या एस्डे्लन के नाम से मशहूर है। यह एक बडा भारी मैदान है जहा पुराने जमाने मे बहुत सी बड़ी-बड़ी लड़ाइया लडी जा चुकी है।

आजकल पैलेस्टाइन मे अरबो और यहूदियो मे जैसा झगडा हो रहा है और जिसके सबब से वहाँ बार-बार मारकाट और खूनखराबी होती है उसे देखते हुये बाइबिल की भविष्यवाणी का सच्चा सिद्ध हो जाना कुछ भी कठिन नही है। पाठक शायद पैलेस्टाइन को एक पिछड़ा हुआ और जङ्गली सा देश समझ कर यह ख्याल करते होंगे कि उसके लिये इतनी बड़ी लडाई नही हो सकती। पर उनको जानना चाहिये कि यह पैलेस्टाइन स्वेज की नहर के बिल्कुल पास है और इस तरह योरोप और एशिया के रास्ते की कुजी की तरह है। खास कर जब से इटली ने अबीसीनिया जीत लिया है तब से तो बडे-बडे लोगो का ध्यान इस समस्या की तरफ लगा हुआ है। आजकल अखबारो मे कई बार यह लिखा जा चुका है कि पैलेस्टाइन के दङ्गो मे इटली के जासूसो का हाथ है। अगर इटली पैलेस्टाइन और

आसपास के मुल्को पर अपना प्रभाव जमाले तो एशिया के रास्ते पर भी उसका प्रभाव हो जायगा। इससे इङ्गलैण्ड की ताकत को बडा धक्का लगेगा। इस सवाल पर इङ्गलैण्ड के राजनीतिज्ञ बड़ी गम्भीरता से विचार कर रहे हैं। इसमे तो कुछ शक ही नही कि इस वक्त ससार की राजनीति मे पैलैस्टाइन का भी खास महत्व है।

अब सिर्फ एक सवाल रह जाता है कि 'सात समय' का क्या मतलब है और वह कब तक पूरा होगा। ईसाई विद्वानों के कहने के मुताबिक 'सात समय' का मतलब है सात वर्ष। पर भविष्यवाणी मे एक वर्ष को एक दिन माना जाता है। बाइबिल का वर्ष ३६० दिन का होता है। इस हिसाब से 'सात-समय' के (३६०×७) २५२० वर्ष होते है। यहूदियो का पहला दण्ड ईसा से ६०६ वर्ष पहले और दूसरा ५८९ वर्ष पहले शुरू हुआ था। इस तरह पहले दण्ड से २५२० वर्ष१९१४ मे और दूसरे से १९३१ मे ख़त्म होते है। पर ईसाइयो के पचाङ्ग मे चार वर्ष की भूल है और ईसाइयो तथा यहूदियो की काल-गणना मे भी कुछ फर्क है। इससे इस भविष्यवाणी के समय मे पॉच-सात वर्ष का अन्तर होजाना बहुत मुमकिन है। इस निगाह से यह हमारी सम्वत् २००० की भविष्यवाणी से करीब-करीब मिल जाती है।

—.०—

शेरो साहब का भविष्य-कथन

शेरो साहब विलायत के सब से बड़े ज्योतिषी और सामुद्रिक-शास्त्र (हाथ देखने) के आचार्य हैं। उनमें कोई ऐसी गुप्त शक्ति है कि वे जिस आदमी का हाथ देखते हैं उसके जीवन की तमाम गुजरी और होने वाली घटनायें उनको बायस्कोप की भाँति दिखलाई पड़ने लगती हैं। यही सबब है कि दुनिया के ज्यादातर बड़े-बड़े बादशाह, राज्यों के सचालक और बड़े-बड़े व्यक्ति उनको अपना हाथ दिखला चुके हैं और उनकी सचाई के सामने सर झुका चुके हैं। उनकी कुछ बातें तो ऐसी मशहूर हैं कि जिनका हाल अङ्गरेजी जानने वाले हर एक ज्योतिष प्रेमी को मालूम है। शेरो साहब ने दक्षिण अफ्रिका की लडाई, रानी विक्टोरिया की मृत्यु और जर्मनी की लड़ाई का ठीक समय वर्षों पहले बतला दिया था। उनकी सब से ज्यादा आश्चर्यजनक भविष्यवाणी लार्ड किचनर के सम्बन्ध में है जिनको उन्होंने सन् १८८७ में बतला दिया था कि उनको सन् १९१४ में किसी बड़े युद्ध की जिम्मेवारी उठानी पड़ेगी और उनकी मौत उसी युद्ध में लड़ाई के मैदान में होने के बजाय समुद्र में डूबने से ६६ साल की उम्र में होगी।

अब अधिक उम्र हो जाने के कारण शेरो साहब ने लोगों का भविष्य बतलाना बन्द कर दिया है और वे ज्योतिष-शास्त्र की पुस्तकें लिख रहे हैं जो बहुत पसन्द की जा रही हैं।

उन्होने 'वर्ल्ड प्रीडिक्शन' नाम की पुस्तक सन् १९२९ मे लिखी थी जिसमे ससार के सभी खास-खास देशो का राजनैतिक भविष्य और दूसरी मार्के की घटनाओ का जिक्र है।

शेरो साहब के भविष्य-कथन का आधार यह सिद्धान्त है कि पृथ्वी की कक्षा अथवा धुरी अपनी जगह से बराबर हटती रहती है और इसके सबब से सूर्य भी हमको अपनी जगह से हटता नजर आता है। यह पृथ्वी का हटना इस तरह होता है कि सूर्य एक-एक करके बारहो राशियो मे हो आता है। एक राशि से दूसरी राशि मे जाने मे उसे २१०० वर्ष और बारहो राशियो मे २५८०० वर्ष लगते है। ईसा के जमाने मे सूर्य मीन राशि मे था। अब सन् १७६२ से कुम्भ राशिमे आ-गया है।

पृथ्वी की कक्षा मे होने वाले इस बदलाव का असर दुनिया की आबहवा पर बहुत ज्यादा पडता है। ध्रुवो का स्थान बदल जाने से बडे-बडे भूकम्प आते है, समुद्रो की गह-राई मे फर्क पड जाता है और दुनिया का नक्शा बहुत बदल जाता है। पृथ्वी की कक्षा मे अन्तर पडने की बात को वैज्ञानिक लोग भी मानते हैं और वेद आदि प्राचीन ग्रन्थो से भी यह सिद्ध होता है। लोकमान्य तिलक ने अपने वेद सम्बधी ग्रथ मे इस विषय पर बहुत सी प्रमाणिक बाते लिखी है।

शेरो साहब के कहने के मुताबिक अगले ५० वर्षो मे अट-लांटिक महासागर के तले मे बडा अन्तर पड जायगा और उसके

फल से अमरीका का बहुत सा हिस्सा, आयरलैण्ड, इङ्गलैण्ड, स्वीडेन नार्वे, डेनमार्क और रूस, जर्मनी तथा फ्रांस के उत्तरी भाग इतने ठण्डे हो जायगे कि वहां मनुष्य का रह सकना कठिन होगा।

इसके बदले चीन, भारत, अफ्रीका, मिश्र आदि जैसे देश जो अभी खास तौर पर गर्म समझे जाते हैं, मातदिल, हवा वाले हो जायँगे। इससे इन देशो मे सभ्यता की बहुत वृद्धि होगी और ये ससार मे प्रधान समझे जाने लगेगे। अटलांटिक सागर के बीच एक बड़ा टापू निकल आने से अफ्रीका का सहारा फिर से समुद्र बन जायगा और इससे अफ्रीका की बहुत ज्यादा तरक्की होगी। पैलेस्टाइन, मिश्र और आस पास के देश ससार भर के व्यवसाय और सभ्यता के केन्द्र बन जायेंगे।

सूर्य जब तक कुम्भ राशि मे रहेगा ससार की सामाजिक अवस्था भी बहुत बदली रहेगी। इस युग मे स्त्रियों और मज़-दूरो की प्रधानता रहेगी।

पर इन तमाम परिवर्तनों से पहले ससार मे एक बहुत बड़ी लड़ाई जरूर होगी। यह लड़ाई सन १९३८ तक हो जायगी ऐसी सम्भावना शेरो साहब ने ग्रहो के फल पर विचार करके प्रकट की है। इस लड़ाई में दुनिया का बड़ा नाश होगा पर उसके सबब से लोगों के ख्यालात बदल जायँगे और न्याय तथा सचाई के सिद्धान्तो का प्रचार होने लगेगा। योरोप के देश एशिया और अफ्रिका के देशों को लूटना और दबाना छोड़

देगे और सब मिल कर एक ऐसा ससारव्यापी राज्य तथा सगठन कायम करने की कोशिश करेगे जिसमे भविष्य मे युद्ध न हो और सब लोग मिलकर एक दूसरे का भला करने का उद्योग करे।

अवधूत केशवानन्द जी

भारतीय जनता का सदा मे यह विश्वास रहा है कि हिमालय पर्वत तपस्वी और सिद्ध महात्माओ का स्थान है। यह जानते हुये भी कि अब हिमालय प्रान्त मे भी अनेक ढोगी साधू घुस गये है और वहाँ के महात्मा नाम धारी सच्चे आदर्श से कोसो दूर है, यह कहा जा सकता है कि वहाँ अब भी कुछ तपस्वी ऐसे अवश्य है जो आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत ऊँचे पहुँच गये हैं। ऐसे ही महात्माओ मे अवधूत केशवानन्द जी का नाम लिया जाता है। आप के सम्बध मे हाल ही मे एक छोटा सा लेख सुप्रसिद्ध दानवीर सेठ युगुल किशोर जी बिरला ने समाचार पत्रो मे प्रकाशित कराया था जिससे प्रतीत होता है कि केशवानन्द जी अवश्य ही विशेष श्रेणी के साधक और तपस्वी हैं। सेठ जी इनके विषय मे लिखते हैं —

"आप की उम्र इस वक्त करीब ७० वर्ष के दिखाई पडती है। भिक्षा मे प्राय दही या फलाहार, सो भी केवल एक बार लेते हैं। जाडा या गर्मी कुछ भी हो एक लगोटी के सिवा दूसरा वस्त्र नहीं रखते। आप का न कोई स्थान है न

फलाहार की भिक्षा के सिवा किसी से कुछ लेते है। कोई सेवक या शिष्य भी साथ नही रखते। किन्तु आपकी सबसे कठोर तपस्या यह है कि जाडो मे उत्तर काशी के पास वर्फ के पहाडो के बीच रात के पिछले पहर गगा की धारा मे खडे होकर आप जाप करते रहते हैं। और गर्मी के मौसम मे पहाड के नीचे ऋशीकेश के जङ्गल मे आ जाते है और कडी धूप और गर्म हवा मे सूर्योदय से सूर्यास्त तक सूर्य के सामने खड़े हुये जाप करते रहते हैं। सुना जाता है कि आप ३०,४० वर्ष से इसी तरह तपस्या कर रहे है। पिछले चार पॉच वर्षो से तो आप रात का अधिकाश भाग गगा मे खड़े होकर जप करने मे ही बिताते है।

यद्यपि इस तरह का साधन करने वाले साधू ससार से बहुत कम सम्बध रखते हैं और उनका सबसे बड़ा गुण यही माना जाता है कि वे किसी प्रकार की अच्छी या बुरी अभिलाषा न रखे। यह सब होने पर भी कहा जाता है कि केशवानन्द जी हिन्दू जाति की वर्तमान दुर्दशा देख कर दु खी होते हैं और उसके कल्याण की कामना करते रहते हैं। इस दृष्टि से इसके भविष्य के सम्बन्ध मे उनके मुख से कभी-कभी कुछ निकल जाता है। सेठ युगल किशोर बिरला ने स्वय दर्शन करके और दूसरे विश्वासपात्र व्यक्तियो से सुन कर इस सम्बन्ध मे आपकी धारणा इस प्रकार बतलाई है।

"अभी कुछ वर्षों तक हिन्दुओ, विशेषत पजाब और सिन्ध के हिन्दुओ की विपत्तियाँ और भी बढेगी। विक्रम की

देंगे और सब मिल कर एक ऐसा समारव्यापी राज्य तथा सगठन कायम करने की कोशिश करेंगे जिसमे भविष्य मे युद्ध न हो और सब लोग मिलकर एक दूसरे का भला करने का उद्योग करे।

अवधूत केशवानन्द जी

भारतीय जनता का सदा से यह विश्वास रहा है कि हिमालय पर्वत तपस्वी और सिद्ध महात्माओ का स्थान है। यह जानते हुये भी कि अब हिमालय प्रान्त मे भी अनेक ढोंगी साधू घुस गये हैं और वहॉ के महात्मा नाम धारी सच्चे आदर्श से कोसो दूर हैं, यह कहा जा सकता है कि वहाँ अब भी कुछ तपस्वी ऐसे अवश्य है जो आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत ऊँचे पहुँच गये हैं। ऐसे ही महात्माओ मे अवधूत केशवानन्द जी का नाम लिया जाता है। आप के सम्बध मे हाल ही मे एक छोटा सा लेख सुप्रसिद्ध दानवीर सेठ युगुल किशोर जी बिरला ने समाचार पत्रो मे प्रकाशित कराया था जिससे प्रतीत होता है कि केशवानन्द जी अवश्य ही विशेष श्रेणी के साधक और तपस्वी हैं। सेठ जी इनके विषय मे लिखते है :—

"आप की उम्र इस वक्त करीब ७० वर्ष के दिखाई पडती है। भिक्षा मे प्राय दही या फलाहार, सो भी केवल एक बार लेते हैं। जाड़ा या गर्मी कुछ भी हो एक लगोटी के सिवा दूसरा वस्त्र नहीं रखते। आप का न कोई स्थान है न

फलाहार की भिक्षा के सिवा किसी से कुछ लेते है। कोई सेवक या शिष्य भी साथ नही रखते। किन्तु आपकी सबसे कठोर तपस्या यह है कि जाडो मे उत्तर काशी के पास वर्फ के पहाड़ो के बीच रात के पिछले पहर गगा की धारा मे खडे होकर आप जाप करते रहते है। और गर्मी के मौसम मे पहाड के नीचे हृशीकेश के जङ्गल मे आ जाते है और कडी धूप और गर्म हवा मे सूर्योदय से सूर्यास्त तक सूर्य के सामने खड़े हुये जाप करते रहते हैं। सुना जाता है कि आप ३०,४० वर्ष से इसी तरह तपस्या कर रहे हैं। पिछले चार पॉच वर्षो से तो आप रात का अधिकाश भाग गगा मे खड़े होकर जप करने मे ही बिताते हैं।

यद्यपि इस तरह का साधन करने वाले साधू ससार से बहुत कम सम्बध रखते हैं और उनका सबसे बड़ा गुण यही माना जाता है कि वे किसी प्रकार की अच्छी या बुरी अभिलाषा न रखे। यह सब होने पर भी कहा जाता है कि केशवानन्द जी हिन्दू जाति की वर्तमान दुर्दशा देख कर दु खी होते है और उसके कल्याण की कामना करते रहते हैं। इस दृष्टि से इसके भविष्य के सम्पन्ध मे उनके मुख से कभी-कभी कुछ निकल जाता है। सेठ युगल किशोर विरला ने स्वय दर्शन करके और दूसरे विश्वासपात्र व्यक्तियो से सुन कर इस सम्बन्ध मे आपकी धारणा इस प्रकार बतलाई है।

"अभी कुछ वर्षों तक हिन्दुओ, विशेषत· पजाब और सिन्ध के हिन्दुओ की विपत्तियॉ और भी बढेंगी। विक्रम की

बीसवीं शताब्दी अर्थात् विक्रम सम्वत २००० के समाप्त होने के आसपास ससार मे भयानक अशान्ति होने की सभावना है। उसके कारण शुरू मे हिन्दुओ को घोर कठिनाइयों का सामना करना पडेगा। उस समय के पश्चात् देश मे एक महापुरुष प्रकट होगा जिसके नेतृत्व मे सिख और यू० पी० के हिन्दू हिन्दुओ की विपत्ति मिटाने मे बडी तत्परता दिखायेगे।"

सूर्य के गढ़े और युद्ध

जिस प्रकार फलित ज्योतिष वाले ग्रहो के प्रभाव से भविष्य का पता लगाते है उसी प्रकार गणित और खगोल ज्योतिष वालो ने भी कुछ ऐसे सिद्धान्त निकाले है जिनसे भविष्य का ज्ञान हो सकता है। इनमे सब से मुख्य सूर्य के गढो या धब्बो का सिद्धान्त है। दूरबीन से लगातार सूर्य का निरीक्षण करने से पता चला है कि उसमे कुछ धब्बे से दिखलाई पडते है। इन धब्बो की तादाद और आकार कभी तो बहुत कम हो जाता है और कभी बहुत ज्यादा। वैज्ञानिकों ने पता लगाया है कि इस परिवर्तन का असर पृथ्वी की आबहवा पर पडता है। हम जो किसी वर्ष बहुत अधिक गर्मी, किसी वर्ष बहुत अधिक बरसात और किसी वर्ष बहुत अधिक जाडा देखते है इसका कारण ये सूर्य के धब्बे ही है।

जांच करने से यह भी पता चला है कि यह परिवर्तन

एक खास कायदे से होता है। सूर्य के गढो के घटने और वढने का एक चक्र सा है जो ११ या १२ वर्ष मे पूरा होता है। इस वीच मे एक वार उनका जोर घटते-घटते वहुत कम हो जाता है और फिर धीरे-धीरे वहुत वढ़ जाता है।

यह सूर्य के गढो का हाल वैज्ञानिको को वहुत पहले से मालूम था। पर,वे यह निश्चय न कर सके थे कि आखिर यह परिवर्तन क्यो होता है। किसकी ताकत के असर से ये गढ़े कम और ज्यादा होते हैं। अव एक युवक गणित ज्योतिषी ने इसका कारण वृहस्पति को वतलाया है। उसके कथनानुसार वृहस्पति सूर्य के चारो ओर अण्डाकार कक्षा मे घूमता है जिससे उसका फासला सूर्य से कभी कम और कभी ज्यादा हो जाता है। वह सूर्य से ज्यादा से ज्यादा ५०, ६३, १०००० मील और कम से कम ४६ ०२ ८०००० मील दूर रहता है। यह सभी जानते हैं कि वृहस्पति वहुत वड़ा ग्रह है और उसका आकर्षण सूर्य पर वहुत अधिक पडता है। इसलिये जव वह पास आ जाता है तो सूर्य को जोर से खींचता है जिससे उसके पिघले हुये पिण्ड मे वहुत ज्यादा हलचल मच जाती है और इससे गर्मी और विजली की लहरे जोर से निकलती हैं। वृहस्पति का सूर्य के गिर्द एक चक्कर १२ वर्ष मे पूरा होता है और यही सूर्य के गढो के चक्र की भी मियाद है।

इस सक्षिप्त वर्णन से पाठक यह समझ गये होगे कि सूर्य

के प्रभाव मे किस तरह पृथ्वी की आबहवा मे परिवर्तन होता रहता है। अब हमको यह देखना है कि इस परिवर्तन का राजनैतिक और सामाजिक घटनाओ से क्या ताल्लुक हो सकता है और अगले वर्षो मे दुनिया पर इसका क्या असर पड़ेगा। इस सम्बन्ध मे फ्रास की वर्जिस वेधशाला के अध्यक्ष अब्बे मरो ने, जो खगोल-विज्ञान के बड़े मशहूर जानकार है, कुछ समय पहले कहा था :—

"मेरा विश्वास फलित ज्योतिष पर नही है और मैं जो भविष्यवाणी कर रहा हूँ उसका आधार सिर्फ खगोल-विज्ञान पर है। समय-समय पर सूर्य मे जो गढ़े दिखलाई पडते है उसमे विजली और चुम्बक की ऐसी शक्ति पैदा होती है कि वह मनुष्य को भय से विचलित और उत्तेजित कर देती है। उस समय मामूली सबब से भी आदमी का गुस्सा भडक उठता है और किसी मामूली अन्तर्राष्ट्रीय घटना से भी महायुद्ध शुरू हो सकता है।

"इस सिद्धान्त की सचाई जानने के लिये हमको सन् १९०० से अब तक के इतिहास पर दृष्टि डालनी चाहिये। जब कि सूर्य पहले की वनिस्वत् कम ताकत निकालता है तो पृथ्वी पर शान्ति रहती है और लोग कला तथा सभ्यता के विस्तार की तरफ ध्यान देते हैं। इस तरह का जमाना सन् १९००, १९१० और १९२० के आसपास था। पर हर ग्यारहवे वर्ष सूर्य मे अधिक धब्बे दिखलाई पडते है और तभी लडाई झगडे पैदा

होते हैं। सन् १९०५ मे मरक्को की लड़ाई और महायुद्ध ऐसे ही अवसर पर हुये थे।

"सन् १९३६ और ३७ मे भी ऐसा ही जमाना आनेवाला है। उसके असर से लोगो मे युद्ध की उत्तेजना पैदा होने के साथ ही भयङ्कर तूफान और भूकम्प आदि का भी बहुत ज्यादा डर है। सूर्य के धब्बो के असर से गठिया और दिल सम्बन्धी बीमारियो मे भी बढ़ती हो जाती है।"



युद्ध कब होगा ?:—

अगली लडाई कब होगी यह एक बडा टेढा सवाल है। आजकल आये दिन अखबारो मे अगली लडाई के बारे मे किसी न किसी ज्योतिषी या राजनीतिज्ञ की भविष्यवाणी दिखाई दिया करती है। अगर आप किसी दैनिक पत्र की पिछले दो-तीन साल की फायले उलट कर देखें तो आपको यह देखकर शायद बडा अचम्भा होगा कि इस बीच मे पचासो बार बहुत जल्दी लडाई छिडने की बात कही जा चुकी है।

इसका नतीजा यह होता है कि ज्यादातर पाठको का विश्वास ऐसी बातो पर से उठ गया है और वे इनको कोरे मजाक की तरह समझने लगे है। इसमे शक नही कि इन भविष्य-वक्ताओ मे कितने ही सिर्फ सनसनी फैलाने वाले होते है। वे अपना मतलब बनाने के लिये तिल का ताड बनाकर या योही भय का भूत खडा करके लोगो को घबराहट मे डाला करते है। अमेरिका और योरोप के अखबारो के बहुत से सम्वाददाता भी ऐसी बेपर

की बाते खूब उडाते है क्योंकि उनका रोजगार इसी से चलता है।

तो भी यह कहना शायद ठीक न होगा कि इनमे से किसी भविष्यवाणी मे कुछ भी सच्चाई नही होती। जो लोग इन भविष्यवाणियों को पूरी तरह सच होते न देख कर नाउम्मेद हो जाते है और उनको बिल्कुल गपोडा समझने लगते हैं वे एक बात भूल जाते है। वे यह नहीं समझते कि भविष्यवाणी एक तरह का अनुमान है जो चाहे राजनैतिक घटनाओं को देखकर लगाया जाय और चाहे आकाशस्थित ग्रहो की चाल के आधार पर उसमे थोडा-बहुत अन्तर पड ही सकता है। इनमे अगर गणना ठीक की गई हो तो ग्रहो के फल मे तो थोडा ही फर्क पडता है पर राजनैतिक मामलो मे बडी जल्दी परिवर्तन हो जाता है। संसार मे हर रोज बीसियो राजनैतिक घटनाये ऐसी होती रहती है जिनमे स्थिति बराबर बदलती रहती है। इटली-अबीसीनिया संग्राम मे फ्रांस का झुकाव इटली की तरफ था जिसके सबब से इङ्गलैण्ड उसे दबाने के लिये कोई जोरदार कार्रवाई न कर सका। पर अब जो नई सरकार फ्रांस मे बनी है उसका रुख बदला हुआ जान पडता है। अगर यही बदलाव दो-तीन महीने पहले हो जाता तो शायद इटली अबीसीनिया की लडाई की शकल बदल जाती। इस निगाह से राजनैतिक परिवर्तनो के असर से किसी भी भविष्यवाणी मे कम या ज्यादा फर्क पड जाना अनहोनी बात नहीं है।

सच पूछा जाय तो अधिकांश भविष्यवेत्ताओं ने सन १९३५ में महायुद्ध शुरू हो जाना अटल माना था, और अगर हम उस वर्ष की घटनाओं पर गौर करें तो उनका कहना बिल्कुल गलत नहीं बतलाया जा सकता। इसी साल इटली-अबीसीनिया की लड़ाई छिड़ी और शुरू में यह साफ जान पड़ता था कि इसमें दूसरे योरोपियन देश भी शामिल होंगे और महायुद्ध हो जायगा। इस मामले में इटली का सब से बड़ा विरोधी इङ्गलैण्ड ही था और शुरू में उसने कुछ जोर भी दिखलाया। पर जब उसने देखा कि और सब देश ढीले हैं और उसका अकेले इस झगड़े में फँस जाना बेवकूफी होगी तो वह भी तरह दे गया। लोग यहाँ तक कहते हैं कि वह अपमान का कड़वा घूँट पीकर रह गया। अब लड़ाई खत्म होने पर जो बातें खुल रही हैं उनसे यह साफ जाहिर होता है कि कई योरोपियन देशों ने पहले अबीसीनिया को मदद देने का पूरा भरोसा दिलाया था। पर बाद में इटली की ताकत ज्यादा देखकर उनको पीछे पैर हटा लेना पड़ा। इस सम्बन्ध से अभी १८ जून को इङ्गलैण्ड की पार्लमेण्ट में बड़ी बहस हुई थी, उसमें वैदेशिक मन्त्री ईडन साहब ने साफ शब्दों में कहा था —

"यह साफ जाहिर है कि अगर राष्ट्र-संघ अबीसीनिया में शान्ति कायम करने की कोशिश करता तो उसे इस तरह की कार्रवाई करनी पड़ती जिससे आखीर में जरूर ही मेडीटेरेनियन

समुद्र मे लडाई छिड जाती। कोई भी यह नही कह सकता कि यह लडाई मेडीटेरेनियन से आगे न बढ़ती।"

प्रधान मन्त्री वाल्डविन साहब ने भी इसी समय एक स्थान मे भाषण करते हुये कहा है —

The only way of altering the course of events as they had hitherto take place was to go to war He did not know of a single European country prepared for that and he would not cast his voice for that course of action

The first step to peace by collective security meant more war preparations That was the horrible irony of the situation, If fire was ever alighted on the continent no man could tell where the heather would stop burning That was the risk he was not going to take while he had any control in the government

अर्थात् "हाल ही मे जो घटनायें हुई हैं उनको बदलने का एक मात्र उपाय युद्ध छेड़ना था। पर मुझे एक भी योरोपियन देश ऐसा दिखलाई नही पडता जो इसके लिए तैयार हो। मै भी इसके लिए हर्गिज राय नही दे सकता।. ....अगर हम सामूहिक उपाय से शान्ति बनाये रखने की कोशिश करे तो उसका मतलब होगा कि हम लडाई के लिए और भी ज्यादा तैयारी करने लगे। यह बात विचित्र तथा साथ ही भयकर भी है। अगर

सच पूछा जाय तो अधिकांश भविष्यवेत्ताओ ने सन १९३५ मे महायुद्ध शुरू हो जाना अटल माना था, और अगर हम उस वर्ष की घटनाओ पर गौर करे तो उनका कहना बिल्कुल गलत नही बतलाया जा सकता। इसी साल इटली-अबीसीनिया की लडाई छिडी और शुरू मे यह साफ जान पडता था कि इसमे दूसरे योरोपियन देश भी शामिल होगे और महायुद्ध हो जायगा। इस मामले मे इटली का सब से बडा विरोधी इङ्गलैण्ड ही था और शुरू मे उसने कुछ जोर भी दिखलाया। पर जब उसने देखा कि और सब देश ढीले है और उसका अकेले इस झगड़े मे फंस जाना बेवकूफी होगी तो वह भी तरह दे गया। लोग यहाँ तक कहते है कि वह अपमान का कडवा घूँट पीकर रह गया। अब लडाई खतम होने पर जो बाते खुल रही है उनसे यह साफ जाहिर होता है कि कई योरोपियन देशो ने पहले अबीसीनिया को मदद देने का पूरा भरोसा दिलाया था। पर बाद मे इटली की ताकत ज्यादा देखकर उनको पीछे पैर हटा लेना पडा। इस सम्बन्ध मे अभी १८ जून को इङ्गलैण्ड की पार्लामेण्ट मे बडी बहस हुई थी, उसमे वैदेशिक मन्त्री ईडन साहब ने साफ शब्दो मे कहा था —

'यह साफ जाहिर है कि अगर राष्ट्र-सघ अबीसीनिया मे शान्ति कायम करने की कोशिश करता तो उसे इस तरह की कार्रवाई करनी पड़ती जिससे आखिर मे जरूर ही मेडीटेरेनियन

समुद्र मे लडाई छिड जाती। कोई भी यह नही कह सकता कि यह लडाई मेडीटेरेनियन से आगे न बढती।"

प्रधान मत्री वाल्डविन साहब ने भी इसी समय एक स्थान मे भाषण करते हुये कहा है—

The only way of altering the course of events as they had hitherto take place was to go to war He did not know of a single European country prepared for that and he would not cast his voice for that course of action

The first step to peace by collective security meant more war preparations That was the horrible irony of the situation, If fire was ever alighted on the continent no man could tell where the heather would stop burning That was the risk he was not going to take while he had any control in the government

अर्थात् "हाल ही मे जो घटनाये हुई हैं उनको बदलने का एक मात्र उपाय युद्ध छेड़ना था। पर मुझे एक भी योरोपियन देश ऐसा दिखलाई नही पडता जो इसके लिए तैयार हो। मैं भी इसके लिए हर्गिज राय नही दे सकता। . ...अगर हम सामूहिक उपाय से शान्ति बनाये रखने की कोशिश करे तो उसका मतलब होगा कि हम लडाई के लिए और भी ज्यादा तैयारी करने लगे। यह बात विचित्र तथा साथ ही भयकर भी है। अगर

योरोप में कभी आग लगी तो कोई भी यह नहीं कह सकता कि वह कहां जाकर खत्म होगी। यह एक ऐसा खतरा है जिसे मैं, जब तक गवर्नमेण्ट में मेरा कुछ भी हाथ है, उठाने को तैयार नहीं हूँ।"

अब शायद पाठक समझ गये होंगे कि हम पुरानी या नई भविष्यवाणियों से तभी कुछ लाभ उठा सकते हैं जब कि राजनैतिक परिवर्तनों और चालों पर भी निगाह रखें। जो लोग इन दोनों बातों को मिला कर अच्छी तरह विचार कर सकते हैं वे ही संसार के राजनैतिक भविष्य और अगले महायुद्ध के विषय में कुछ सच्चा अनुमान कर सकते हैं। इसीलिए इस पुस्तक में हमने पुरानी और नई भविष्यवाणियों के साथ-साथ संसार की मौजूदा राजनैतिक हालत का नक्शा पाठकों के सामने रख दिया है। वे इन बातों पर जितना ही ध्यान देकर विचार करेंगे उतना ही ज्यादा आगे होने वाली घटनाओं का भेद समझ जायेंगे। हम इन घटनाओं पर विचार करके जिस नतीजे पर पहुंचे हैं वह यह है।

आजकल आम तौर पर यह कहा जाता है कि इटली की निगाह पैलेस्टाइन, इराक और स्वेज नहर के आसपास के दूसरे देशो पर लगी है। अगर वह इस इरादे मे कामयाब हो गया तो एशिया और योरोप के रास्ते पर उसका कब्जा हो जायगा। यह साफ जाहिर है कि इसमे उसे इङ्गलैण्ड फ्रांस आदि के विरोध का मुकाबला करना होगा और इसका नतीजा सिवा लडाई के और कुछ नही हो सकता।

दूसरा सवाल जर्मनी का है। वह अब कमजोर और नीचे दर्जे का मुल्क बन कर रहना नही चाहता। उसने अपनी जनता को सगठित करके अपनी ताकत तो बढ़ाली है पर उसके पास न कोई आधीन देश हैं न उपनिवेश, इसलिए वह कही पैर नही फैला सकता। अपनी रक्षा और उन्नति के लिये उसे उपनिवेश हासिल करने ही पडेगे। जहा तक लक्षणो से पता चलता है वह सन ३६ के अन्त या ३७ के शुरू मे ही इसके लिये आन्दोलन उठायेगा जिसका नतीजा जल्दी या या देर मे लडाई के सिवा और कुछ नहीं हो सकता।

, जर्मनी से ही ताल्लुक रखने वाला दूसरा बडा सवाल जर्मन जाति के उन व्यक्तियां का है जो इस समय पोलैण्ड, इटली, आस्ट्रिया वगैरह की मातहती में हैं। इनमे से कुछ तो खुद ही अपने देश मे स्थान न मिलने से आसपास के मुल्को मे जा बसे थे और कुछ महायुद्ध मे जर्मनी के हार

जाने पर दूसरे मुल्को मे जबर्दस्ती शामिल कर लिये गये। इन लोगो की तादाद १५०००००० (डेढ करोड) है। जर्मनी के नाजीदल की यह प्रतिज्ञा है कि इन तमाम जर्मन बोलने वाले लोगो को मिलाकर एक महान जर्मन राष्ट्र का निर्माण किया जायगा। इसी सबब से योरोप मे बार-बार अशान्ति पैदा होती है और जब तक इसका ठीक फैसला न होगा लडाई की जड बनी ही रहेगी। इसी परिस्थिति को समझ कर हाल ही मे एक मशहूर लेखक ने इङ्गलैण्ड के 'सण्डे एक्सप्रेस' नामक अखबार मे लिखा था —

"ससार की शान्ति जर्मनी के इन्हीं खोये हुये निवासियों पर निर्भर है। योरोप मे डेनजिग, मेमल, आस्ट्रिया, बोहेमिया आदि जितने खतरे के मुकाम बतलाये जाते है, वे सब इसी लिये खतरनाक है कि वहां पर जर्मन लोग बसते है।"

जो हाल योरोप मे जर्मनी और इटली का है वही एशिया मे जापान का समझना चाहिये। उसने चीन को आधीन करके अपना साम्राज्य कायम करने का पक्का इरादा कर लिया है। इस काम मे रूस, अमरीका और अङ्गरेजो से भी उसका विरोध पैदा होता है। चीन वाले अभी कमजोर होने से चुप है पर वे भी जापान से जले बैठे है। यह समस्या भी बिना लडाई के नही सुलझ सकती।

इस तरह हम इस नतीजे पर पहुँचते है कि आजकल राजनीति के मैदान मे एक तरफ तो इटली, जर्मनी और जापान ये तीन ऐसे देश है जिनकी आबादी बहुत बढ गई है पर जिनके पास अपना विस्तार करने लिये न काफी मुल्क है न धन। इन्होंने अपनी फौजी ताकत बहुत बढ़ाली है और उसके बल पर वे मुल्क और धन हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं।

दूसरी तरफ अमरीका, इङ्गलैन्ड, फ्रान्स और रूस जैसे देश हैं जिनके पास जमीन और धन की कमी नहीं है। ऐसी हालत मे पहले दल वालो का दूसरे दल वालो से झगड़ा हो जाय तो कोई ताज्जुब नही। यह मुमकिन है कि इनमे से एकाध को किसी तरह का लालच देकर अलग कर दिया जाय या कोई दूर रह कर ही तमाशा देखने की कोशिश करे। पर अधिकाश मे योरोप के बडे-बडे राजनीतिज्ञ भी इसी तरह की दलबन्दी होने की सम्भावना बतला रहे हैं।

इन दोनो दलो का विरोध दिन पर दिन बढ़ता ही जाता है और इसलिये सब जल्दी से जल्दी अपनी फौजी ताकत बढाने और दूसरी तैयारियाँ करने मे लगे हैं। इनकी तैयारी देख कर दूसरे छोटे मुल्क भी जो अपने ही घर मे सन्तुष्ट हैं घबडाते हैं कि कहीं कोई हमारे ऊपर दात न लगाये। इसलिये लाचार होकर सामर्थ न होते हुए भी उनको फौजी ताकत बढाने की तरफ ध्यान देना पडता है।

जाने पर दूसरे मुल्कों में जबर्दस्ती शामिल कर लिये गये। इन लोगों की तादाद १५०००००० (ड़ेढ करोड) है। जर्मनी के नाजीदल की यह प्रतिज्ञा है कि इन तमाम जर्मन बोलने वाले लोगों को मिलाकर एक महान जर्मन राष्ट्र का निर्माण किया जायगा। इसी सबब से योरोप में बार-बार अशान्ति पैदा होती है और जब तक इसका ठीक फैसला न होगा लडाई की जड़ बनी ही रहेगी। इसी परिस्थिति को समझ कर हाल ही में एक मशहूर लेखक ने इङ्गलैण्ड के 'सण्डे एक्सप्रेस' नामक अखबार में लिखा था :—

"ससार की शान्ति जर्मनी के इन्ही खोये हुये निवासियो पर निर्भर है। योरोप में डेनजिग, मेमल, आस्ट्रिया, बोहेमिया आदि जितने खतरे के मुकाम बतलाये जाते है, वे सब इसी लिये खतरनाक है कि वहाँ पर जर्मन लोग बसते हैं।"

जो हाल योरोप में जर्मनी और इटली का है वही एशिया में जापान का समझना चाहिये। उसने चीन को आधीन करके अपना साम्राज्य कायम करने का पक्का इरादा कर लिया है। इस काम में रूस, अमरीका और अङ्गरेजो से भी उसका विरोध पैदा होता है। चीन वाले अगर्चे कमजोर होने से चुप हैं पर वे भी जापान से जले बैठे हैं। यह समस्या भी बिना लडाई के नहीं सुलझ सकती।

इस तरह हम इस नतीजे पर पहुँचते है कि आजकल राजनीति के मैदान मे एक तरफ तो इटली, जर्मनी और जापान ये तीन ऐसे देश है जिनकी आबादी बहुत बढ गई है पर जिनके पास अपना विस्तार करने लिये न काफी मुल्क हैं न धन। इन्होंने अपनी फौजी ताकत बहुत बढाली है और उसके बल पर वे मुल्क और धन हासिल करने की कोशिश कर रहे हैं।

दूसरी तरफ अमरीका, इङ्गलैन्ड, फ्रान्स और रूस जैसे देश है जिनके पास जमीन और धन की कमी नहीं है। ऐसी हालत मे पहले दल वालो का दूसरे दल वालो से झगड़ा हो जाय तो कोई ताज्जुब नही। यह मुमकिन है कि इनमे से एकाध को किसी तरह का लालच देकर अलग कर दिया जाय या कोई दूर रह कर ही तमाशा देखने की कोशिश करे। पर अधिकाश मे योरोप के बड़े-बडे राजनीतिज्ञ भी इसी तरह की दलबन्दी होने की सम्भावना बतला रहे है।

इन दोनो दलो का विरोध दिन पर दिन बढता ही जाता है और इसलिये सब जल्दी से जल्दी अपनी फौजी ताकत बढाने और दूसरी तैयारियां करने मे लगे है। इनकी तैयारी देख कर दूसरे छोटे मुल्क भी जो अपने ही घर मे सन्तुष्ट है घबड़ाते है कि कही कोई हमारे ऊपर दांत न लगाये। इसलिये लाचार होकर सामर्थ्य न होते हुए भी उनको फौजी ताकत बढाने की तरफ ध्यान देना पडता है।

इस तरह दिन पर दिन योरोप हथियारो से भरे एक फौजी कैम्प की तरह होता जाता है और महायुद्ध पास आता जाता है। अगर्चे उसे टालने की बहुत कोशिश की जा रही है और कुछ समय के लिए टाला भी जा रहा है पर उसकी जड नही काटी जा सकती। इसके विपरीत उसके शुरू होने मे जितना देर लगेगी उतनी ही लडाई की तैयारी ज्यादा हो जायगी जिससे लड़ाई और भी घमासान और नाश करने वाली होगी। इन्ही बातो को देख कर इङ्गलैण्ड के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री लायड जार्ज, जिन्होने सन् १९१४ मे महासमर का शुरू मे अखीर तक सचालन किया था, बार बार-अगली लडाई के बारे मे चेतावनी देते रहते है। कुछ समय पहले उन्होने कहा था .—

The world is a jungle and nations are prowling through it, snarling and baring their teeth at each-other Any moment a mistaken gesture or misunder-stood arrangement may make them spring again at one another's throats,

"यह ससार एक जङ्गल की तरह हो रहा है जिस मे राष्ट्र रूपी पशु एक दूसरे पर गुर्राते और दॉत दिखलाते घूमते हैं। किसी भी समय मामूली सी भूल या किसी गलतफहमी के कारण वे एक दूसरे के गले पर चढ बैठ सकते है।"

५ फरवरी १९३६ को पार्लीमेंट में भाषण करते हुये उन्होंने फिर कहा था —

"लड़ाई की तैयारियां सब जगह बड़े जोर-शोर के साथ की जा रही हैं। सब मुल्क एक ही बात कहते हैं कि 'जब दूसरे लोग तैयारी करते हैं तो हम क्यों न करें।"

इङ्गलैण्ड के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ अर्ल हेल्सबरी ने भी कुछ दिनों पहले कहा था —

"अगर्चे बहुत थोड़े लोग फिर से लड़ाई होना पसन्द करते हैं पर तो भी ज्यादातर लोगों की राय में लड़ाई की सम्भावना दिन पर दिन बढ़ती ही जाती है।'

हमारे देश के मशहूर राजनीतिज्ञ सर हरीसिंह गौड़ का भी, जो हाल ही में योरोप का चक्कर लगा कर लौटे हैं, यही कहना है —

"योरोप के मुल्को मे बडी अशान्ति फैली हुई है और जिन बातो के सबब से १९१४ का महायुद्ध हुआ वे फिर आज मौजूद हैं। मै नही समझता कि योरोप के बडे-बड़े देशो मे लडाई को कब तक बचाया जा सकता है। योरोप के महाद्वीप मे लडाई की बडी भारी तैयारियॉ हो रही है और उनके मुकाबले मे इङ्गलैण्ड की तैयारी कुछ भी नही है। अगर युद्ध हुआ तो इसमे सन्देह नही कि दुनिया पचास साल के लिये बड़े सकट और कष्टो मे पड़ जायगी।"

इस तरह के सैकडो प्रमाण इस बात के मिलते हैं कि योरोप ही नही ससार भर मे लडाई का भय छाया हुआ है, और उसका होना ऐसा ही पक्का माना जाता है जैसे दो और दो का मिल कर चार होना। यह भी हम कह सकते हैं कि उसमे एक दल साम्राज्यो पर अधिकार रखने वालो का होगा और दूसरा साम्राज्य की लालसा रखने वालो का। अब सिर्फ इतना जानना बाकी रह जाता है कि लडाई दरअसल कब तक शुरू हो जायगी।

इस सम्बन्ध मे हम पाठको को फिर बतला देना चाहते है कि अगर वे भविष्यवाणी का अर्थ यही समझते हैं कि लडाई की ठीक-ठीक तारीख पहले से बतला दी जाय तो निश्चय ही उनको नाउम्मेद होना पडेगा। क्योकि ऐसी सामर्थ तो सिवाय विधाता के शायद ही और किसी मे हो। किसी राजनीतिज्ञ या ज्योतिषी की यह ताकत नही कि वह दावे

के साथ पहले से लड़ाई की निश्चित तारीख बतला दे। इस बारे में और बातों के साथ सभी को अनुमान से काम लेना पड़ता है और उसमें कुछ फर्क पड़ जाना अचम्भे की बात नहीं।

इस बात को ध्यान में रखते हुये जब हम लड़ाई के समय पर गौर करते हैं तो हमको मालूम होता है कि अब तक इस बारे में लोगों ने जो भविष्यवाणियां की हैं उनमें बहुत फर्क है। मिसाल के तौर पर एक ज्योतिषी महाशय ने अभी साफ शब्दों में घोषणा की है कि अक्टूबर १९३६ में विश्वव्यापी महाभारत, छिड़ जायगा। दूसरी ओर दक्षिण अफ्रीका के जनरल हर्ट्ज़ोग जैसे राजनीतिज्ञ हैं जिन्होंने इसी १० जून को कहा है कि अगर राष्ट्र-संघ अपने सदस्यों के प्रति अपने कर्तव्य का पालन न करेगा तो २० साल के भीतर ही संसारव्यापी युद्ध होना निश्चित है। इन दोनों तरह के विचार वालों के बीच में एक भारतीय विद्वान हैं जो कुछ समय पहले योरोप की सैर करके और वहाँ की राजनैतिक दशा का अध्ययन करके लौटे हैं। उन्होंने पिछले फरवरी के महीने में देहली में भाषण करते हुए कहा था —

"योरोप के सामने इस समय सीमाओं की समस्य छोटे राष्ट्रों का सवाल और आर्थिक अधिकारों में भेदभा का सवाल मौजूद है। जल्दी या देर में इनका निपटारा करन ही पड़ेगा। अगर निपटारा कर दिया गया तो योरोप में स १९४० तक लड़ाई न होगी। नहीं तो लड़ाई अनिवार्य है औ वह भी दो साल के भीतर।"

इसमें शक नहीं कि इस विद्वान् ने बहुत सोच समझ क अन्दाज लगाया है। आजकल की घटनाओं से और नये तथा पुराने भविष्य-वेत्ताओं के कथनों से सन् १९३७-३८ में लड़ाई की पूरी उम्मेद जान पड़ती है। पर इस विषय में हमको एक बात याद रखनी चाहिये कि इस समय इङ्गलैण्ड और फ्रांस लड़ाई से बहुत डरते नजर आते हैं और उसे रोकने की बड़ी कोशिश कर रहे हैं। ये दोनों योरोप के प्रधान राष्ट्र हैं और संसार की राजनीति पर इनका बड़ा प्रभाव है। अगर ये सचमुच लड़ने को तैयार न हों तो लड़ाई जरूर कुछ समय के लिये रुक सकती है।

अगर पाठक इन तमाम बातों पर गौर करेंगे तो हमें उम्मेद है कि वह अन्त में उसी नतीजे पर पहुँचेंगे जो हमने इस पुस्तक के शुरू में लिख दिया है कि सम्वत् २००० के आसपास या उससे कुछ पहले ही लड़ाई का छिड़ जाना बहुत सम्भव है।

———